सज्झायों का स्वाध्याय

–: संपादक :–

प.पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सज्झायों का स्वाध्याय

संपादक

व्याख्यान वाचस्पति, महाराष्ट्र देशोद्धारक, पूज्यपाद
आचार्यदेव *श्रीमद् विजय रामचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.* के
तेजस्वी शिष्यरत्न, बीसवीं सदी के महान् योगी,
नवकार-विशेषज्ञ प्रशांतमूर्ति पूज्यपाद पंन्यासप्रवर
श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य के
कृपापात्र चरम शिष्यरत्न प्रवचन-प्रभावक, मरुधररत्न,
गोडवाड के गौरव, जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर
परम पूज्य आचार्यदेव
श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

139

प्रकाशक

दिव्य सन्देश प्रकाशन
C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor, बे.व्यु. बिल्डींग,
विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी,
मुंबई-400 002.
Cell 8484848451 (only whatsapp)

आवृत्ति : तृतीय • **मूल्य :** 100/- रुपये • प्रतियां : 1000
विमोचन स्थल : श्री त्रिभूवन तारक श्वे.मू.तपा.जैन संघ-भायंदर
तारीख : दि. 19-9-2022 • **Website : Divyasandesh.online**

आजीवन सदस्य योजना

आजीवन सदस्यता शुल्क-3000/- रु.

• आप जैन धर्म के रहस्य-जैन इतिहास-जैन तत्त्वज्ञान-जैन आचार मार्ग, प्रेरणादायी कथाएँ आदि का अध्ययन करना चाहते हों तो आज ही आप दिव्य संदेश प्रकाशन मुम्बई की आजीवन सदस्यता प्राप्त कर लें। सदस्य बनते ही अध्यात्मयोगी नि:स्पृह शिरोमणि स्व. पूज्यपाद पंन्यासप्रवर **श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्यश्री** एवं उन्हीं के चरम शिष्यरत्न प्रवचन प्रभावक परम पूज्य ***आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म. सा.*** द्वारा लिखित उपलब्ध 10 पुस्तकें दी जाएगी और **अर्हद् दिव्य संदेश** मासिक तथा भविष्य में हिन्दी भाषा में प्रकाशित पुस्तकें (Open Book Exam साधु–साध्वी उपयोगी पुस्तके एवं पुन: मुद्रित पुस्तकों को छोडकर) घर बैठे प्राप्त होंगी। आप आजीवन सदस्यता शुल्क मुंबई या बैंगलोर के पते पर दिव्य संदेश प्रकाशन-मुंबई के नाम से चैक व ड्राफ्ट से भेजें।

प्राप्ति स्थान

1. चेतन हसमुखलालजी मेहता
भायंदर (M.S.)
M. 9867058940

2. प्रवीण गुरुजी
C/o. श्री आत्म कमल लब्धिसूरि जैन पुस्तकालय
श्री आदिनाथ जैन टेंपल,
चिकपेठ, बेंगलोर-560 053.
M. 9036810930

3. राहुल वैद
C/o. अरिहंत मेटल कं.,
4403, लोटन जाट गली,
पहाड़ी धीरज, सदर बाजार,
दिल्ली-110 006.
M. 9810353108

4. चंदन एजेन्सी
607, चीरा बाजार,
मुंबई-400 002.M.9820303451

आजीवन सदस्यता शुल्क

Rs. 3000/- *भिजवाने का पता एवं पुस्तक-प्राप्ति-स्थान :*

(1) दिव्य संदेश प्रकाशन, C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor, बे व्यु बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002. Mobile : 8484848451 (only whatsapp)

(2) दिव्य संदेश प्रचारक, प्रकाश बड़ोल्ला, 52, 3rd Cross, शंकरमट रोड, शंकरपुरा, बैंगलोर-560 004. Tel. (O.) 4124 7478 M. 8971230600

प्रकाशक की कलम से ...

दीक्षा के दानवीर व्याख्यान वाचस्पति पूज्यपाद **आचार्यदेव श्रीमद् विजय रामचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.** के **दीक्षा-शताब्दी वर्ष** में उन्हीं के शिष्यरत्न नमस्कार महामंत्र के अजोड़ साधक, बीसवीं सदी के महान योगी, निःस्पृह शिरोमणि **पूज्यपाद पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकर विजयजी गणिवर्य** के कृपापात्र चरम शिष्यरत्न मरुधररत्न, गोडवाड के गौरव, **हिन्दी साहित्यकार पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म. सा.** के द्वारा हिन्दी भाषा में संपादित 139 वीं पुस्तक **'सज्झायों का स्वाध्याय'** की तीसरी आवृत्ति का प्रकाशन करते हुए हमें अत्यंत ही हर्ष हो रहा है ।

पूज्यश्री ने आज से 46 वर्ष पूर्व अपनी जन्मभूमि की धन्यधरा - बाली में वर्धमान तपोनिधि सुदीर्घ संयमी **पूज्यपाद पंन्यासप्रवर श्री हर्षविजयजी म. सा.** के वरद हस्तों से भागवती दीक्षा अंगीकार कर अध्यात्मयोगी निःस्पृह शिरोमणि पूज्यपाद **पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य** का शिष्यत्व प्राप्त किया था ।

मात्र 3¼ वर्ष के संयम पर्याय में पूज्यश्री को अपने प्राणप्यारे गुरुदेव का वियोग हो गया था । इतनी अल्पावधि तक ही `गुरु-सान्निध्य' मिलने पर भी वे अपने गुरुदेव के अंतःकरण के शुभाशीर्वाद को प्राप्त कर सके थे ।

उनके हृदय में गुरुदेव का वास है । आज वे जो कुछ भी हैं, वे अपनी समस्त उपलब्धियों का श्रेय अपने गुरुदेव को ही देते है ।

अपने गुरुदेव के कालधर्म के बाद वे पूज्यश्री के प्रशिष्यरत्न सौजन्यमूर्ति **पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय प्रद्योतनसूरीश्वरजी म. सा.** एवं प्रशांतमूर्ति **पू. पंन्यासप्रवर श्री वज्रसेन विजयजी म. सा.** आदि के सान्निध्य में रहकर अपने संयम जीवन की आराधना साधना में निरंतर आगे बढ़ते रहे हैं ।

अपने उपकारी गुरुदेव की शुभाशीष को प्राप्त कर ही उन्होंने प्रवचन व लेखन के क्षेत्र में प्रवेश किया था ।

पिछले 45 वर्षों से उनकी प्रवचन-गंगा निरंतर बह रही है, जिसमें स्नान कर अनेक आत्माओं ने अपने पापमल का प्रक्षालन किया है ।

राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, कोंकण, मुंबई सौराष्ट्र आदि क्षेत्रों में विहार कर अनेक नगरों में स्वतंत्र चातुर्मास कर अपने चातुर्मासिक दैनिक प्रवचन, रविवारीय जाहिर प्रवचन, तरुण-युवा संस्कार शिबिर-वाचना श्रेणी आदि के माध्यम से अनेक बाल, तरुण, युवक तथा वृद्धों को विविध आराधना-तपश्चर्या तथा अनुष्ठानों में जोड़ा है ।

वि. सं. 2055 में गणिपद और वि. सं. 2061 में पंन्यासपद और वि.सं. 2067 पोष वद 1 दि. 20-1-2011 के शुभदिन कोंकण शत्रुंजय थाणा तीर्थ में जैन शासन के गौरवपूर्ण आचार्य पद पर आरुढ होकर जिनशासन की सुंदर प्रभावना कर रहे है ।

शासनदेव से प्रार्थना है कि पूज्यश्री चिरायु बने और उनके वरद हस्तों से जिनशासन की सुंदरतम आराधना-प्रभावना संपन्न हो ।

संपादक की कलम से ...

प्राण बिना के देह की किंमत नहीं है ।
सुगंध बिना के फूल की किंमत नहीं है ।

उसी प्रकार स्वाध्याय बिना साधु-जीवन की किंमत नहीं है । साधु जीवन का प्राण ही स्वाध्याय है । इसी बात को ध्यान में रखकर तारक परमात्मा ने साधु जीवन में प्रतिदिन 5 प्रहर स्वाध्याय करने की आज्ञा फरमाई है ।

वर्तमान काल में सुबह-शाम की प्रतिक्रमण-विधि में भी स्वाध्याय-सज्झाय का विधान है ।

सुबह के प्रतिक्रमण में प्रारंभ में **'भरहेसर'** की सज्झाय बोली जाती है, जिसमें इस अवसर्पिणी काल में हुए अनेक सत्त्वशाली महापुरुष और प्राणांत कष्टों में भी अपने शील धर्म का पालन करने वाली महासतियों को याद किया जाता है । प्रातःकाल के साथ ही अपनी दिनचर्या का प्रारंभ होता है, अतः अपने आदर्श के रुप में उन महापुरुष और महासतियों को याद करने से हमें भी उत्तम जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है ।

शाम के प्रतिक्रमण में छ आवश्यक के बाद में अंत में **'सज्झाय'** बोली जाती है ।

'सज्झाय' में मुख्यतया हितोपदेश की प्रधानता है । कई सज्झायों में डाईरेक्ट उपदेश है तो कई सज्झायों में महासत्त्वशाली महापुरुष या महासतियों के जीवन-प्रसंगों को यादकर परोक्ष (इन्डाईरेक्ट) उपदेश दिया जाता है ।

स्तवनों में भक्ति की प्रधानता है और सज्झायों में उपदेश की प्रधानता है ।

सज्झाय उपदेश प्रधान होने से गुरु भगवंतों की उपस्थिति में सज्झाय गुरु भगवंत ही बोलते है । गुरु भगवंत न हो तो श्रावक भी प्रतिक्रमण में सज्झाय बोल सकते है ।

भरहेसर, मन्नह जिणाणं आदि सज्झायें प्राकृत भाषा में है ।

'मूढ ! मुह्यसि मुधा' आदि शांत सुधारस की 16 भावना स्वरुप सज्झायें संस्कृत भाषा में है ।

प्राकृत-संस्कृत भाषा से अनभिज्ञ बाल जीवों के हित के लिए भूतकाल में हुए अनेक महापुरुषों ने लोकभोग्य शैली में गुजराती-हिन्दी आदि भाषाओं में भी सज्झायों की रचनाएँ है । प्रस्तुत पुस्तक में 108 सज्झायों का संकलन किया है ।

उन सज्झायों का स्वाध्याय कर सभी आत्माएं आत्म-कल्याण के पथ पर आगे बढ़े, इसी शुभ कामना के साथ ।

अनुक्रमणिका

क्रम.	विषय	पृष्ठ क्र.
1.	श्री नवकार मंत्र	1
2.	आठ मद	2
3.	चंचल मन	3
4.	क्रोध	3
5.	मान	4
6.	अमृतवेल की सज्झाय	4
7.	आठ कर्मों की सज्झाय	7
8.	तप की सज्झाय	7
9.	एकादशी की सज्झाय	8
10.	दशवें अध्ययन की सज्झाय	9
11.	समता का महत्व	11
12.	मन:स्थिरता	11
13.	श्री मनुष्य भव	12
14.	आत्म दर्शन	13
15.	मूर्खता	14
16.	लघुता	14
17.	सच्चे मुनि	15
18.	शीलव्रत	16
19.	वर्धमान तप	16
20.	मुनिगण	17
21.	कर्म विचित्रता	18
22.	सुकृत की सज्झाय	19
23.	श्री सम्यक्त्व के सडसठ बोल	20
24.	आठम की सज्झाय	30
25.	पर्युषण पर्व की सज्झाय	31
26.	प्रथम पाप स्थानक की सज्झाय	32
27.	माया की सज्झाय	32
28.	वाणी संयम की सज्झाय	33
29.	आत्म निंदा-गर्हा की सज्झाय	34
30.	मरण विषय की सज्झाय	34
31.	उत्तम मनोरथ की सज्झाय	35
32.	ऋतुवंती स्त्री की सज्झाय	37
33.	घडीयाळा की सज्झाय	38
34.	जीभलडी की सज्झाय	38
35.	साचा जैनत्त्व की सज्झाय	39
36.	धोबीडा की सज्झाय	40
37.	स्वार्थी संसार	41
38.	वैराग्य की सज्झाय	41
39.	उपदेश की सज्झाय	42
40.	जग सपनेकी माया	43
41.	वैराग्य	44
42.	अनित्य भावना	44
43.	आत्मा	45
44.	आप स्वभाव	46
45.	मोह से तेरा कमाया	46
46.	एक भूपाल है	47
47.	सुणो चेतनजी !	48
48.	एकत्व भावना	49
49.	बेर बेर नहीं आवे	50
50.	आशा औरन की क्या कीजे ?	50
51.	हुं तो नटवो थइ ने	51
52.	नरजन्म सुंदर	52
53.	मति तूं केम बगाडे ?	53
54.	वणझारा	54
55.	तुं चेत मुसाफीर चेत जरा...	55
56.	कहां करुं मंदिर	56
57.	आव्यो त्यारे मुठी	56
58.	अहिंसा धर्मका डंका	57
59.	नाव में नदियां	58
60.	खबर नहीं आ जगमां	59

क्रम.	विषय	पृष्ठ क्र.
61.	केना रे सगपण	60
62.	तारुं धन रे जोबन	61
63.	जगत है स्वार्थ	62
64.	अरे किस्मत तुं घेलुं	62
65.	हाथ से हीरो	63
66.	थोडी तेरी जिंदगी	63
67.	बनी मिट्ठी की सबबाजी	64
68.	कुरगडु मुनि की सज्झाय	65
69.	श्री प्रसन्नचंद्र राजर्षि	66
70.	खंधक मुनि	67
71.	रहनेमी मुनि	69
72.	श्री भरतचक्रवर्ती	69
73.	श्री स्थूलभद्र और कोशा	70
74.	श्री अनाथी मुनि	71
75.	श्री मेतारज मुनि	72
76.	श्री शालिभद्र	74
77.	श्री जंबूस्वामी	74
78.	श्री वज्र मुनि	76
79.	श्री धन्नाजी	77
80.	श्री नंदिषेण	78
81.	श्री मरुदेवी माता	79
82.	श्री चंदनबाळा	80
83.	श्री विजय शेठ-विजया शेठाणी	81
84.	श्री बाहुबलिजी	81
85.	श्री अरणिकमुनि	82
86.	अइमुत्तामुनि की सज्झाय	83
87.	इलाचीकुमार की सज्झाय	84
88.	कृष्णमहाराजा की सज्झाय	85
89.	गजसुकुमाल की सज्झाय	86
90.	श्री ढंढणऋषि की सज्झाय	87
91.	देवानंदा माता की सज्झाय	88
92.	द्रौपदीसती की सज्झाय	89
93.	धर्मरुचि अणगार की सज्झाय	90
94.	मेघकुमार की सज्झाय	91
95.	सुदर्शन शेठ की सज्झाय	91
96.	सुबाहुकुमार की सज्झाय	93
97.	साचा जैनत्त्व की सज्झाय	95
98.	श्री झांझरिया मुनि	96
99.	मेघकुमार	96
100.	प्रतिक्रमण की सज्झाय	97
101.	मन की सज्झाय	98
102.	मुरख की सज्झाय	99
103.	सर्वार्थ सिद्धविमान की सज्झाय	100
104.	चौथे पापस्थानक की सज्झाय	101
105.	कर्म की सज्झाय	102
106.	नरकदु:ख की सज्झाय	103
107.	अनित्य भावना	104
108.	अशरण भावना	105
109.	ज्ञान	106
110.	श्री ज्ञानपंचमी	107
111.	त्रिशलानंदन की दुकान	108
112.	अमृतवेलि की छोटी	109
113.	मन की सज्झाय	111
114.	श्री पंचम काल की सज्झाय	111
115.	शाश्वत भाव की सज्झाय	112
116.	बुढापे की सज्झाय	113
117.	पैसा की सज्झाय	113
118.	निंदक की सज्झाय	114
119.	वैराग्य की सज्झाय	115
120.	इरियावही की सज्झाय	116
121.	श्री वंकचुल की सज्झाय	117
122.	श्री मृगापुत्र की सज्झाय	118
123.	लोभ की सज्झाय	119
124.	सिद्ध पद की सज्झाय	120
125.	मनक मुनि की सज्झाय	120

1. श्री नवकार मंत्र

श्री नवकार जपो मन रंगे, श्री जिनशासन सार रे,
सर्व मंगलमां पहेलु मंगल, जपतां जय जयकार रे, ... श्री. ।।1।।

पहेले पद त्रिभुवन जनपूजित, प्रणमुं श्री अरिहंत रे,
अष्ट कर्म वर्जित बीजे पद, ध्यावो सिद्ध अनंत रे, श्री. ।।2।।

आचारज त्रीजे पद समरुं, गुण छत्रीस निधान रे,
चोथे पद उवज्झाय जपीये, सूत्र सिद्धान्त सुजाण रे, .. श्री. ।।3।।

सर्व साधु पंचम पद प्रणमुं, पंच महाव्रत धार रे,
नव पद अष्ट इहां छे संपदा, अडसठ वरण संभार रे,श्री. ।।4।।

सात अक्षर छे गुरु जेहनां, एकसठ लघु उच्चार रे,
सात सागरनां पातक हणाये, पद पचाश विचार रे, ... श्री. ।।5।।

संपूरण पणसय सागरनां, जाये पातक दूर रे,
इह भव सर्व कुशल मनवांछित, परभव सुख भरपूर रे,श्री. ।।6।।

योगी सोवन पुरिसो कीधो, शिवकुमार इणे ध्यान रे,
सर्प मटी तिहां फूलमाला, श्रीमतीने परधान रे, ... श्री. ।।7।।

यक्ष उपद्रव करतो वार्यो, परचो ए परसिद्ध रे,
चोर चंडपिंगल ने हुंडक, पामे सुर तणी ऋद्ध रे, . श्री. ।।8।।

ए पंच परमेष्ठि छे जग उत्तम, चौदपूरवनो सार रे,
गुण बोले श्री **पद्मराज** गणी, महिमा जास अपार रे, ... श्री. ।।9।।

हम है नन्हे बच्चे, हम बनेंगे सच्चे ।

2. आठ मद

मद आठ महामुनि वारीये, जे दुर्गतिना दातारो रे,
श्री वीर जिणेसर उपदिशे, भाखे सोहम गणधारो रे, .. मद. ।।1।।
हां जी, जातिनो मद पहेलो कह्यो, पूर्वे हरिकेशीये कीधो रे,
चंडालतणे कुल उपन्यो, तपथी सवि कारज सीधो रे, .मद. ।।2।।
हां जी, कुलमद बीजो दाखीयो, मरिची भवे कीधो प्राणी रे,
कोडाकोडी सागर भवमां भम्यो, मद म करो इम मन जाणी रे, मद. ।।3।।
हां जी, बलमदथी दुःख पामीया, श्रेणिक वसुभूति जीवो रे,
जइ नरक तणां दुःख भोगव्यां, मुखे पाडंता नित रीवो रे, मद. ।।4।।
हां जी, सनतकुमार नरेसरुं, सुर आगल रुप वखाण्युं रे,
रोम रोम काया बगडी गई, मद चोथानुं ए टाणुं रे, ... मद. ।।5।।
हां जी, मुनिवर संयम पालतां, तपनो मद मनमां आयो रे,
थया कुरगडु ऋषि राजीया, पाम्या तपनो अंतराय रे, . मद. ।।6।।
हां जी, देश दशारणनो धणी, दशार्णभद्र अभिमानी रे,
इन्द्रनी ऋद्धि देखी बुझीयो, संसार तजी थयो ज्ञानी रे,मद. ।।7।।
हां जी, स्थूलिभद्रे विद्यानो कर्यो, मद सातमो जे दुःखदाइ रे,
श्रुत पूरण अर्थ न पामीया, जुओ मानतणी अधिकाइ रे, मद. ।।8।।
राय सुभूम षट् खंडनो धणी, लाभनो मद कीधो अपार रे,
हय गय रथ सब सायर गयुं, गयो सातमी नरक मोझार रे,मद. ।।9।।
इम तन धन जोबन राज्यनो, म धरो मनमां अहंकारो रे,
ए अस्थिर असत्य सवि कारमुं, विणसे क्षणमां बहु वारो रे, मद. ।।10।।
मद आठ निवारो व्रत धारी, पालो संयम सुखकारी रे,
कहे **मानविजय** तो पामशो, अविचल पदवी नरनारी रे,मद. ।।11।।

3. चंचल मन

मनाजी तुं तो जिन चरणे चित्त लाय, तेरो अवसर वित्यो जाय,
मनाजी तुं तो जिन चरणे चित्त लाय,
उदर भरण के कारणे रे, गौआ वन में जाय,
चारो चरे चिंहु दिशि फरे रे, वांकुं चित्तडुं वाछरीया मांय. मना। ।।1।।
चार पांच साहेली मलीने, हिलमिल पाणीए जाय,
ताली दीये खडखड हंसे रे, वांकुं चित्तडुं गागरीयां मांय.मना. ।।2।।
नटवो नाचे चोकमां रे, लख आवे लख जाय,
वंस चढी नाटक करे रे, वांकुं चित्तडुं दोरडीयां मांय. ..मना. ।।3।।
सोनी सोनाना घडे रे, वली घडे रुपाना घाट,
घाट घडे मन रीझवे रे, वांकुं चित्तडुं सोनैया मांय. ...मना. ।।4।।
जुगटीयाने मन जुगटुं रे, कामिनीने मन काम,
आनंदघन एम विनवे रे, ऐसो प्रभु का धरो ध्यान. ....मना. ।।5।।

4. क्रोध

कडवा फल छे क्रोधना, ज्ञानी एम बोले रे,
रीस तणो रस जाणीए, हलाहल तोले रे, ...कडवा. ।।1।।
क्रोधे क्रोड पूरवतणुं, संयम फल जाय,
क्रोध सहित तप जे करे, ते तो लेखे न थाय, ..कडवा. ।।2।।
साधु घणो तपीयो हतो, धरतो मन वैराग्य,
शिष्यना क्रोध थकी थयो, चंडकोशियो नाग .....कडवा. ।।3।।
आग उठे जे घर थकी, ते पहेलुं घर बाळे,
जलनो जोग जो नवि मले, तो पासेनुं परजाले, कडवा. ।।4।।

क्रोध तणी गति एहवी, कहे केवलनाणी,
हाण करे जे हेतनी, जालवजो एम जाणी, ...कडवा. ।।5।।

उदयरत्न कहे क्रोधने, काढजो गले साहीं,
काया करजो निरमली, उपशम रस नाही. .....कडवा. ।।6।।

5. मान

रे जीव ! मान न कीजीए, माने विनय न आवे रे,
विनय विना विद्या नही, तो किम समकित पावे रे, . रे जीव. ।।1।।

समकित विण चारित्र नही, चारित्र विण नही मुक्ति रे,
मुक्तिना सुख छे शाश्वतां, तो केम लहिये युक्ति रे,रे जीव. ।।2।।

विनय वडो संसारमां, गुणमांहे अधिकारी रे,
माने गुण जाये गली, प्राणी जो जो विचारी रे, ...रे जीव. ।।3।।

मान कर्युं जे रावणे, ते तो रामे मार्यो रे,
दुर्योधन गर्वे करी, अंते सवि हार्यो रे, ...रे जीव. ।।4।।

सूकां लाकडां सारिखो, दुःखदायी ए खोटो रे,
उदयरत्न कहे माननें, देजो देशवटो रे, ...रे जीव. ।।5।।

6. अमृतवेल की सज्झाय

चेतन ज्ञान अजुवालीए, टालीए मोह संताप रे,
चित्त डमडोलतुं वालीए, पालीए सहज गुण आप रे. .चेतन. ।।1।।

उपशम अमृत रस पीजीए, कीजीए साधु गुणगान रे,
अधम वयणे नवि खीजीए, दीजीये सज्जनने मान रे. चेतन. ।।2।।

क्रोध अनुबंध नवि राखीए, भाखीये वयण मुख साच रे,
समकित रत्न रुचि जोडीये, छोडीये कुमति मति काच रे. चेतन. ।।3।।
शुद्ध परिणामने कारणे, चारनां शरण धरे चित्त रे,
प्रथम तिहां शरण अरिहंतनुं, जेह जगदीश जगमित्त रे, चेतन. ।।4।।
जे समोसरणमां राजतां, भांजता भविक संदेह रे,
धर्मना वचन वरसे सदा, पुष्करावर्त जिम मेह रे. ....चेतन. ।।5।।
शरण बीजुं भजे सिद्धनुं, जे करे कर्म चकचूर रे,
भोगवे राज शिवनगरनुं, ज्ञान आनंद भरपूर रे. .चेतन. ।।6।।
साधुनुं शरण त्रीजुं धरे, जेह साधे शिव पंथ रे,
मूल उत्तर गुणे जे वर्या, भव तर्या भाव निर्ग्रंथ रे. ....चेतन. ।।7।।
शरण चोथुं धरे धर्मनुं, जेहमां वर दया भाव रे,
जेह सुख हेतु जिनवर कह्यो, पाप जल तरवा नाव रे. चेतन. ।।8।।
चारना शरण ए पडिवजे, वली भजे भावना शुद्ध रे,
दुरित सवि आपणा निंदीये, जेम होये संवर वृद्धि रे. चेतन. ।।9।।
इहभव परभव आचर्यां, पाप अधिकरण मिथ्यात्व रे,
जे जिनाशातनादिक घणां, निंदीये तेह गुण घात रे, चेतन. ।।10।।
गुरुतणां वचन जे अवगणी, गुंथीया आप मत जाल रे,
बहु परे लोकने भोलव्यां, निंदीये तेह जंजाल रे. ....चेतन. ।।11।।
जेह हिंसा करी आकरी, जेह बोल्या मृषावाद रे,
जेह परधन हरी हरखियां, कीधलो काम उन्माद रे. चेतन. ।।12।।
जेह धन धान्य मूर्छा धरी, सेविया चार कषाय रे,
रागने द्वेषने वश हुआ, जे कीयो कलह उपाय रे. .. चेतन. ।।13।।
झुठ जे आल परने दिया, जे कर्या पिशुनता पाप रे,
रति अरति निंद मायामृषा, वलीय मिथ्यात्व संताप रे. चेतन. ।।14।।

पाप जे एहवा सेवियां, तेह निंदीये त्रिहुं काल रे,
सुकृत अनुमोदना कीजीये, जिम होये कर्म विसराल रे. चेतन. ।।15।।
विश्व उपकार जे जिन करे, सार जिन नाम संयोग रे,
तेह गुण तास अनुमोदीये, पुण्य अनुबंध शुभयोग रे. चेतन. ।।16।।
सिद्धनी सिद्धता कर्मना, क्षय थकी उपनी जेह रे,
जेह आचार आचार्यनो, चरण वन सिंचवा मेह रे... चेतन. ।।17।।
जेह उवज्झायनो गुण भलो, सूत्र सज्झाय परिणाम रे,
साधुनी जे वली साधुता, मूल उत्तर गुणधाम रे.चेतन. ।।18।।
जेह विरति देश श्रावक तणी, जे समकित सदाचार रे,
समकित दृष्टि सुरनर तणो, तेह अनुमोदिये सार रे. चेतन. ।।19।।
अन्यमां पण दयादिक गुणो, जेह जिनवचन अनुसार रे,
सर्व ते चित्त अनुमोदिये, समकित बीज निरधार रे. चेतन. ।।20।।
पाप नवि तीव्र भावे करे, जेहने नवि भव राग रे,
उचित स्थिति जेह सेवे सदा, तेह अनुमोदवा लाग रे.चेतन. ।।21।।
थोडलो पण गुण परतणो, सांभली हर्ष मन आण रे,
दोष लव पण निज देखतां, निर्गुण निजातमा जाण रे. चेतन. ।।22।।
उचित व्यवहार अवलंबने, एम करी स्थिर परिणाम रे,
भाविये शुद्ध नय भावना, पापनाशय तणुं ठाम रे... चेतन. ।।23।।
देह मन वचन पुद्गल थकी, कर्मथी भिन्न तुज रुप रे,
अक्षय अकलंक छे जीवनुं, ज्ञान आनंद स्वरुप रे. चेतन. ।।24।।
कर्मथी कल्पना उपजे, पवनथी जेम जलधि वेल रे,
रुप प्रगटे सहज आपणुं, देखता दृष्टि स्थिर मेल रे. चेतन ।।25।।
धारतां धर्मनी धारणा, मारतां मोहवड चोर रे,
ज्ञानरुचि वेल विस्तारतां, वारतां कर्मनुं जोर रे.चेतन. ।।26।।

राग विष दोष उतारता, झारता द्वेष रस शेष रे,
पूर्व मुनि वचन संभारता, वारता कर्म निःशेष रे. ... चेतन. ।।27।।
देखीये मार्ग शिव नगरनो, जे उदासीन परिणाम रे,
तेह अणछोडता चालीये, पामीये जेम परमधाम रे. चेतन. ।।28।।
श्री नयविजय गुरु शिष्यनी, शीखडी अमृतवेल रे,
एह जे चतुर नर आदरे, ते लहे **'सुयश'** रंग रेल रे.चेतन. ।।29।।

7. आठ कर्मों की सज्झाय

कर्मो लाग्या छे मारे केडले, घडी ए घडीए आतमराम मुंझाय रे,
प्रभुजी मारा कर्मो लाग्या छे मारे केडले. ..... ।।1।।
ज्ञानावरणीए ज्ञान रोक्यो, दर्शनावरणीए कीधो दर्शन घात रे. प्र. ।।2।।
वेदनीय कर्मे वेदना मोकली, मोहनीय कर्मे खवराव्यो बहु मार रे. प्र. ।।3।।
आयुष्य कर्मे ताणी बांधीयुं, नाम कर्मे नचाव्यो बहु नाच रे.प्र. ।।4।।
गोत्र कर्मे बहु रझडावीयो, अंतराय कर्मे वाल्यो छे आडो आंक रे. प्र. ।।5।।
आठ कर्मो नो राजा मोह छे, मुंझावे मने चोवीस कलाक रे.प्र. ।।6।।
आठ कर्मोने जे वश करे, तेने घर होशे मंगलिक माल रे. प्र. ।।7।।
आठ कर्मोने जे जीतशे, तेनो होशे मुक्तिपुरीमां वास रे. . प्र. ।।8।।
हीरविजय गुरु हीरलो, पंडित **रत्नविजय** गुण गाय रे. . प्र. ।।9।।

8. तप की सज्झाय

कीधा कर्म निकंदवा रे, लेवा मुक्तिनुं दान,
हत्या पातिक छूटवा रे, नहि कोई तप समान,
भविकजन ! तप करजो मन शुद्ध । ..... ।।1।।

उत्तम तपना योगथी रे, सेवे सुरनर पाय,
लब्धि अट्ठावीश उपजे रे, मनोवांछित फल थाय, भविकजन. ।।2।।
तीर्थंकर पद पामीये रे, नासे सघला रोग,
रूप लीला सुख साहिबी रे, लहीए तप संयोग ...भविकजन. ।।3।।
ते शुं छे संसारमां रे, तपथी न होवे जेह,
जे जे मनमां कामीए रे, सफल फल सहि तेह.भविकजन. ।।4।।
अष्ट कर्मना ओघने रे, तप टाले तत्काल,
अवसर लहीने तेहनो रे, खप करजो उजमाल...भविकजन. ।।5।।
बाह्य अभ्यंतर जे कह्या रे, तपना बार प्रकार,
होजो तेहनी चालमां रे, जेम धन्नो अणगार.भविकजन. ।।6।।
उदयरत्न कहे तप थकी रे, वाधे सुजस सनूर,
स्वर्ग होवे घर आंगणे रे, दुर्गति जावे दूर. .....भविकजन. ।।7।।

9. एकादशी की सज्झाय

आज मारे एकादशी रे, नणदल मौन करी मुख रहीए,
पूछ्यानो पडिउत्तर पाछो, केहने कांई न कहीए. .....आज. ।।1।।
मारो नणदोइ तुजने वहालो, मुजने तारो वीरो,
धूमाडानां बाचकां भरतां, हाथ न आवे हीरो.....आज. ।।2।।
घरनो धंधो घणो कर्यो पण, एके न आव्यो आडो,
परभव जाता पालव झाले, ते मुजने देखाडो. .....आज. ।।3।।
मागसर शुदि अगीयारस मोटी, नेवुं जिनना निरखो,
दोढसो कल्याणक मोटा, पोथी जोइ जोइ हरखो. आज. ।।4।।
सुव्रत शेठ थयो शुद्ध श्रावक, मौन धरी मुख रहीयो,
पावक पुर सघळो परजाल्यो, एहनो कांई न दहीयो. .आज. ।।5।।

आठ पहोरनो पोसह करीए, ध्यान प्रभुनुं धरीए,
मन वच काया जो वश करीए, तो भवसागर तरीए आज. ।।6।।
ईर्यासमिति भाषा न बोले, आडु अवळुं पेखे,
पडिक्कमणाशुं प्रेम न राखे, कहो केम लागे लेखे. ...आज. ।।7।।
कर उपर तो माळा फिरती, जीभ फिरे मुखमांही,
चित्तडुं तो चिहुं दिशिए डोले, इण भजने सुख नांहि. आज. ।।8।।
पौषधशाले भेगा थईने, चार कथा वली साधे,
कांईक पाप मिटावण आवे, बार गणुं वली बांधे. .....आज. ।।9।।
एक उठंती आलस मोडे, बीजी उंघे बेठी,
नदीओमांथी कांइक निसरती, जई दरियामां पेठी. आज. ।।10।।
आई बाई नणंद भोजाई, न्हानी म्होटी वहुने,
सासु ससरो मा ने मासी, शिखामण छे सहुने. .....आज. ।।11।।
उदयरत्न वाचक उपदेशे, जे नरनारी रहेशे,
पोसहमांहे प्रेम धरीने, अविचल लीला लहेशे...आज. ।।12।।

10. दशवें अध्ययन की सज्झाय

ते मुनि वंदो ते मुनि वंदो, जे उपशम रसनो कंदो रे,
निर्मल ध्यान क्रियानो चंदो, तप तेजे जेह दिणंदो रे, ते मुनि. ।।1।।
पंचाश्रवनो करी परिहार, पंच महाव्रत धारो रे,
षट्काय जीवतणो आधार, करतो उग्र विहारो रे,ते मुनि. ।।2।।
पंच समिति त्रण गुणि आराधे, धर्मध्यान निराबाधे रे,
पंचम गतिनो मारग साधे, शुभ गुण तो इम वाधे रे, ते मुनि. ।।3।।
क्रय विक्रय न करे व्यापार, निर्मम निरहंकार रे,
चारित्र पाले निरतिचारे, चालतो खड्गनी धार रे, ते मुनि. ।।4।।

भोगने रोग करी जे जाणे, आपे पुण्य वखाणे रे,
तप श्रुतनो मद नवी आणे, गोपवी अंग ठेकाणे रे, . ते मुनि. ।।5।।
छांडी धन कण कंचन गेह, थई निःस्नेही निरीह रे,
खेल समाणी जाणी देह, नवि पोसे पापे जेह रे,ते मुनि. ।।6।।
दोषरहित आहार जे पामे, जे लुखे परिणामे रे,
लेतो देहनुं सुख नवि कामे, जागतो आठे जामे रे, . ते मुनि. ।।7।।
रसना रस रसीयो नवी थावे, निर्लोभी निर्माय रे,
सहे परिषह स्थिर करी काया, अविचल जिम गिरिराय रे, ते मुनि. ।।8।।
राते काउसग्ग करी स्मशाने, जो तीहां परिसह जाणे रे,
तो नवि चूके तेहवे टाणे, भय मनमां नवि आणे रे, . ते मुनि. ।।9।।
कोई ऊपर न करे क्रोध, दिये सहुने प्रतिबोध,
कर्म आठ जीतवा जोध, करतो संयम शोध .. ते मुनि. ।।10।।
दशवैकालिक दशमाध्ययने, एम भाख्यो आचार रे,
ते गुरु लाभविजयथी पामे, **ऋद्धिविजय** जयकार रे,ते मुनि. ।।11।।

11. समता का महत्व

जब लग समता क्षण नही आवे, जब लगे क्रोध व्यापक है अंतर,
तब लग जोग न सुहावे । ..... जब. ।।1।।
बाह्य क्रिया करे कपट केलवे, फिरके महंत कहावे,
पक्षपात कबहु नहि छोडे, उनकुं कुगति बोलावे । . जब. ।।2।।
जिन जोगीने क्रोध किया ते, उनकुं सुगुरु बतावे,
नाम धारक भिन्न भिन्न बतावे, उपशम विन दुःख पावे ।जब. ।।3।।
क्रोध करी खंधक आचारज, हुओ अग्निकुमार,
दंडकी नृपनो देश प्रजाल्यो, भमियो भव मोझार । जब. ।।4।।

शांब प्रद्युम्नकुमार संताप्यो, कष्ट द्वैपायन पाय,
क्रोध करी तपनो फल हार्यो, कीधो द्वारिका दाह । ..... जब. ।।5।।
काउसग्गमां चडियो अति क्रोधे, प्रसन्नचंद्र ऋषिराय,
सातमी नरकतणां दल मेली, कडवा ते न खमाय ।जब. ।।6।।
पार्श्वनाथ ने उपसर्ग कीधो, कमठ भवांतर धीठ,
नरक निर्यंचनां दुःख पामी, क्रोध तणां फल दीठ । .... जब. ।।7।।
एक अनेक साधु पूरवधर, तपिया तप करी जेह,
कारज पडे पण ते नवि टकिया, क्रोध तणा बल एह । जब. ।।8।।
चंडरुद्र आचारज चालतां, मस्तक दिधा प्रहार,
समता करता केवल पाम्यो, नव दीक्षित अणगार । .... जब. ।।9।।
समता भाव वलि जे मुनि वरिया, तेनो धन्य अवतार,
खंधक ऋषिनी खाल उतारी, उपशमें उतर्या पार जब. ।।10।।
सागरचंद्रनुं शीस प्रजाल्यु, ऋषभसेन नरेंद्र,
समता भाव धरी सुरलोके, पहोंच्या परमानंद । ..... जब. ।।11।।
खिमां करतां खरच न लागे, भागे क्रोड कलेश,
अरिहंत देव आराधक थाये, वाधे **सुजस** प्रवेश । जब. ।।12।।

12. मन:स्थिरता

जब लग आवे नही मन ठाम,
तब लग कष्ट क्रिया सवि निष्फल, ज्युं गगने चित्राम । . जब. ।।1।।
करनी बिन तूं करे ते मोटाइ, ब्रह्मवती तुझ नाम,
आखर फल न लहेगो ज्यो जग, व्यापारी बिनु दाम । जब. ।।2।।

मुंड मुंडावत सब ही गडरिया, हरिण रोझ वन धाम,
जटाधार वट भस्म लगावत, रासभ सहतुं हे धाम । ... जब. ।।3।।

एते पर नहीं योग की रचना, जो नहीं मन विश्राम,
चित्त अंतर परके छल चिंतवि, कहा जपत मुखराम । जब. ।।4।।

वचन काय कोपे दृढ न रहे, चित्त तुरंग लगाम,
तामें तूं न लहे शिव साधन, जिउ कण सूनें गाम । ... जब. ।।5।।

ज्ञान धरो करो संजम किरिया, न फिरावो मन ठाम,
चिदानंद धन सुजस विलासी, प्रगटे आतम राम । जब. ।।6।।

13. श्री मनुष्य भव

(राग मारुं मन मोह्युं रे श्री सिद्धाचले - अे देशी)

मनुष्य भवनुं टाणुं रे काले वही जशे रे, अरिहंत गुण गावो नर नार,
रत्न चिंतामणि आव्युं हाथमां रे, भगवंत गुण गावो नर नार. मनु. 1
बळद थइने रे चीलाए चालशो रे, चढशो वळी चोराशीनी चाल,
चोगडुं बांधीने घाणीअे फेरवशे रे, ऊपर बेसी मूरख देशे मार. मनु. 2
कुतरा थइने घर घर भटकशो रे, घरमां पेसवा नही दीअे कोय,
कानमां कीडा रे पडशे अति घणां रे, ऊपर पडशे लाकडीओना मार. मनु. 3
गधेडा थइने रे गलीओमां भटकशो रे, उपाडशो अण तोल्या भार
उकरडानी ओथे रे जइने भूंकशो रे, सांज पडे धणी नहि लीअे संभाळ मनु. 4
भुंड थइने पादर भटकशो रे करशो वळी अशुचिना आहार,
नजरे दीठा रे कोइने नवि गमो रे, देशे वळी पत्थरना प्रहार.मुन. 5
ऊंट थइने रे बोजा उपाडशो रे, चरशो वळी कांटाने कंथार,
हाथने हडशेले घर भेगा थाशो रे, ऊपर पडशे पाटुना प्रहार.मनु. 6

घोडा थइने रे गाडीओ खेंचशो रे, ऊपर पडशे चाबुकना प्रहार,
चोकडुं बांधीने ऊपर बेसशे रे, राय राणा थाशे असवार...मनु. 7
झाड थइने वनमां धुजशो रे, सहेशो वळी तडकां ने टाढ
डाळेने पांदडे रे पंखी माला घालशे रे, ऊपर पडशे कुहाडाना घा. मनु. 8
उत्तम नरभव फरी फरी आतमा रे, मळवो बहु छे मुश्केल
हर्ष विजयनी एणी पेरे शिखडी रे, तुम सांभलजो अमृतवेल मनु. 9

14. आत्म दर्शन

चेतन ! अब मोहे दर्शन दीजे ।
तुम दर्शन शिव सुख पामीजे, तुम दर्शन भव छीजे ।। ..चे. ।।1।।

तुम कारण तप-संयम-किरिया, कहो कहांलो कीजे ।
तुम दर्शन बिनु सब या झूठी, अंतर चित्त न भींजे ।।चे. ।।2।।

क्रिया मूढमति कहे जन कोई, ज्ञान ओरकुं प्यारो ।
मिलित भाव रस दोय न चाखे, तूं दोनुं में न्यारो ।। .....चे. ।।3।।

सबमें है ओर सबमें नांही, तूं नट रुप अकेलो ।
आप स्वभावे विभावे रमतो, तूं गुरु और तूं चेलो ।। .चे. ।।4।।

जोगी जंगम अतिथि संन्यासी, तुम कारण बहु खोजे ।
तूं तो सहज शक्ति स्युं प्रगटे, चिदानंद की मोजे ।। .....चे. ।।5।।

अकल अलख प्रभु तूं बहुरुपी, तूं अपनी गति जाने ।
अगम रुप आगम अनुसारे, सेवक **सुजस** बखाने ।। चे. ।।6।।

आजनो दिवस केवो छे ? सोना करतां मोंघो छे ।

15. मुर्खता

(राग - भैरवी)

विरथा जनम गमायो मुरख ।
वंचक सुखरस वश होय चेतन, अपनो मूल नसायो ।
पांच मिथ्यात्व धार तूं अजहूं, साच भेद नवि पायो ।। ... मू. ।।1।।
कनक कामिनी अरु एहथी, नेह निरंतर लायो ।
ताहुथी तूं फिरत सोरानो, कनक बीज मानु खायो ।। मू. ।।2।।
जन्म जरा मरणादिक दुःख में, काल अनंत गमायो ।
अरहट घटिका जीम कहो याको, अंत अजहुँ न आयो ।। . मू. ।।3।।
लख चौराशी पहेर्या चोलना, नव नव रुप बनायो ।
बिन समकित सुधारस चाख्या, गिणती कोउ न गिणायो ।। मू. ।।4।।
एती पर नवि मानत मूरख, ए अचरिज चित आयो ।
चिदानंद ए तत्व जगत में, जिणे प्रभुशुं मन लायो ।। ... मू. ।।5।।

16. लघुता

लघुता मेरे मन मानी, लइ गुरुगम ज्ञान निशानी,
मद अष्ट जिनोने धारे, ते दुर्गति गये बिचारे ।
देखो जगत में प्राणी दुःख लहत अधिक अभिमानी ।। .लघु. ।।1।।
शशी सूरज बड़े कहावे, ते राहु के वश आवे ।
तारागण लघुता धारी, स्वरभानु भीति निवारी ।। .लघु. ।।2।।
छोटी अति जोयणगंधी, लहे खटरस स्वाद सुगंधि ।।
करटी मोटाइ धारे, ते छार शीश निज डारे ।। .....लघु. ।।3।।

जब बाल चंद्र होय आरे, तब सहु जग देखण धावे ।
पुनम दिन बडा कहावे, तब क्षीण कला होय जावे ।। लघु. ।।4।।

गुरुताइ मनमें वेदे, नृप श्रवण नासिका छेदे ।
अंग मांहे लघु कहावे, ते कारण चरण पुजावे ।। .....लघु. ।।5।।

शिशु राजधाम में जावे, सखी हिलमिल गोद खिलावे ।
होय बड़ा जाण नहीं पावे, जावे तो शीश कटावे ।।लघु. ।।6।।

अंतर मद भाव वहावे, तब त्रिभुवन नाथ कहावे ।
इम **चिदानंद** ए गावे, रहणी विरला कोउ पावे ।। .....लघु. ।।7।।

17. सच्चे मुनि

अवधू निरपक्ष विरला कोई, देख्या जगत सहु जोइ, अवधू.
समरस भाव भला चित्त जाके, थाप उथाप न होइ ।
अविनाशी के घर की बातां, जानेंगे नर सोई ।। .....अवधू. ।।1।।

राय रंक में भेद न जाने, कनक उपल सम लेखे ।
नारी नागणी को नही परिचय, तो शिव मंदिर देखे ।। अवधू. ।।2।।

निंदा स्तुति श्रवण सुनीने, हर्ष शोक नही आणे ।
ते जगमें जोगीश्वर पूरा, नित्य चढते गुण ठाणे ।। ....अवधू. ।।3।।

चंद्र समान सौम्यता जाकी, सायर जिम गम्भीरा ।
अप्रमत्त भारंड परे नित्य, सुरगिरि समशुचि धीरा ।। अवधू. ।।4।।

पंकज नाम धराय पंकशु, रहत कमल जीम न्यारा ।
चिदानंद इस्या जन उत्तम, सो साहिब का-प्यारा ।। ..अवधू. ।।5।।

18. शीलव्रत

(धन्य धन्य ते दिन माहरो)

शीयल समुं व्रत को नहि, श्री जिनवर एम भाखे रे,
सुख आपे जे शाश्वता, दुर्गति पडता राखे रे. .....शी. ।।1।।

व्रत पच्चखाण म विना जुओ, नव नारद जेह रे,
एकज शीयल तणे बले, गया मुक्ते तेह रे .....शी. ।।2।।

साधु अने श्रावक तणां, व्रत छे सुखदायी रे,
शीयल विना व्रत जाणजो, कुशका सम भाई रे. .....शी. ।।3।।

तरुवर मूल विना जिस्यो, गुण विण लाल कमान रे,
शीयल विना व्रत एहवुं, कहे वीर भगवान रे. .....शी. ।।4।।

नव वाडे करी निर्मलुं, पहेलुं शीयल ज धरजो रे,
उदयरत्न कहे ते पछी, व्रतनो खप करजो रे. .....शी. ।।5।।

19. वर्धमान तप

प्रभु ! तुज शासन अति भलुं, तेमां भलुं तप वर्धमान रे,
समताभावे सेवतां, जल्दी वहे शिवगेह रे. .....प्रभु. ।।1।।

षटरस तजी भोजन करे, विगय करे षट दूर रे,
खटपट सघली परिहरी, कर्म करे चकचूर रे. .....प्रभु. ।।2।।

पडिकमणां दोय टंकना, पोषहव्रत उपवास रे,
नियम चिंता करे सर्वदा, ज्ञान-ध्यान सुविलास रे. .....प्रभु. ।।3।।

देहने दुःख देवा थकी, महाफल प्रभु भाखे रे,
खड्गधारा व्रत ए सही, आगम अंतगड साखे रे. .प्रभु. ।।4।।

चौद वर्ष साधिक होवे, ए तपनुं परिणाम रे,
देहना दंड दूरे करे, तप चिंतामणि जाण रे. .....प्रभु. ।।5।।

सुलभबोधि जीवने, ए तप उदये आवे रे,
शासन सुर सान्निध्य करे, **धर्मरत्न** पद पावे रे. ..प्रभु. ।।6।।

20. मुनिगण

समता सुखना जे भोगी, अष्टांग धरण जे जोगी,
सदानंद रहे जे असोगी, श्रद्धावंत जे शुद्धोपयोगी,
भविजन ! एहवा मुनि वंदो...
जेहथी टले सवि दुःख दंदो, जे समकित सुरतरु कंदो भवि. ।।1।।

ज्ञानामृत जे रस चाखे, जिन आणा हियडे राखे,
सावद्य वचन नवि भांखे, भाख्युं जिनजीनुं भाखे ..भवि. ।।2।।

आहार लिये निर्दोष, न धरे मन राग ने रोष,
न करे वली इन्द्रिय पोष, न चिकित्से न जुए जोष ....भवि. ।।3।।

बाह्यांतर परिग्रह त्यागी, त्रिकरणथी जिन मत रागी,
जस शिवरमणि रढ लागी, विनयी गुणवंत वैरागी भवि. ।।4।।

मद आठ तणा मान गाले, एक ठामे रहे वरसाले,
पंचाचार ते सुधा पाले, वली जिनशासन अजुआले. ..भवि. ।।5।।

पंचाश्रव पाप निरोधे, ज्ञान दर्शन चारित्र शोधे,
नवि राचे न कोइंथी क्रोधे, उपगार भणी भवि बोधे भवि. ।।6।।

भिक्षा ले भ्रमर परे भमतां, मनमां न धरे कांइ ममता,
राग द्वेष सुभटने दमता, रहे ज्ञान चोगानमां रमता. ...भवि. ।।7।।

सुधा पंच महाव्रत वहेता, उपशम धरी परिषह सहेता,
वली मोह गहनवन दहता, विचरे गुरु आणाए रहेता. भवि. ।।8।।

जे ज्ञान क्रिया गुण पात्र, अणदीधुं न ले तृण मात्र,
सदा शीले सोहावे गात्र, जाणे जंगम तीरथ जात्र. ....भवि. ।।9।।

दया पाले वीशवावीश, धरे ध्यान धर्म निशदिश,
जगजंतु तणा जे ईश, जश इंद्र नमावे शीश. ..भवि. ।।10।।

क्रोध-लोभ अभिमान ने माया, तजीया जेने चार कषाया,
बुध खिमाविजय गुरुराया, शिष्य **जिनविजय** गुण गाया. भवि. ।।11।।

21. कर्म विचित्रता

सुख दुःख सरज्यां पामीयेरे, आपद संपद होय,
लीला देखी परतणी रे, रोष म धरजो कोयरे,
प्राणी मन नाणो विषवाद, ए तो कर्मतणा परसाद रे, .प्राणी. ।।1।।

फलने आहारे जीवीया रे, बार वरस वन राम,
सीता रावण लइ गयो रे, कर्मतणा ए काम रे. ..प्राणी. ।।2।।

नीर पाखे वन एकलो रे, मरण पाम्यो मुकुंद,
नीचतणे घर जल वह्यो रे, शिश धरी हरिश्चंद्र रे. ...प्राणी. ।।3।।

नले दमयंती परिहरी रे, रात्रि समय वनमांय
नामठाम कुल गोपवी रे, नले निरवह्यो काल रे. .प्राणी. ।।4।।

रुप अधिक जग जाणीये रे, चक्री सनत कुमार,
वरस सातशें भोगवी रे, वेदना सात प्रकारे, ...प्राणी. ।।5।।

रुपे वली सुर सारिखा रे, पांडव पांच विचार,
ते वनवासे रडवड्या रे, पाम्यां दुःख अपार रे, . प्राणी. ।।6।।

सुर नर जस सेवा करे रे, त्रिभुवनपति विख्यात,
ते पण कर्म विटंबीया रे, तो माणस केइ मात्र रे ..... प्रामी. ।।7।।

दोष न दीजे केहने रे, कर्म विटंबणा हार,
दानमुनि कहे जीवने रे, धर्म सदा सुखकार रे. . प्राणी. ।।8।।

22. सुकृत की सज्झाय

जीवडा सुकृत करजे सार, नहितर स्वप्नुं छे संसार,
पलकतणो निश्चय नथी ने, नथी बांधी तें धर्मनी पाल. जीवडा. ।।1।।

ऊंची मेडी ने अजब झरुखा, गोख तणो नहिं पार,
लखपति छत्रपति चाल्या गया, तेना बंध रह्या छे बार. जीवडा. ।।2।।

ऊपर फूलडां फरहरे ने, बांध्या श्रीफल चार,
ठाकठीक करी एने ठाठडीमां बांध्यो, पछी पूंठे ते लोकनां पोकार जीवडा.।।3।।

शेरी लगे जब साथे चलेंगी, नारी तणो परिवार,
कुटुंब कबीलो पाछो फरीने, सौ करशे खानपान सार. जीवडा. ।।4।।

सेज तलाई विना नवि सुतो, करतो ठाठ हजार,
श्मशाने जई चेहमां सुवुं, ऊपर काष्ठनो भार. .....जीवडा. ।।5।।

अग्नि मूकीने अलगा रहेशे, त्यारे वरससे अंगे अंगार,
खोली खोलीने बालसे, जेम लोढुं गाले लुहार. .जीवडा. ।।6।।

स्नान करींने चालीया, सौ साथे मिली नरनार,
दश दिवस रोइ रोइने रहेशे, पछी ते मूकशे विसार.जीवडा. ।।7।।

एवुं जाणीने धर्म करी ले, करी ले पर उपकार,
सत्य शियलथी पामी जा जीवडा, शिवतरु फल सहकार.जीवडा. ।।8।।

23. श्री सम्यक्त्व के सडसठ बोल सज्झाय

कुल 12 - ढाळ

दोहे

सुकृतवल्लि कादंबिनी, समरी सरस्वती मात,
समकित सडसठ बोलनी, कहीशुं मधुरी वात ..... ।।1।।
समकित दायक गुरुतणो, पच्चुवयार न थाय,
भव कोडा कोडें करी, करतां सर्व उपाय ..... ।।2।।
दानादिक किरिया न दीये, समकित विण शिवशर्म,
ते माटे समकित वडुं, जाणो प्रवचन मर्म ..... ।।3।।
दर्शन मोह विनाशथी, जे निर्मल गुणठाण
ते निश्चय समकित कह्युं, तेहना ए अहिठाण..... ।।4।।

ढाळ पहेली

चउ सद्दहणां ति लिंग छे, दशविध विनय विचारो रे,
त्रण शुद्धि पण दूषण, आठ प्रभावक धारो रे ..... ।।5।।

त्रोटक

प्रभावक अड पंच भूषण, पंच लक्षण जाणीये,
षट जयणा षट आगार भावना, छव्विहा मन आणीये,
षट ठाण समकित तणा सडसठ, भेद एह उदार ए,
एहनो तत्त्व विचार करतां, लही जे भवपार ए ..... ।।6।।

ढाळ

चउविह सद्दहणां तिहां, जीवादिक परमत्थो रे,
प्रवचनमांहि जे भाखीया, लीजे तेहनो अत्थो रे ..... ।।7।।

त्रोटक

तेहनो अर्थ विचार करीए, प्रथम सद्दहणा खरी,
बीजी सद्दहणा तेहना जे, जाण मुनि गुण जवहरी,
संवेग रंग तरंग झीले, मार्ग शुद्ध कहे बुधा,
तेहनी सेवा कीजीये जीम, पीजीये समता सुधा ..... ।।8।।

ढाळ

समकित जेणे ग्रही वम्युं, निह्नवने अहछंदा रे,
पासत्थाने कुशीलीया, वेष विडंबक मंदारे ..... ।।9।।

त्रोटक

मंदा अनाणी दूर छंडो, त्रीजी सद्दहणां ग्रही,
पर दर्शनीनो संग तजीये, चोथी सद्दहणा कही,
हीणा तणो जे संग न तजे, तेहनो गुण नवी रहे,
ज्युं जलधि जलमां भल्युं, गंगा नीर लुणपणुं लहे. ... ।।10।।

ढाळ बीजी

(कपूर होवे अति उज्लो रे - ए देशी)

त्रण लिंग समकित तणां रे, पहेलुं श्रुत अभिलाष,
जेहथी श्रोता रस लहे रे, जेवो साकर द्राख रे,
प्राणी धरीये समकित रंग, जिम लहीए सुख अभंग रे प्राणी. ।।11।।

तरुण सुखी स्त्री परिवर्यो रे, चतुर सुणे सुरगीत,
तेहथी रागे अति घणो रे, धर्म सुण्यानी रीत रे, प्राणी. ।।12।।

भूख्यो अटवी उतर्यो रे, जिम द्विज घेबर चंग,
इच्छे तिम जे धर्मने रे, तेहीज बीजुं लिंग रे, ...प्राणी. ।।13।।

वैयावच्च गुरुदेवनुं रे, त्रीजुं लिंग उदार,
विद्या साधक तणी परे रे, आलस नविय लगार रे, प्राणी. ।।14।।

ढाळ त्रीजी

(राग - समकितनुं मूल जाणीएजी)

अरिहंत ते जिन विचरता जी, कर्म खपी हुआ सिद्ध,
चेइय जिण पडिमा कही जी, सूत्र सिद्धांत प्रसिद्ध.
चतुर नर ! समजो विनय प्रकार, जिम लहीये समकित सार.च. ।।15।।

धर्म क्षमादिक भाखीये जी, साधु तेहना रे गेह,
आचारज आचारनाजी, दायक नायक जेह, ... च. ।।16।।

उपाध्याय ते शिष्यने जी, सूत्र भणावणहार,
प्रवचन संघ वखाणीये जी, दरिसण समकित सार. ... च. ।।17।।

भक्ति बाह्य प्रतिपत्तिथीजी, हृदय प्रेम बहुमान,
गुण थुति अवगुण ढांकवाजी, आशातनानी हाण.. च. ।।18।।

पांच भेदे ए दश तणो जी, विनय करे अनुकूल.
सिंचे तेह सुधारसेजी, धर्म वृक्षनुं मूल..... च. ।।19।।

सोना करता मोंघु शुं ? संयम संयम ।

ढाळ चोथी

(धोबिडा तुं धोजे मननुं धोतियुं रे - ए देशी)

त्रण शुद्धि समकित तणी रे, तिहां पहेली मन शुद्धि रे,
श्री जिनने जिन मत विना रे, जूठ सकल ए बुद्धि रे,
चतुर ! विचारो चित्तमां रे, ... च. ।।20।।

जिन भगते जे नवि थयुं रे, ते बीजाथी नवी थाय रे,
एवुं जे मुख भाखीये रे, ते वचन शुद्धि कहेवाय रे ..... च. ।।21।।

छेद्यो भेद्यो वेदना रे, जे सहेतो अनेक प्रकार रे,
जिन विण पर सुर नवि नमे रे, तेहनी काया शुद्धि उदार रे.च. ।।22।।

ढाळ पांचमी

(कडवा फल छे क्रोधना - ए राग)

समकित दूषण परिहरो, जेमां पहेली छे शंका रे,
ते जिन वचनमां मत करो, जेहने सम नृप रंका रे,
समकित दूषण परिहरो, ...सम. ।।23।।

कंखा कुमतनी वांछना, बीजुं दूषण तजीए,
पामी सुरतरु परगडो, किम बाउल भजीए .....सम. ।।24।।

संशय धर्मना फलतणो, वितिगिच्छा नामे,
त्रीजु दूषण परिहरो, निज शुभ परिणामे, ...सम. ।।25।।

मिथ्यामति गुण वर्णनो, टालो चोथो दोष,
उन्मारगी थुणतां हुवे, उन्मारग पोष. .....सम. ।।26।।

पांचमो दोष मिथ्यामति, परिचय नवी कीजे,
इम शुभ मति अरविंदनी, भली वासना लीजे. .....सम. ।।27।।

ढाळ छट्ठी

(अभिनंदन जिन दरसिण तरसीए - देशी)

आठ प्रभावक प्रवचनना कह्यां, पावयणी धुरि जाण,
वर्तमान श्रुतना जे अर्थनो, पार लहे गुणखाण,
धनधन शासन मंडन मुनिवरा, ... ।।28।।

धर्मकथी ते बीजो जाणीये, नंदिषेण परे जेह,
निज उपदेशे रे रंजे लोकने, भंजे हृदय संदेह ..... धन. ।।29।।

वादी त्रीजो रे तर्क निपुण भण्यो, मल्लवादी परे जेह,
राजद्वारे रे जय कमला वरे, गाजंतो जिम मेह. .धन. ।।30।।

भद्रबाहु परे जेह निमित्त कहे, परमत जीपण काज,
तेह निमित्ति रे चोथो जाणीये, श्री जिनशासन राज. ..धन ।।31।।

तप गुण ओपे रे रोपे धर्मने, गोपे नवि जिन आण,
आश्रव लोपे रे, नवी कोपे कदा, पंचम तपसी ते जाण. धन. ।।32।।

छट्ठो विद्या रे मंत्र तणो बली, जिम श्री वयर मुणींद,
सिद्ध सातमो रे अंजन योगथी, जिम कालिक मुनिचंद.धन. ।।33।।

काव्य सुधारस मधुर अर्थ भर्या, धर्म हेतु करे जेह,
सिद्धसेन परे राजा रीझवे, अट्ठम वर कवि तेह. धन. ।।34।।

जब नवि होवे प्रभावक एहवा, तब विधि पूर्व अनेक,
जात्रा पूजादिक करणी करे, तेह प्रभावक छेक. .....धन. ।।35।।

मीठा करता खारु शुं ? संसार संसार ।

ढाळ सातमी

(सती सुभद्रानी - देशी)

सोहे समकित जेहथी, सखी ! जिम आभरणे देह,
भूषण पांच ते मन वस्यां सखी ! तेहमां नहि संदेह
मुज समकित रंग अचल होजो ..... ।।36।।
पहेलुं कुशलपणुं तिहां, सखी ! वंदनने पच्चखाण,
किरियानो विधि अति घणो, सखी ! आचरे तेह सुजाण मुज. ।।37।।
बीजुं तीरथ सेवनां, सखी ! तीरथ तारे जेह,
ते गीतारथ मुनिवरा, सखी ! तेहशुं कीजे नेह...मुज. ।।38।।
भक्ति करे गुरुदेवनी, सखी ! त्रीजुं भूषण होय,
किणहि चलाव्यो नवि चले, सखी ! चोथुं भूषण जोय.मुज. ।।39।।
जिनशासन अनुमोदना, सखी ! जेहथी बहुजन हुंत,
कीजे तेह प्रभावना, सखी ! पांचमुं भूषण खंत...मुज. ।।40।।

ढाळ आठमी

(राग - धर्म जिनेश्वर गाउं रंगशुं)

लक्षण पांच कह्यां समकिततणां, धुर उपशम अनुकूल, सुगुण नर,
अपराधीशुं पण नवि चित्त थकी, चिंतवीये प्रतिकुल
सुगुणनर ! श्री जिन भाषित वचन विचारीए रे. ..... सु. ।।41।।
सुर नर सुख जे दुःख करी लेखवे, वंछे शिवसुख एक, . सु.
बीजुं लक्षण ते अंगी करे, सार संवेगशुं टेक..... सु. ।।42।।
नारक चारक सम भव उभग्यो, तारक जाणीने धर्म, ... सु.
चाहे निकलवुं निर्वेद ते, त्रीजुं लक्षण मर्म, ..सु. श्री जिन. ।।43।।

द्रव्य थकी दुःखीयानी जे दया, धर्महीणानी रे भाव, ... सु.
चोथुं लक्षण अनुकंपा कह्युं, निज शक्ते मन लाव. सु. श्री जिन. ।।44।।
जे जिन भाख्युं ते नहि अन्यथा, एहवो जे दृढ रंग, ... सु.
ते आस्तिकता लक्षण पांचमुं, करे कुमतिनो भंग, सु. श्री जिन. ।।45।।

ढाळ नवमी

(त्रीजे भव वीसस्थानक करी - ए देशी)

परतीरथी परना सुर तेणे, चैत्य ग्रह्या वली जेह,
वंदना प्रमुख तिहां नवि करवुं, ते जयणा षट् भेद रे,
भविकां समकित यतनां कीजे, ... ।।46।।
वंदन ते करयोजन कहिये, नमन ते शीश नमाडे,
दान इष्ट अन्नादिक देवुं, गौरव भक्ति देखाडे रे. .....भ. ।।47।।
अनुप्रदान ते तेहने कहीये, वारंवार जे दान,
दोष कुपात्रे पात्र मतिये, नहि अनुकंपा मान रे. ....भ. ।।48।।
अणबोलाव्ये जेह बोलवुं, ते कहीये आलाप,
वारंवार आलाप जे करवो, ते कहिये संलाप रे. .....भ. ।।49।।
ए जयणाथी समकित दीपे, वली दीपे व्यवहार,
एमां पण कारणथी जयणा, जेहना अनेक प्रकार रे. भ. ।।50।।

ढाळ दशमी

(ललनानी - देशी)

शुद्ध धर्मथी नवि चले, अति दृढ गुण आधार, ललना.
तो पण जे नवि एहवा, तेहने एह आगार, ... ललना. ।।51।।

बोल्युं तेहवुं पालीये, दंति दंत सम बोल, ललना.
सज्जनने दुर्जन तणा, कच्छप कोटि ने तोल. ललना. ।।52।।
राजा नगरादिकनो धणी, तस शासन अभियोग, ललना.
तेहथी कार्तिकनी परे, नहि मिथ्यात्व संयोग ..... ललना. ।।53।।
मेलो जननो गण कह्यो, बल चोरादिक जाण, ललना.
क्षेत्रपालादिक देवता, तातादिक गुरु ठाण. ... ललना. ।।54।।
वृत्ति दुर्लभ आजीविका, ते भीषण कांतार, ललना.
ते हेते दूषण नहीं, करतां अन्य आचार..... ललना. ।।55।।

ढाळ अगियारमी

(राग मल्हार-पांच पोथी रे ठवणी पाठां विठणांणांए - ए देशी)

भाविजे रे समकित जेहथी रुअडुं,
ते भावना रे भावो मन करी परवडुं,
जो समकित रे ताजुं साजुं मूल रे,
तो व्रततरु रे दीये शिवपद अनुकूल रे ..... ।।56।।

त्रोटक

अनुकूल मुल रसाल समकित, तेह विण मतिअंध रे,
जे करे किरिया गर्व भरिया, तेह जूठो धंध रे,
ए प्रथम भावना गुणें रुडी, सुणो बीजी भावना,
बारणुं समकित धर्म पुरनुं, एहवी ते पावना ..... ।।57।।

ढाळ

त्रीजी भावनां रे समकित पीठ जो दृढ ग्रही,
तो मोटो रे धर्म प्रासाद डगे नहीं,

पाये खोटे रे, मोटे मंडाण न शोभीये,
तेह कारण रे समकित शुं चित्त थोभीये ..... ।।58।।

त्रोटक

थोभीये चित्त नित एम भावी, चोथी भावना भावीये,
समकित निधान समस्त गुणनुं, एहवुं मन लावीये,
तेह विण छूटां रत्न सरीखा, मूल उत्तर गुण सवे,
किम रहे ताके जेह हरवा, चोर जोर भवे भवे ..... ।।59।।

भावो पंचमी रे भावनां शम-दम सार रे,
पृथ्वी परे रे, समकित तस आधार रे,
छट्ठी भावना रे भाजन समकित जो मिले,
श्रुत शीलनो रे तो रस तेहमांथी नवी ढले ..... ।।60।।

त्रोटक

नवि ढले समकित भावना रस, अमिय रससंवर तणो,
षट भावनां ए कही एहमां, करो आदर अति घणो,
इम भावतां परमार्थ जलनिधि, होय तनु झकझोल ए,
घन पवन पुण्य प्रमाण प्रगटे, चिदानंद कल्लोल ए. ..... ।।61।।

ढाळ बारमी

(जे मनुवेश शके छंडी - ए देशी)

ठरे जिहां समकित ते थानक, तेहना षट्विध कहिये रे,
तिहां पहेलु थानक छे चेतन, लक्षण आतम लहिये रे,
खीर नीर परे पुद्गल मिश्रित, पण एहथी अलगो रे,
अनुभव हंस चंचू जो लागे, तो नवि दीसे वलगो रे. .. ।।62।।

बीजुं थानक नित्य आत्मा, जे अनुभूत संभाले रे,
बालकने स्तन पान वासना, पूरव भव अनुसारे रे,
देव मनुज नरकादिक तेहना, छे अनित्य पर्यायो रे,
द्रव्य थकी अविचलित अखंडित, निजगुण आतमराया रे. ।।63।।

त्रीजुं स्थानक चेतन कर्ता, कर्म तणे संयोगे रे,
कुंभकार जिम कुंभ तणो जे, दंडादिक संयोगे रे,
निश्चयथी निज गुणनो कर्ता, अनुपचरित व्यवहारे रे,
द्रव्य कर्मनो नगरादिकनो, ते उपचार प्रकार रे. ..... ।।64।।

चोथुं थानक छे भोक्ता, पुण्य पाप फल केरो रे,
व्यवहारे निश्चयनय दृष्टि, भुंजे निज गुण नेरो रे,
पंचम थानक छे परमपद, अचल अनंत सुख वासो रे,
आधि व्याधि तनमनथी लहिये, तस अभावे सुख खासो रे. ।।65।।

छट्ठं थानक मोक्ष तणुं छे, संयम ज्ञान उपायो रे,
जो सहेजे लहिए तो सघले, कारण निष्फल थाओ रे,
कहे ज्ञान नय ज्ञान ज साचुं, ते विण जूठी किरिया रे,
न लहे रुपुं रुपुं जाणी, छीप भणी जे फिरीया रे. .... ।।66।।

कहे किरिया नय किरिया विण जे, ज्ञान तेह शुं करशो रे,
जल पेसी कर पद न हलावे, तारुं ते किम तरशे रे,
दूषण भूषण छे ईहां बहोलां, नय एकेकने वादे रे,
सिद्धान्ती बेहु नय साधे, ज्ञानवंत अप्रमादे रे. ..... ।।67।।

इणिपरे सडसठ बोल विचारी, जे समकित आराधे रे,
राग द्वेष टाली मन वाली, ते समसुख अवगाहे रे,
जेहनुं मन समकितमां निश्चल, कोई नहीं तस तोले रे,
श्री नयविजय विबुध पय सेवक, वाचक **जश** इम बोले रे. ।।68।।

24. आठम की सज्झाय

अष्टमी पर्व आराधो प्रीते, भाखे श्री वर्धमानो रे
बारे पर्षदा आगे प्रकाशे, वाणी अमीय समानो रे .....अष्टमी. 1

श्रेणिक नरपति वांदवा आवे, सुणतां सवि सुखकार रे
चार कषाय ने विषय प्रमादे, जीव रुले संसार रे... अष्टमी. 2

व्रत पच्चक्खाण विण अविरतिअे, थाय सफल अवतार रे
यथाशक्ति तपने आचरीये, जीम तरीये संसार रे... ...अष्टमी. 3

जो प्रतिदिन यथाशक्ति न होवे, तो पर्व दिवस परमाण रे
परभव आयुनो बंध ज होवे, पर्वना दिवसे जाण रे...अष्टमी. 4

अष्टमी तप फल पूछे, गोयम भाखे चरम जिणंद रे
अष्ट महासिद्धिने अड संपद, आठे कर्म निकंद रे... ...अष्टमी. 5

बुद्धितणा गुण आठ विकासे, आठे दृष्टि उल्लास रे
श्री प्रवचनना आठ फल, अेथी आठे मद शोषाय रे... अष्टमी. 6

ऋषभदेवनो जन्म ने दीक्षा, जन्म अजित जिनराय रे
संभव जिननुं च्यवन प्रमाणो, अभिनंदन शिवराजो रे... अष्टमी. 7

मुनिसुव्रत नमी जन्मकल्याणक, नेमिनाथ निर्वाण रे
पार्श्वप्रभुजी अष्टमी दिवसे, वरीया अक्षय ठाणो रे... अष्टमी. 8

अे तिथिनुं आराधन करतां, दंडवीर्य नरराय रे
शाश्वत सुख पाम्यो अविकारी, तप अनुपम फलदाय रे...अष्टमी. 9

कुशल **दीप** अेम धर्म करंता, देव सफल मन आश रे
अष्टमी पर्व आराधो प्रीते, भांखे श्री वर्धमानो रे... अष्टमी. 10

25. पर्युषण पर्व की सज्झाय

पर्वपजुसण आवीयां रे लाल, कीजे घणुं धर्मध्यान रे भविकजन 1
आरंभ सकल निवारीअे रे लाल, जीवोने दीजे अभयदान रे. भ. 1

सघला मासमां मास वडो रे लाल, भाद्रव मास सुमास रे भ.
तेहमां आठ दिन रुअडा रे लाल, कीजे सुकृत उल्लास रे.भ. 2

खांडण पीसण गारना रे लाल, नावण धोवण जेह रे; ..... भ.
अेहवा आरंभने टाळीअे रे लाल, वांछो सुख अछेह रे. ..... भ. 3

पुस्तक वासी न राखीअे लाल, ओच्छव करीअे अनेक रे;
धर्म सारु वित्त वापरो रे लाल, हइडे आणी विवेक रे. . भ. 4

पूजी अर्चीने आणीअे रे लाल, श्री सद्गुरुनी पास रे; ..... भ.
ढोल ददामा फेरिया रे लाल, मांगलिक गावो गीत रे. ..... भ. 5

श्रीफल सरस सोपारीयो रे लाल, दीजे साहम्मीने हाथ रे; भ.
लाभ अनंता बतावीया रे लाल, श्रीमुख त्रिभुवननाथ रे . भ. 6

नव वांचना कल्पसूत्रनी रे लाल, सांभलो शुद्ध भावे रे; ..... भ.
साहम्मिवच्छल्ल कीजीये रे लाल, भवजल तरवा नाव रे. . भ. 7

चित्ते चैत्य जुहारीअे रे लाल, पूजा सत्तर प्रकार रे; ..... भ.
अंगपूजा सद्गुरु तणी रे लाल, कीजीये हर्ष अपार रे. .. भ. 8

जीव अमारि पलावीअे रे लाल, तेहथी शिवसुख होय रे; ..... भ.
दान संवत्सरी दीजीये रे लाल, इण समो पर्व न कोई रे.भ. 9

काउस्सग्ग करीने सांभलो रे लोल, आगम आपणे कान रे; भ.
छट्ठ अट्ठम तपस्या करो रे लाल, कीजे उज्ज्वल ध्यान रे.भ. 10

इणविध पर्व आराधशे रे लाल, लेशे सुखनी कोड रे; ..... भ.
मुक्ति मंदिरमां महालशे रे लाल, **मतिहंस** नमे करजोड रे. भ. 11

26. प्रथम पाप स्थानक की सज्झाय

पाप स्थानक पहेलुं कह्युं रे, हिंसा नामे दुरंत,
मारे जे जग जीवने रे, ते लहे मरण अनंत रे,
प्राणी ! जिनवाणी धरो चित्त. 1

मातापितादि अनन्तना रे, पामे वियोग ते मंद;
दारिद्र दोहग नवि टले रे, मिले न वल्लभवृंद रे. 2

होअे विपाके दशगणुं रे, अेकवार कीयुं कर्म;
शत सहस कोडी गमे रे, तीव्र भावना मर्म रे. 3

`मर' कहेता पण दुःख हुवे रे, मारे किम नहि होय;
हिंसा भगिनी अति बूरी रे. वैश्वानरनी जोय रे. 4

तेहने जोरे जे हुआ रे, रौद्रध्यान प्रमत्त;
नरक अतिथि ते नृप हुआ रे, जिम सुभूम ब्रह्मदत्त रे. 5

राय विवेक कन्या क्षमा रे, परणावे जस साथ,
तेह थकी दूरे टले रे, हिंसा नाम बलाय रे. 6

27. माया की सज्झाय

समकितनुं मूल जाणीअेजी, सत्य वचन साक्षात्;
साचामां समकित वसे जी, मायामां मिथ्यात्व रे;
प्राणी ! म करीश माया लगार. 1

मुख मीठो जूठो मनेजी, कूड कपटनो रे कोट;
जीभे तो जी जी करेजी, चित्तमां ताके चोट रे. .....प्रा. 2
आप गरजे आघो पडेजी, पण न धरे विश्वास;
मनशुं राखे आंतरोजी, अे मायानो पास रे. .....प्रा. 3
जेहशुं बांधे प्रीतडीजी, तेह शुं रहे प्रतिकूल;
मेल न छंडे मन तणोजी, अे मायानुं मूल रे .....प्रा. 4
तप कीधो माया करीजी, मित्रशुं राख्यो रे भेद;
मल्लि जिनेश्वर जाणजोजी, तो पाम्या स्त्रीवेद रे. .....प्रा. 5
उदयरत्न कहे सांभलोजी, मूको मायानी बुद्ध;
मुक्तिपुरी जावा तणोजी, अे मारग छे शुद्ध रे. .....प्रा. 6

28. वाणी संयम की सज्झाय

(राग - आंखडी मारी प्रभु हरखाय छे)

चेतनजी ! वाणीनो संयम आदरो, न बोल्यामां लाखो गुण निर्धारजी;
वीर्यापात करता पण वाणी पातथी, विना विचारे हानि अपरंपारजो. 1
भाषा समिति करतां वाणीगुप्तिथी, फल घणुं आगममां भाख्युं जाणजो;
कोटीवार विचारी शब्दो बोलतां, लाभ घणो छे निज परने जग मानजो .2
ज्ञान विना सुण मौन जगतमां जाणवुं, मौन सिद्धि वचन सिध्ध थाय जो;
मौन रह्याथी संयमनी शोभा वधे, मन कायाथी चंचलता दूर थाय जो .3
वाणी संयम विण अवतार थता घणां, थया श्रमणजी राजाने घेर पुत्रजो;
शुक हणायो वाणीना संतापथी, वाणीना संयमथी शिवसुख सुत्र जो .4
बहु बोल्याथी थाय असर नहीं विश्वमां, वाणीना संयम विण पग पग क्लेश जो;
वाणी संयम करतां क्लेशो उपशमे, वैर विरोध विणसे आनंद बेसजो. 5

वाणी संयम सिध्ध थतां जग जाणजो, सुत्र समो जग थाशे अेकेक बोलजो;
दुनियामां ते सत्वर प्रसरी जावशे, लाभ विचारी कर मन तोलजो; 6
वाणी संयम करवामां बहु लाभजो, समज समज चेतनजी घर निर्धारजो;
रंगविजय वाणी संयम सिध्धथी, मौन छतां जग बोध लहे सुखकार जो.7

29. आत्म निंदा-गर्हा की सज्झाय

शी कहुं कथनी मारी वीर, शी कहुं कथनी मारी,
जन्म पहेला में आपनी पासे, कीधो कोल करारी.
अनंत जन्मना कर्म मीटाववा, मनुष्य जन्म दिलधारी हो.वीर. ...1
संसार वायरानी लहेर थकी हुं, विसर्यो आज्ञा तुमारी;
बालपणामां रह्यो अज्ञानी, मनुष्यजन्म गयो हारी हो. वीर. 2
जोबनवयमां विषयविकारी, राची रह्यो दिल धारी;
धर्म न पाम्यो धर्म न साध्यो, धर्मने मेल्यो विसारी हो. ... वीर. 3
जोतजोतामां घडपण आव्युं, शक्ति गई सहु मारी;
धनदौलतनी आशाअे वलग्यो, गयो मनुष्य भव हारी हो.वीर. 4
भरतभूमिमां पंचम काले, नहीं कोई केवल धारी;
संदेह सघला कोण निवारे, मति मुझाय छे मारी हो. ..... वीर. 5
उदयरत्न करजोडी कहे छे, करो हो महेर मोझारी;
भक्तिवत्सल बहु सहाय करीने, लेजो मुजने उगारी हो.वीर. 6

30. मरण विषय की सज्झाय

मरण न छूटे रे प्राणीया, करतां कोटी उपाय रे;
सुर नर असुर विद्याधरा, सहु अेक मारग जाय रे..... मरण. 1

इन्द्र चंद्र रवि हरि वली, गणपति काम कुमार रे
सुरगुरु सुरवैद्य सारीखा, पहोंच्या जग दरबार रे. ..मरण. 2
मंत्र जंत्र मणि औषधि, विद्या हुन्नर हजार रे;
चतुराई केरा रे चोकमां, जमडो लूंटे बजार रे. .....मरण. 3
गर्व करी नर गाजतां, करतां विविध तोफान रे;
माथे मेरु उघाडतां, पहोच्यां ते श्मशान रे. .....मरण. 4
कपडां घरेणां उतारशे, बांधशे ठाठडी मांय रे;
खोखली हांडली आगले, रोता रोता सहु जाय रे. .....मरण. 5
काया माया सहु कारमी, कारमो सहु घरबार रे;
रंक ने राय छे कारमो, कारमो सकल संसार रे. ....मरण. 6
बांधी मुठी लइ अवतर्यो, मरतां खाली छे हाथ रे;
जीवडा जोने तुं जगतमां, कोई न आवे छे साथ रे. .....मरण. 7
नाना मोटा सहु संचर्या, कोई नहि स्थिर वास रे;
नाम रुप सहु नाश छे, **धर्मरत्न** अविनाश रे. .....मरण 8

31. उत्तम मनोरथ की सज्झाय

धन धन ते दिन क्यारे आवशे, जपशुं जिनवरनाम;
कर्म खपावी रे जे थया केवली, करशुं तास प्रणाम. .....धन. 1
मन वच काया रे आपणा वश करी, लेशुं संयम योग;
समता धरशुं रे संयम योगमां, रहेशुं छंडी रे भोग. ...धन. 2
विनय वैयावच्च गुरु चरणे करी, करशुं ज्ञान अभ्यास;
प्रवचन माता रे आठे आदरी, चालशुं पंथ विकास. .....धन. 3

परिग्रह वसती रे वस्त्र ने पात्रमां, आडंबर अहंकार;
मूकी ममता रे लोकनी वांछना, पारशुं शुद्ध आचार. ..धन. 4
तप तपी दुर्लभ देह कसी घणुं, सहीशुं शीत ने ताप;
पुद्गल परिणति रंग निवारीने, रमशुं निजगुण आप. .....धन. 5
पद्मासन धरी निश्चल बेसशुं, धरशुं आतमध्यान;
गुणठाणानी रे श्रेणी चढी करी, साधशुं मोक्षनुं ठाम. ..धन. 6
करी संलेखण अणसण आदरी, योनि चोराशी रे लाख;
मिच्छामि दुक्कडं सर्व जीवो प्रति, दईशुं सद्गुरु साख. ....धन. 7
मोटा मुनिवर आगे जे हुआ, समरी तस अवदात;
परिषह सहशुं रे धीरपणुं धरी, करशुं कर्मनो घात. ...धन. 8
वाघर वींटी रे डोला नीसर्या, धन्य मेतारज साधु;
खंधक शिष्यो रे घाणी पीलीया, राखी समता अगाध. .....धन. 9
माथे पाली करी सगडी भरी, भरीयां मांही अंगार;
गजसुकुमाले रे शीर बलतुं सह्युं, ते पाम्या भव पार. धन 10
सिंह तणी परे सामा चालीया, सुकोशल मुनिराय;
विरुइ वाघण धसती खावा, वोसिरावी निज काय. .....धन. 11
देव परीक्षा रे करतां वली वली, चक्री सनत कुमार;
रोगे पीडियो रे वरस ते सातसे, न करी देहनी सार. धन. 12
निशदिन अेहवी रे भावना भावता, सरे निज आतमकाज;
मुनि **बुधविजय** बोले प्रेमशुं, भावना भवोदधि जहाज..... धन. 13

32. ऋतुवंती स्त्री की सज्झाय

सरसती माता आदे नमीने सरस वचन देनारी
असंजमीयनुं स्थानक बोलुं, ऋतुवंती जे नारी अलगी रहेजे
ठाणांगनी वाणी काने सूणीने... 1

मोटी आशातना ऋतुवंतीनी, जिनजीओ प्रकाशी
मलिनपणुं जे मन नवि धारे, ते मिथ्यामति वासी. अलगी रहेजे..2

पहेल दिन चंडालणी सरिखी, ब्रह्मघातिनी वली बीजे
परशासन कहे धोबण त्रीजे, चोथे शुद्ध वदीजे... 3

खांडे पीसे रांधे पियुने, परने भोजन पीरसे
स्वाद न होवे षटरस दोषे, घरनी लक्ष्मी शोषे... 4

चोथे दिवसे दरिसन सूझे, सातमे पूजा भणीये
ऋतुवंती मुनिने पडिलाभे, सद्गति सहेजे हणीये.....5

ऋतुवंती पाणी भरी लावे, जिन मंदिर जल लावे
बोधिबीज नवी पामे चेतन, बहुल संसारी थावे... 6

असज्झायमां जमवा बेसे, पांत विचे मन हिंसें
नात सर्वे अभडावी जमती, दुर्गतिमां बहु भमशे... 7

सामायिक पडिक्कमणे ध्याने, सूत्र अक्षर नवि जोगी
कोइ पुरुषने नवि आभडीये, तस फरसे तनु रोगी.....8

जिन मुख जोतां भवमां भमीये, चंडालणी अवतार
भुंडण लुंडण सापिणी होवे, परभवे घणी वार... 9

पापड वडी खेरादिक फरसे, तेहनो स्वाद विणासी
आतमनो आतम छे साखी, हैडे जोने तपासी... 10

इम जाणी चोक्खाई भजीअे, समकित किरिया शुद्धि
ऋषभविजय कहे जिन आणाथी, वहेला वरशो सिद्धि... 11

33. घड़ीयाळा की सज्झाय

जोबनीयानी मोजो फोजो, जाय नगारा देती रे
घडी घडी घडीयाला वागे, तोय न जागे तेथी रे... जोबनीयानी. 1

जरा राक्षसी जोर करे छे, फेलावे फजेती रे
आवी अवधे उंचकी लेशे, लखपतीने पण लेती रे...जोबनीयानी. 2

महेले बेठी मोज करे छे, खांते जोवे खेती रे
जमडो भमरो ताणी लेशे, गोफण गोला सेती रे... जोबनीयानी. 3

जे ते उपर जोर करो छो, चतुर ! जुओने चेती रे
मांदाता सरखा नर बलीया, राजवीया थया रेती रे...जोबनीयानी. 4

जिन राजाने शरणे जाओ, जोरालो को' न जे' थी रे
दुनियामां दुजो दीसे नहिं, आखर तरशो ते' थी रे... जोबनीयानी. 5

दांत पड्या ने डोशो थयो, काज सर्युं नहि के' थी रे
उदयरत्न कहे आपे समझो, कहीये वातो के' ती रे...जोबनीयानी. 6

34. जीभलड़ी की सज्झाय

बापलडी रे जीभलडी, तुं कां नवि बोले मीठुं;
विरुवां वचन तणां फल विरुवां, तें शुं ते नवि दीठुं रे. ... बाप. 1

अन्न उदक अणगमतां तुजने, जो नवि रुचे अनीठा;
अण बोलावी तुं शा माटे, बोले कुवचन धीठां रे. .... बाप. 2

अग्निए दह्युं नव पल्लव थाअे, कुवचन दुर्गति घाले;
अग्नि थकी ते अधिकुं कुवचन, ते तो क्षण क्षण साले रे.. बाप. 3

ते नर मान मोटप नवि पामे, जे नर होय मुख रोगी;
तेहने तो कोई नवि बोलावे, ते तो प्रत्यक्ष सोगी रे. .. बाप. 4

क्रोध भर्योते कडवुं बोले, अभिमाने अणगमते;
आप तणो अवगुण नवि देखे, ते किम जाशे मुगते रे. .... बाप. 5

जनम जनमनी प्रीत विणाशे, अेकण कडुये बोले;
मीठां वचन थकी विण करथे, लेवो सब जग मोले रे. बाप. 6

आगमने अनुसारे हित मति, जे नर रुडुं भाखे;
प्रगट थई परमेश्वर तेहनी, लज्जा जगमांहि राखे रे, ... बाप. 7

सुवचन कुवचन फल जाणी, गुण अवगुण मन आणी;
वाणी बोलो अमिय समाणी, **लब्धि** कहे सुण प्राणी रे. बाप. 8

35. साचा जैनत्त्व की सज्झाय

जैन कहो क्युं होवे, परमगुरु ! जैन कहो क्युं होवे ?
गुरु उपदेश बिना जन मूढा, दर्शन जैन विगोवे.....परम. 1

कहत कृपानिधि शम-जल झीले, कर्म-मैल जो धोवे,
बहुल पाप-मल अंग न धारे, शुद्ध रुप निज जोवे. ..परम. 2

स्याद्वाद पूरन जो जाने, नयगर्भित जस वाचा;
गुण पर्याय द्रव्य जो बूझे, सोई जैन है साचा, ...परम. 3

क्रिया मूढमति जो अज्ञानी, चलत चाल अपूठी;
जैन दशा उनमें ही नाही, कहे सो सबही जूठी.....परम. 4

परपरिणति अपनी कर माने, किरिया गर्वे गहिलो;
उनकुं जैन कहो क्युं कहिये ?, सो मूरखमे पहिलो. .....परम. 5

जैनभाव ज्ञान सबमांही, शिव साधन सद्दहिअे;
नाम वैषशुं काम न सीझे, भाव-उदासे रहीअे. .....परम. 6

ज्ञान सकल नय साधन साधो, क्रिया ज्ञानकी दासी,
क्रिया करत धरतुं हे ममता, याही गलेमें फासी. .....परम. 7

क्रिया बिना ज्ञान नहि कबहुं, क्रिया ज्ञान बिनुं नाही;
क्रिया ज्ञान दोउ मिलत रहतुं है, ज्यों जल-रस जलमांही .परम .8

क्रिया मगनता बाहिर दीसत, ज्ञान शक्ति जस भांजे,
सद्गुरु शीख सुने नही कबहुं, सो जन जगमें लाजे. .....परम. 9

तत्त्व-बुद्धि जिनकी परिणति है, सकल सूत्र की कूंजी,
जग **जस**वाद वदे उनही को, जैन दशा दस ऊंची. परम. 10

36. धोबीडा की सज्झाय

धोबीडा ! तुं धोजे मननुं धोतीयुं रे, रखे राखतो मेल लगार रे
एणे रे मेले जग मेलो कर्यो रे, अणधोयुं न राखे लगार रे... धोबीडा. 1

जिनशासन सरोवर सोहामणुं रे, समकित तणी रुडी पाल रे
दानादिक चारे बारणां रे, मांही नवतत्व कमल विशाल रे... धोबीडा. 2

तिहां झीले मुनिवर हंसला रे, पीये छे तप-जप नीर रे
शम दम आदे जे शिला रे, तिहां पखाले आतम चीर रे... धोबीडा. 3

तपावजे तप तडके करी रे, जालवजे नव ब्रह्म वाड रे
छांटा न उडाडे पाप अढारनां रे, एम उजलुं होशे ततकाल रे... धोबीडा. 4

आलोयण साबुडो सुधो करे रे, रखे आवे माया सेवाल रे
निश्चे पवित्रपणुं राखजे रे, पछे आपणा नियम संभाल रे..धोबीडा. 5
रखे मूकतो मन मोकलुं रे, पडमेलीने संकेल रे
समयसुंदरनी शीखडी रे, सुखडी अमृतवेल रे... ....धोबीडा. 6

37. स्वार्थी संसार

सगुं तारुं कोण साचुं रे, संसारीआमां सगुं.
पापनो तो नाख्यो पायो, धरममां तुं नहि धायो,
डाह्यो थइने तुं दबायो रे संसारीआमां, ... सगुं.।।1।।
कुडुं कुडुं हेत कीधुं, तेने सांचुं मानी लीधुं,
अंतकाळे दुःख दीधुं रे संसारीआमां, ... सगुं.।।2।।
विसवासे वहाला कीधा, पीयाला झेरनां पीधा,
प्रभुने विसारी दीधा रे संसारीआमां ..... सगुं.।।3।।
मनगमतामां महाल्यो, चोरने मारग चाल्यो,
पापीओनो संग झाल्यो रे संसारीआमां, ... सगुं.।।4।।
मुखे बोल्यो मीठी वाणी, धन कीधुं धुळधाणी,
जीती बाजी गयो हारी रे, संसारीआमां, ... सगुं.।।5।।
घरने धंधे घेरी लीधो, कामिनीये वस कीधो,
ऋषभदास कहे दगो दीधो रे संसारीआमां, ... सगुं.।।6।।

38. वैराग्य की सज्झाय

उंचा ते मंदिर माळीया, सोड वालीने सूतो,
काढो काढो रे एने सहु कहे, जाणे जन्म्यो ज नहोतो,
एक रे दिवस एवो आवशे.....।।1।।

अबुधपणा मां हुं रह्यो, मन सबळो जी साले.
मंत्री मळ्या सवि कारमां, तेनुं कांइ नवि चाले..... एक.।।2।।

साव सोनाना रे सांकला, पहेरण नव नवा वाघा,
धोलु रे वस्त्र एना कर्मनुं, ते तो शोधवा लाग्या..... एक. ।।3।।

चरु कढाइयां अति घणा, बीजानुं नहि लेखुं,
खोखरी हांडी एना कर्मनी, ते तो आगळ देखुं.... एक. ।।4।।

केना छोरुं ने केना वाछरुं, कोना मायने बाप,
अंतकाले जावुं जीवने एकलुं, साथे पुण्य ने पाप..... एक. ।।5।।

सगी रे नारी एनी कामिनी, उभी टगमग जुवे,
तेनुं पण कांइ चाले नहीं, बेठी धुसके रुवे..... एक. ।।6।।

व्हालां ते व्हालां शुं करो ? व्हालां वोळावी वळशे,
व्हालां ते वनना लाकडा, ते तो साथे ज बळशे..... एक. ।।7।।

नहीं त्रापो नहीं तुंबडी, नथी तरवानो आरो,
उदयरत्न प्रभु इम भणे, मने पार उतारो..... एक. ।।8।।

39. उपदेश की सज्झाय

आतमध्यानथी रे, संतो सदा स्वरुपे रहेवुं
कर्माधीन छे सहु संसारी, कोइने कांइ न कहेवुं.....आतम. ।।1।।

कोई जन नाचे, कोई जन खेले, कोई जन युद्ध करंता,
कोई जन जन्मे, कोइ जन रुवे, देशाटन कोइ करता आतम. ।।2।।

वेलु पीली तेलनी आशा, मूरख जन मन राखे,
बावलीओ वावीने केरी, आंबा रस शुं चाखे, ...आतम. ।।3।।

रागीथी तो राग न कीजे, द्वेषीथी नहि द्वेष,
समभावे सहु जीव ने गणीए, तो शिवसुख नो लेश, आतम. ।।4।।
झूठी जगनी पुद्गलबाजी, त्यां नवि रहिए राजी,
तन धन जोबन साथ न आवे, न आवे मात पिताजी. आतम. ।।5।।
लक्ष्मी सत्ताथी शुं थाये, जोजो मनमां विचारी,
एक दिन छोडी जाउ आ, दुनियाँ सहु विसारी. ....आतम. ।।6।।
भल भला पण उठी चाल्या, जोने केइक चाले,
बिलाडीनी दोटे चडीयो, उंदरडो शुं महाले. .....आतम. ।।7।।
कालझपाटा सहुने वागे, योगीजन झट जागे,
चिदानंदघन आतम अर्थी, रहेजो सौ वैरागे. .....आतम. ।।8।।

40. जग सपनेकी माया

जग सपनेकी माया रे, नर ! जग सपने की माया,
सपने राज पाया कोई रंक ज्युं, करत काज मन भाया,
उघडत नयन हाथ देख खप्पर, मनहु मन पछताया रे, नर. ।।1।।
चपला चमकार जिम चंचल, नरभव सूत्र बताया,
अंजलि जल सम जगपति जिनवर, आयु अथिर दरसाया रे. नर. ।।2।।
यौवन संध्या राग रुप फुनि, मल मलिन अति काया,
विणसत जास विलंबन रंचक, जिम तरुवर की छाया रे, नर ।।3।।
सरिता वेग समान ज्युं संपत्ति, स्वारथ सुत मित जाया,
आमिष लुब्ध मीन जिम तिम संग, मोहजाल बंधाया रे, नर. ।।4।।
ए संसार असार सार पण, या में इतना पाया,
चिदानंद प्रभु सुमरन सेति, धरिये नेह सवाया रे, ...नर ।।5।।

41. वैराग्य

मानमां, मानमां, मानमां रे, जीव मारुं करीने मानमां,
अंतकाळे तो सर्व मूकीने, ठरवुं छे जइ श्मशानमां रे, जीव. ।।1।।
वैभव विलासी पाप करो छो, मरी तिर्यंच थाशो रानमां रे, जीव. ।।2।।
रागना रंगमां भूला भमो छो, पडशो चोराशीनी खाणमां रे. जीव ।।3।।
जगतमां तारुं कोई नथी रे, मन राखने भगवानमां रे, . जीव ।।4।।
वृद्धावस्था आवशे त्यारे, धाको पडशे त्हारा कानमां रे,जीव. ।।5।।
कोक दिन जानमां तो कोक दिन काणमां,मिथ्या फरे अभिमानमा रे जीव. ।।6।।
कोक दिन सुखमां तो कोक दिन दुःखमां, सघळा ते दिन सरखा जाणमां रे, जीव. ।।7।।
सुत वित्त दारा पुत्री ने भृत्यो, अंते ते तारा जाणमां रे, जीव. ।।8।।
आयु अथिरने धन चपल छे, फोगट मोह्यो तेना तानमां रे, जीव. ।।9।।
छेल बटुक थइ शाने फरो छो, अधिक गुमान मान तानमां रे, जीव. ।।10।।
मुनि केवल कहे सुणो सज्जन सहु, चित्त राखजो प्रभु ध्यानमां रे, जीव. ।।11।।

42. अनित्य भावना

तन धन जोबन कारमुं जी, कोना मात ने तात ।
कोना मंदिर मालीयांजी, जेहवी स्वप्ननी वात ।।
सोभागी श्रावक ! सांभलो धर्म सज्झाय ..... ।।1।।
फोगट फांफां मारवा जी, अंते सगुं नहीं कोई ।
घेवर जमाइ खाई गयोजी, कुटाइ गयो कंदोई, सौभागी. ।।2।।
पाप अढारे सेवीने जी, लावे पैसो एक ।
पापना भागी को नहीं जी, खावावाला छे अनेक, ...सौभागी. ।।3।।

जीवतां जस लीधो नहीं जी, मुआ पछी शी वात ?
चार घडीनुं चांदरणुं जी, पछी अंधारी रात, ..सौभागी. ।।4।।
धन्य ते मोटा श्रावको जी, आनंद ने कामदेव ।
घरनो बोझो छोडीने जी, वीर प्रभुनी करे सेव, ...सौभागी. ।।5।।
बाप दादा चाल्या गया जी, पुरा थया नहीं काम ।
करवी दैवनी वेठडीजी, शेखचिल्लीना परिणाम,सौभागी. ।।6।।
जो समझो तो शानमांजी, सद्गुरु आपे छे ज्ञान,
जो सुख चाहो मोक्षनाजी, **धर्मरत्न** करो ध्यान.....सौभागी. ।।7।।

43. आत्मा

क्यां तन मांजता रे ! एक दिन मिट्टी में मिल जाना,
मिट्टीमें मिल जाना बंदे, खाख में खप जाना. .....क्यां. ।।1।।
मिटिया चुन चुन महल बंधाया, बंदा कहे घर मेरा,
एक दिन बंदे उठ चलेंगे, यह घर तेरा न मेरा. ..क्यां. ।।2।।
मिटिया ओढण मीटीया बीछावण, मिट्टी का सीराना,
इस मिटीया का एक भूत बनाया, अमर जन लुभाना. .क्यां. ।।3।।
मिटीया कहे कुंभारने रे, तुं क्यां खुंदे मोय,
एक दिन ऐसा आवेगा प्यारे, में खुंदूंगी तोय .....क्यां. ।।4।।
लकडी कहे सुथारने रे, तुं क्या छोले मोय,
एक दिन ऐसा आवेगा प्यारे, में भुंजुंगी तोय. .....क्यां. ।।5।।
दान शीयल तप भावना रे, शिवपुर मारग चार,
आनंदघन कहे चेतले प्यारे, आखिर जाना गमार. क्यां. ।।6।।

44. आप स्वभाव

आप स्वभावमां रे, अवधु सदा मगन में रहना,
जगत जीव है कर्माधीना, अचरिज कछुअ न लीना. ...आप. ।।1।।

तुं नहि केरा कोई नहि तेरा, क्या करे मेरा मेरा,
तेरा है सो तेरी पासे, अवर सब अनेरा. .....आप. ।।2।।

वपु विनाशी तुं अविनाशी, अब है इनका विलासी,
वपु संग जब दूर निकासी, तब तुम शिव का वासी. ...आप. ।।3।।

राग ने रीसा दोय खवीसा, ए तुम दुःख का दीसा,
जब तुम उनकुं दूर करीसा, तब तुम जग का ईसा.आप. ।।4।।

परकी आशा सदा निराशा, ए है जग जन पाशा,
वो काटननुं करो अभ्यासा, लहो सदा सुखवासा. .....आप. ।।5।।

कबहीक काजी कबहीक पाजी, कबहीक हुआ अपभ्राजी ।
कबहीक जग में कीर्ति गाजी, सब पुद्गल की बाजी,आप. ।।6।।

शुद्ध उपयोग ने समता धारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी,
कर्म कलंककुं दूर निवारी, **जीव** वरे शिव नारी, ...आप. ।।7।।

45. मोह से तेरा कमाया

मोह से तेरा कमाया, धन यही रह जाएगा,
प्रेम से अति पुष्ट किया, तन जलाया जाएगा .....मोह. ।।1।।

प्रभु भजन की भावना बिन, परलोक में क्या पाएगा,
कुछ कमाइ यहां न कीनी, खाली हाथे जाएगा, ..मोह. ।।2।।

जन्म मानव का अपूरव, पाके कर जग का भला,
मत गला घोटो किसी का, जीवन यह उड जाएगा, ... मोह. ।।3।।

झूठ छोडो चोरी छोडो, छोड दो परदार को,
माया ममता को तजो तब, मुक्त हो झट जाएगा, मोह. ।।4।।

तन फना है धन फना है, स्थिर कोई जग में नही,
प्राण प्यारा पुत्र दारा, सब यहां रह जाएगा ..... मोह. ।।5।।

ज्ञान धर ले ध्यान धर ले, चरण में कर ले रुचि,
चपल जग की सब ही बाजी, छीनक में उड जाएगी, मोह. ।।6।।

मात नहीं है तात नहीं हैं, सुत नही तेरा सगा,
स्वार्थ से सब अपने होते, अंत में देते दगा, ... मोह. ।।7।।

मोह से क्यों मर रहा है, ध्यान से कर तन सफा,
तप करी ले जप करी लो, भजन कर ले लो नफा,मोह. ।।8।।

एकला यहां पे तुं आया, एकला ही जायगा,
क्यों बूरे तुं कर्म करता, नरक में दुःख पायगा, ... मोह. ।।9।।

वीर जिन उपदेश देते, जो यह दिल में ठायगा,
आत्म कमले **लब्धि** लीला, जल्दी वो नर पायगा मोह. ।।10।।

46. एक भूपाल है

(राग सिद्धाचलना वासी...)

एक भूपाल है, एक कंगाल है, क्या बताये ।
अपनी करणी के सब फल पाए ..... क्या. ।।1।।

एक खाता मिठाई बंगाली, एक घर घर पे खाए गाली,
जैसी करणी करे, वैसी भरणी भरे ..... क्या. ।।2।।

एक फूलों की शय्या में सोता, एक टाट बिछाकर रोता,
एक मोज करे एक हा हा करे ..... क्या. ।।3।।

एक राजा की रानी बनी हैं, एक वन में तानी खडी है
झाडु देती फिरे, गलिया साफ करे ..... क्या. ।।4।।

एक करता मोटर की सवारी, एक घर घर पे फिरता भिखारी,
जैसा कर्म करे, वैसा जीवन तरे ..... क्या. ।।5।।

एक शेठाणी बनकर बोले, एक घर घर फिरती डोले,
टुकडा दे दो कहे, नयणे नीर वहे, ... क्या. ।।6।।

माणेक विजय युं कहेता देखो, कर्म का चाल है कैसा,
कर्म आठ कापो, संसार पार करो, ... क्या. ।।7।।

47. सुणो चेतनजी !

(राग - सुणो चंदाजी)

सुणो चेतनजी ! आतम ज्ञान विना सवि वातो खोटी,
नहि ज्ञान थकी कोई चीज मोटी, ... सुणो. ।।1।।

तारुं क्षण क्षण आयुष्य तूटे छे, तारुं अंतर धन मोह लूंटे छे,
तारुं अमृत भाजन फूटे छे, ... सुणो. ।।2।।

फस्यो आठ करमना फंदामां, पड्यो तेथी गंदा धंधामां,
तारी धर्म नीति मली चंदामां ..... सुणो. ।।3।।

तें कामे व्रतपणुं वाम्युं, तारुं दील दुराचारे जाम्युं,
तारुं ज्ञान बधु तेमां वाम्युं ..... सुणो. ।।4।।

जग माया क्षण क्षण नासे छे, तुं चित्रडं त्यां केम वासे छे,
जो ज्ञाने ए बधु भासे छे ..... सुणो. ।।5।।

खरुं आतम ज्ञान जिणंद भाखे, गुरु मुख कमले ग्रही दिल हरखे,
रस आतम **लब्धि** तणो चाखे, ... सुणो. ।।6।।

48. एकत्व भावना

जगतमां एकलो आतम, आवे छे ने वली जावे,
नथी कोई साथ करवानुं, सुंदर ए भावना भावो. ..... ।।1।।

करे जीव एकला भोगो, सहे छे एकला रोगो,
एकाकी जाय परलोके, सुंदर ए भावना भावो. ..... ।।2।।

रहे छे कोइ अतिक्रूरो, महापापे बने बूरो,
स्वयं दुःख भोग सहवानो, सुंदर ए भावना भावो. ..... ।।3।।

नरकना दुःख ए सहेतो, कदी निगोदमां रहेतो,
सगु नही सहायता आपे, सुंदर ए भावना भावो. ..... ।।4।।

करे कर्मो नथी डरतो, पछी दुःखो पडे रडतो,
बचावो हाय ! हुं मरतो, सुंदर ए भावना भावो ..... ।।5।।

बधा छे सुखना बेली, दुःखोमां हा मूके ठेली,
केवी ए कर्मनी केली, सुंदर ए भावना भावो. ..... ।।6।।

न करशे कोइ बुरा कर्मो, कर्म नथी राखता शरमो,
धणी या रंक राजानी, सुंदर ए भावना भावो. ..... ।।7।।

एकीलो हुं न कोइ मारुं, न संबंध कोइ नो धारुं,
विचारो एम वदो सारुं, सुंदर ए भावना भावो. ..... ।।8।।

एकत्व भावना भावे, कमल जेम चित्त विकसावे,
बने नहीं दीन ए क्यारे, सुंदर ए भावना भावो ..... ।।9।।

प्रभु महावीर जी भाखे, उरे ए भावना राखे,
वसे छे आत्म **लब्धि** त्यां, सुंदर ए भावना भावो. ..... ।।10।।

49. बेर बेर नहीं आवे

बेर बेर नहि आवे अवसर, बेर बेर नहि आवे,
ज्युं जाणे तुं कर ले भलाइ, जनम जनम सुख पावे... अव. ।।1।।
तन धन यौवन सब ही झूठा, प्राण पलक में जावे..... अव. ।।2।।
तन छूटे धन कौन काम कुं, काहे कुं कृपण कहावे. .... अव. ।।3।।
जाके दिलमें साच बसत है, ताकुं झूठ न भावे ..... अव. ।।4।।
'आनंदघन' प्रभु चलत पंथ में, समर समर गुण गावे, अव. ।।5।।

50. आशा औरन की क्या कीजे ?

आशा औरन की क्या कीजे, ज्ञान सुधारस पीजे,
भटके द्वार द्वार लोकन के, कूकर आशा धारी,
आतम अनुभव रस के रसिया, उतरे न कब हुं खुमारीआशा. ।।1।।
आशा दासी के जे जाया, ते जन जग के दासा,
आशा दासी करे जे नायक, लायक अनुभव प्यासाआश. ।।2।।
मनसा प्याला प्रेम मसाला, ब्रह्म अग्नि पर जाली,
तन भाठी अवटाइ पीए कस, जागे अनुभव ताली ....आश. ।।3।।
अगम पीआला पीओ मतवाला, चिन्ही अध्यातम वासा,
आनंदघन चेतन वे खेले, देखे लोक तमासा .. आशा. ।।4।।

51. हुं तो नटवो थइ ने

हुं तो नटवो थइ ने नाटक एवा, नाच्यो हो, जिनवरीया
पहेलो नाच्यो पेटमां, माताना बहुवार,
घोर अंधारी कोटडीमां, कोण सुणे पोकार,
ज्यां माथु नीचे ने, छाती ऊंची हो जिनवरीया .....हुं. ।।1।।
हाड मांसनो पिंजरो, ऊपर मढ्यो चाम,
मल मूत्रमांहे भर्यो, मान्यो सुखनो धाम,
त्यां नव नव महिना, उंधे माथे लटक्यो हो, जिनवरीया हुं. ।।2।।
ऊंठ क्रोड रोम रोममां, करी धगधगती सोय,
सोइ भोंके जो सामटी, कष्ट अष्टगणुं होय,
पछी माता ने ते जमना द्वार देखाड्या हो, जिनवरीया. . हुं. ।।3।।
बांधी मुठी दोयमां, लाव्यो पुण्य ने पाप,
उंवा उंवा करी हुं रडुं, जगमां हर्ष न माय,
पछी परदामांथी रंग भूमिमां, आव्यो हो, जिनवरीया हुं. ।।4।।
पारणीयांमां पोढीयो, माता हालो गाय,
खरडायो मल मूत्रमां अंगुली मुखमां जाय,
पछी भीनामांथी सूकामां, सुवडाव्यो हो, जिनवरीया .....हुं. ।।5।।
छोटानो मोटो थयो, रमतो धूली मांय,
पिताए परणाव्यो, माता हरख न माय,
पछी नारी नो नचाव्यो, थेइ थेइ नाच्यो हो, जिनवरीया हुं. ।।6।।
कुटुंब चिंता कारमी, चूंट कलेजा खाय,
एथी तो भली डाकणी, मनडुं मांहि मुंझाय,
पछी कोशीटानो कीडो, जाल गुंथायो हो, जिनवरीया ...हुं. ।।7।।

दाढो ने दांतो पड्या, नीचा ढलीया नेण,
गालोनी लाली गइ, खुं खुं थइ गइ रेण,
पछी डोशो थइने, डगमग डगमग चाल्यो हो, जिनवरीया हुं. ।।8।।
चार गति चोगानमां, नाच्यो नाच अपार,
न्यायसागर नाच्यो नहि, रत्नत्रयी ने द्वार,
पण कुमतिनो भरमाव्यो, कांइ नवि समज्यों हो, जिनवरीया हुं. ।।9।।

52. नरजन्म सुंदर....

नर जन्म सुंदर पुण्यथी, पामी वृथा खोशो नहीं,
हे वीरपुत्रो ! धर्म करतां, दुःख ने जोशो नहीं,
परवशे ते नरक केरा, दुःख लीधा बहु सही,
देव गुरु धर्म सेवा, प्रेमथी चूंको नहीं .....नर. ।।1।।
नल प्रिया दमयंती देखो, दुःखथी दाझी गई,
कुड कर्मना प्रतापे, अंजना दुःखी थई,
सीता वियोगे रामना, रावण घरे सुकाइ गई,
कर्मना ए विकट भावो, धर्मथी वारो सही .....नर. ।।2।।
वीर प्रभुना काने खिल्ला, कर्म लीला ए कही,
चंडालने त्या हरीशचंद्रे, कर्मथी पाणी वही,
द्रौपदी सती कर्मथी, पति पंच तो पामी सही,
वीर केरो धर्म पाली, कर्मने देजो दही, ...नर. ।।3।।
हाट हवेली हेम हीरा, अहीं बधु ए रही जशे,
काची काया कुंपल जेवी, पलकमां करमाइ जशे,
धर्महीन ओ जीवडा, परलोक जातां शुं थशे ?
तात ने वली मात भ्राता, कुटुंब सहुं अहीं रही जशे.नर. ।।4।।

धन्य हो खंधक मुनिने, शरीरनी परवाह नहीं,
आकरा तप तेह तपता, खड खडे हाडो सही,
खेर अंगारे भरी सगडी, मुकी निज सिर परे,
धन्य हो गजसुकुमार मुनिवर, चिकना कर्मो हरे, ...नर. ।।5।।

एक एक प्रदेशमां, अनंत जन्म मरणो वह्यां,
एक श्वासोश्वासमां, हा सत्तर अधिक मरणो सह्या,
अमूल्य वचनो वीर केरा, सांभळी बुझो नहीं,
गहन गति आ कर्मनी, धर्म तो सुझ्यो नही, ...नर. ।।6।।

धर्म श्री जिनराज केरो, मेलव्यो शुभ भाग्यथी,
केलवो संयम स्वभावे, चरण चालो भावथी,
सुखडा रुडा छे मुक्ति केरो, ए चहो भावे चाहथी,
आत्म कमले लब्धि लेवा, दूर रहो भव दाहथी, ...नर. ।।7।।

53. मति तूं केम बगाडे ?

ओ जीवडा रे तारी मति तूं केम बगाडे ?
नहीं धर्म प्रेम लगाडे, तारी काल घूघरी वागे, ...ओ. ।।1।।

ओ जीवडा रे तूं नरक निगोदे वसीयो, तने क्रोध सांपे डंसियो,
नहीं धर्म ध्यानमां वसीयो, तारी.....ओ. ।।2।।

ओ जीवडा रे तूं विषयारस ने पीतो, प्रभु आगमथी नही बीतो,
तने लागशे कर्म पलितो, तारी.....ओ. ।।3।।

ओ जीवडा रे तमे मोहनींद मां सूता, दुःख रुप पडे सिर जुत्ता,
तूं बने विषयना कुत्ता, तारी. .....ओ. ।।4।।

ओ जीवडा रे ए देह मुसाफिर खाना, एक दिन थवुं छे रवाना,
तूं समजी ले ने शाना, तारी. .....ओ. ।।5।।

ओ जीवडा रे तारुं क्षण क्षण आयु तूंटे, मारो आतम धन मोह लूंटे,
अणधार्या प्राण ते छूटे, तारी. .....ओ. ।।6।।

ओ जीवडा रे तूं मारुं मारुं करी माने, तारुं भान नहीं ठेकाणे,
गफलतमां राचे शां ने ? तारी. .....नर. ।।7।।

ओ जीवडा रे, तारा श्वास आवे ने जावे, परलोकनी वाट बतावे,
धण कण कंचन रही जावे, तारी. .....नर. ।।8।।

ओ जीवडा रे, जोता जोता केई चलिया, जइ मशानमांही मलिया,
थया राख आगथी बलिया, तारी. .....नर. ।।9।।

ओ जीवडा रे, तूं जाग लाग प्रभु धरमे, न पड तूं खोटा करमे,
कूटाता ना हक भरमे, तारी. ..... नर. ।।10।।

ओ जीवडा रे, जो आत्म कमलमां रमशो, तो चोरासी नहि भमशो,
लब्धि शिव सुखडा वरशो, तारी. .....नर. ।।11।।

54. वणझारा

वणझारो धुतारो कामणगारो, सुंदर वर काया छोड चाल्यो वणझारो,
वणझारो धुतारो-कामणगारो, एनी देहलडीने छोड चाल्यो वणझारो. ।।1।।

एणी रे कायामें प्रभुजी ! पांच पणियारी,
पाणी भरे छे न्यारी न्यारी ..... सुंदर वर. ।।2।।

एणी रे काया में, प्रभुजी ! सात समुद्र,
तेनुं नीर छे, खारो मीठो ..... सुंदर वर. ।।3।।

एणी रे कायामें प्रभुजी ! नवसें वावडीयो,
तेनो स्वभाव छे न्यारो न्यारो ..... सुंदर वर. ।।4।।

एणी रे कायामें प्रभुजी ! पांच रतनीया,
परखे परखण हारो ..... सुंदर वर. ।।5।।

खुट गयुं तेल ने बुझ गइ बतियां,
मंदिरमें पड गयो अंधेरो ..... सुंदर वर. ।।6।।

खस गयो थंभो ने पड गइ देहीयां,
मिट्टीमे मील गयो गारों ..... सुंदर वर. ।।7।।

आनंदघन कहे सुन भाइ साधु,
आवागमन निवारो ..... सुंदर वर. ।।8।।

55. तुं चेत मुसाफीर चेत जरा...

(राग - भारतका डंका आलम में)

तुं चेत मुसाफीर चेत जरा, क्यों मानत मेरा मेरा है ?
इस जगमें नहिं कोई तेरा है, जो है सो सभी अनेरा है ।
स्वारथकी दुनिया भूल गया, क्यों मानत मेरा मेरा हैं? ..तुं. ।।1।।

कुछ दिन का जहाँ बसेरा है, नहीं शाश्वत तेरा डेरा है ।
कर्मो का खूब यहाँ घेरा है, क्यों मानत मेरा मेरा है ? तुं. ।।2।।

ए काया नश्वर तेरी है, एक दिन वो राख की ढेरी है,
जहाँ मोह का खूब अंधेरा है, क्यों मानत मेरा मेरा हैं ? .तुं. ।।3।।

बुरी ए दुनियादारी है, दुःख जन्म मरण की क्यारी है,
दुःखदायक भक्तका फेरा है, क्यों मानत मेरा मेरा है ? तुं. ।।4।।

गति चार की नदियाँ जारी है, भवसागर बडा ही भारी है ।
ममता वश वहाँ बसेरा है, क्यों मानत मेरा मेरा हैं ? ...तुं. ।।5।।
मन आत्म कमल में जोड लिया, **लब्धि** माया को छोड दिया,
गुण मस्तक संजम शेरा हैं, क्यों मानत मेरा मेरा है ? तुं.।।6।।

56. कहां करुं मंदिर...

कहां करुं मंदिर कहां करुं डमरा, न जाणुं कहां उड बेठेगा भमरा
जोरी जोरी गये छोरी दुमाला, उड गया पंखी पड रह्या माला .कहा .1
पवनकी गठरी कैसे ठराऊं, घर न बसत आय बेठे बटाउ
अग्नि बुझानी काहेकी माला, दीप छीपे तब कैसे उजाला .कहा .2
चित्र के तरुवर कबहु न मोरे, माटीका घोरा के'तेक दोरे
धुएं की डेरी तुरका थंभा, उहां खेले हंसा देखो अचंबा... कहा. 3
फिर फिर आलत जात उसासा लापरे तारेका कया विसवासा
आ दुनियाकी जूठी हे यारी, जैसी बनाई बाजीगर बारी... कहा. 4
परमातम अविचल अविनाशी, सोहे शुद्ध परम पदवासी
विनय कहे सो साहिब मेरा, फिर न करुं आ दुनियामें फेरा...कहा. 5

57. आव्यो त्यारे मुठी...

आव्यो त्यारे मुठी वाली, जाती वेला खाली रे;
जीवडा...! समय सुधार,...
बहु फाल्यो बहु फुल्यो, अंते देशे बाली रे. ..... जी. 1
उहां उहां तुं तो करतो, जनमतां ते वारे रे,
सघलुं ते रही गयुं, प्रभुने दरबारे रे. ..... जी. 2

आव्यो त्यारे साकर वहेंची, हरख न माय रे;
जाती वेला रोवा लाग्या, करे हाय हाय रे. ..... जी. 3

आव्यो त्यारे पहेरवाना, खावाना अपार रे;
जाती वेला तारुं बधुं, लूंटी लेवाय रे. ..... जी. 4

आव्यो त्यारे पारणामां, झुलावे अपार रे;
जाती वेला वांस लावशे, साडा त्रण हाथ रे. ..... जी. 5

जीववुं टुंकुं जगतमां, आशा बहु लंबाय रे;
रात थोडी वेश झाझा, वखत वही जाय रे. ..... जी. 6

खाशे ते तो धराशे ने, बाकी भूख्या जाशे रे;
माटे भजी लेने प्रभु तुं, थाय बेडो पार रे. ..... जी. 7

मोह माया छोडी भज, निरागी प्रभु आज रे;
धर्म केरो संग करी, छोडी दे तुं काज रे. ..... जी. 8

मारुं तारुं छोडी देने, करी ले भलाई रे;
उदयरत्न कहे भला, साधी ले तुं काज रे. ..... जी. 9

58. अहिंसा धर्मका डंका

अहिंसा धर्मका डंका, बजा ले जिसका जी चाहे;
जीवनका क्या भरोंसा है, जगत गफलत का डेरा है. . अहिंसा. 1

बडे बडे वीर महाराजा, चल गये छोड साम्राज्य;
नगारा मोतका बजतां, हुकम के साथ जाना है. .. अहिंसा. 2

गये सब पीर ओर काजी, पहलवान शेठ बाबाजी;
करंता मोत को राजी, जमी अंदर समाना है..... अहिंसा. 3

जिन्होंका केश था काला, जो खूशबु तेल लगाता था;
आखिर सब कर्मे जलता, करे फोगट गुमाना है... अहिंसा. 4

जिन्हों शिर शोभते चीरे, चावते पानके बीरे;
तिन्हों को खा गये कीडे, तुं होता क्यों दिवाना है. .... अहिंसा. 5

कहत **क्षांति** समज प्यारा, चलेंगे छोड परिवारा;
लगावो ध्यान जिनवर का, जो चाहो सुख कमाना है. अहिंसा. 6

59. नाव में नदियां

(राग समरो मंत्र भलो)

नावमां नदियां डूबी जाय, मुज मन अचरिज थाय,
नावमां नदिया डूबी जाय.
कीडी चाली सासरे में, सो मण चूरमो साथ,
हाथी धरीयो गोदमें, ऊंट लपेट्यो जाय... ..... नाव. 1

कच्चा इंडा बोलतां, बच्चा बोले नाय,
षड्दर्शन में संशय पडीयो, तो ज मुक्ति मील जाय... .. नाव. 2

एक अचंबो एसो देख्यो, मछली चावे पान,
उंट बजावे बांसरी ने, मेंढक जोडे ताल... ..... नाव. 3

एक अचंबो ऐसो दीठो, मडदो रोटी खाय,
मुखसे बोले नहिं, डगडग हसतो जाय..... नाव. 4

बेटी बोले बापने, विण जायो वर लाय,
विण जायो वर ना मिले तो, मुज शुं फेरा खाय... .. नाव. 5

सासु कुंवारी बहु परणेली नणदल फेरा खाय,
देखणवाली हुलर जायो, पाडोसण हुलराय..... नाव. 6

एक अचंबो ऐसो दीठो, कूवामां लागी आग,
कचरो करवट सबही बळ गयो, पण घट भरभर जाय .... नाव. 7

आनंदघन कहे सुण भाई साधु, ए पदसे निरवाण,
इस पदका कोई अर्थ करेंगा, शीघ्र होवे कल्याण,
नावमें नदीयां डूबी जाय...नाव. 8

60. खबर नहीं आ जगमां

खबर नहीं आ जगमें पलकी,
सुकृत करनां होय सो करले, कोण जाणे कलकी;
आ दोस्ती हे जगत वासकी, काया मंडलकी,
सास उसास समर ले साहिब, आयु घटे पलकी. .....खबर. 1

तारा मंडल रवि चंद्रमा, सब हे चलने की,
दिवस चारका चमत्कार, ज्युं वीजली आभलकी. ...खबर. 2

कुड कपट कर माया जोडी, करी बांतां छलकी,
पापकी पोटली बांधी शीर पर, कैसे होय हलकी. .....खबर. 3

या जग हे सुपनेकी माया, जैसे बुंद जलकी,
विणसंता तो वार न लागे, दुनिया जाय खलकी. ...खबर. 4

मात तात प्रिया सुत बांधव, सब जग मतलबकी,
काया माया नार हवेली, अे तेरी कबकी. .....खबर. 5

मन मानव तन चंचल हस्ती, मस्ती हे बलकी,
सद्गुरु अंकुश धरो शीरपर, चलो मार्ग सतकी. .....खबर. 6

जब लग हंसा रहे देहमें, खुशीयां मंगलकी,
हंसा छोड चल्या जब देही, मिटीया जंगलकी .....खबर. 7

पर उपकार समो नही सुकृत, घर समतां सुखकी,
पाप वली पर प्राणी पीडन, हर हिंसा दुःखकी, ...खबर. 8

कोई गोरा कोई काला पीला, नयणे निरखनकी,
ए देखी मत राचो प्राणी, रचना पुद्गलकी. .....खबर. 9

अनुभव ज्ञाने आतम बूझी, कर बाता घरकी,
अमरपद अरिहंतकुं ध्यायां, पदवी अविचलकी.....खबर. 10

61. केना रे सगपण

केना रे सगपण केनी रे माया, जीव रह्यो छे लोभाई रे;
अथिर संसारमां कोई नथी तारुं, साची धर्म सगाई रे. ...केना. 1

श्रेणिकरायने पिंजरे पूर्यो, कोणीके राज्य लोभाई रे;
पुत्र पिताने अति दुःख दीधुं, क्यां गई पुत्र सगाई रे ? केना. 2

भरत बाहुबली राज्यने माटे, मांडी मोटी लडाई रे;
चक्र मूक्युं निज भाईनी उपर, क्यां गई भ्रातृ सगाई रे? . केना. 3

मयणरेहा वशे मोह्यो मणिरथ, मार्यो युगबाहु भाई रे;
विषय-कषायमां मस्त बनीने, क्यां गई भ्रातृ सगाई रे ? केना. 4

बाह्मणी निज पुत्रने वेचे, धनने अर्थे लोभाई रे;
अमरकुमारने मारण काजे, क्यां गई पुत्र सगाई रे ? .... केना. 5

सूरीकान्ताओ परदेशीने मार्यो, गले अंगुठो दबाई रे;
रायपसेणीमां भगवंते भाख्युं, क्यां गई पत्नी सगाई रे ? केना.6

शेठाणी निज शेठने नांखे, ऊंडा कूवानी मांही रे;
कर्म तणी जो जो विचित्रता, क्यां गई पत्नी सगाई रे ? ..केना. 7

चुलणी माता निज पुत्रने बाळे, लाखनुं घर बनाई रे;
विषयमां अति लंपट थईने, क्यां गई मातृसगाई रे ? केना. 8

केनी रे माता ने केना रे पिता, केना भाई भोजाई रे;
विनयविजय पंडित अेम बोले, साची धर्मसगाई रे. .....केना. 9

62. तारुं धन रे जोबन

तारुं धन रे जोबन धूल थाशे रे, कंचन जेवी काया राखमां रोलाशे;
पेट पीडा ने काया कलतर, जीवता केम जोवाशे,
कल उपडशे ने मुंझारो थाशे पछी, कडवाऔषध कुण पाशे रे. तारुं. 1

वैद्य तेडावशे ने वैदुं करावशे, ने तारी नाडीओ झलावशे;
तुटी अेनी बुटी नहि, तारा नाकनी दांडी मरडाशे रे. तारुं. 2

दश दरवाजा तारा बंध थई जशे, ने अति आतुरता वधशे;
आंख फरकशे ने अकलामण थाशे, जीभलडी तारी झलाशे रे.तारु. 3

जेना विना अेक घडी न चालतुं, ते तारी प्रिया रंडाशे;
भवोभवना छेटा पडशे तमारे, तारा नामनी चुडीओ भंगाशे रे. तारुं. 4

खोखरी हांडलीमां आग जलावशे ने, स्मशाने लाकडा नाखशे;
सगा कुटुंब मली सलगावी देशे, पछी बहारना कागल लखाशे रे. तारुं. 5

दश दा'डा पछी सूतक काढशे, माथुं ने मूंछ मुंडावशे;
सारी पेठे तारुं सुतक काढी, पछी बारमानी सुखडी खाशे रे.तारुं. 6

दया धर्म ने भक्ति विना तारुं, धन ने राज लुंटाशे;
ज्ञानविमल कहे प्रभु भजन विण, मोटा मोटा लुंटाशे रे. ...तारुं. 7

63. जगत है स्वार्थ

जगत हे स्वार्थका साथी, समझ ले कौन है अपना ?
वे काया काचका कुंभा, नाहक तुं देखके फुलता,
पलक में फूट जावेगा, पता ज्युं डालसे गिरता, ...जगत. 1
मनुष्यकी अेसी जींदगानी, अभी तुं चेत अभिमानी;
जीवनका क्यां भरोसा है, करी ले धर्म की करणी. ..जगत. 2
खजाना माल ने मंदिर, तुं क्युं कहेता मेरा मेरा तुं ?
इहां सब छोड जाना है, न आवे साथ सब तेरा. .....जगत. 3
कुटुंब परिवार सुत दारा, सुपन सम देख जग सारा;
निकल जब हंस जावेगा, उसी दिन है सभी न्यारा. जगत. 4
तरे संसार सागर को, जपे जो नाम जिनवरको;
कहे **खान्ति** वही प्राणी, हठावे कर्म जंजीर को. .....जगत. 5

64. अरे किस्मत तुं घेलुं

(राग दयासिन्धु दयासिन्धु)

अरे किस्मत तुं घेलुं, हसावे तुं रडावे तुं;
घडी फंदे फसावीने, सतावे तुं रीबावे तुं.....अरे. 1
घडी आशामही वहे तुं, घडी अंते निराशा छे;
विविध रंगो बतावे तुं, हसे तेने रडावे तुं.....अरे. 2
कोईनी लाख आशाओ, घडीमां धुलधाणी थई;
पछी पाछी सजीवन थइ, रडेलाने हसावे तुं. .....अरे. 3
रही मशगुल अभिमाने, सदा मोटाई मन धरतां;
निडरने पण डरावे तुं, न धार्युं कोईनुं थातुं. .....अरे. 4

विकट रस्ता अरे तारा, अति गंभीर ने ऊंडा;
न तने कोई शके जाणी, अति तुं गूढ अभिमानी.....अरे. 5
सदाचारी ने संतोने, फसावे तुं रडावे तुं;
करे धार्युं अरे तारुं, बधी आलम फना कर तुं. .....अरे. 6
अरे आ नाव जिंदगीनुं, धर्युं में हाथ ए तारे;
डुबाडे तुं उगारे तुं, **शुभवीर**नी आवे व्हारे तुं. .....अरे. 7

65. हाथ से हीरो

(राग : भजन विना युंहि ही जनम गमायो)

हाथ से हीरो गमायो, धर्म विना हाथसे हीरो गमायो.
विषय कषायके पाश में पडके, जीव तुं बहोत मुंझायो .....धर्म. 1
जन्म मरणकी भारे विपत्तियां, अजान हो के फसायो .....धर्म. 2
सद्गुरु को तुंने संग न पायो, कुगुरु नाग डंसायो .....धर्म. 3
कुदेव और कुधर्म में पडके, आतम गुण तें नसायो .....धर्म. 4
शोच समज बूरी जग माया, त्याग में दिल न बसायो .....धर्म. 5
चार गतिकी भँवरमें भैयां, युंही क्यों नाव डुबायो .....धर्म. 6
आत्म कमलमें चरण प्रभावे, **लब्धिसूरि** सुख पायो .....धर्म. 7

66. थोडी तेरी जिंदगी

(राग गोरे गोरे मुख का गुमान छोड बावरे रंग)

थोडी तेरी जिंदगी है, क्यों तुं गुमाता है ?
जिंदगी में बंदगी तो, प्रभुजी का नाम है, थोडी तेरी. ..... ।।1।।
विषयों को छोड चार, जोड प्रभुजी से प्यार,
ज्ञानमें गुलतान हो जा, यही सुखधाम है, थोडी तेरी.. ।।2।।

जिसमें है फनाह तेरा, कहा भाई मान मेरा,
बिजली विकास जैसा, नहीं थिर ठाम है, थोडी तेरी..... ।।3।।

धन धान मान तान, क्षणमें विनाशी जाण,
डाभकी अणीपें लगे, बुंद ज्युं तमाम है, थोडी तेरी.... ।।4।।

भज भज जिनदेव, तज सब खोटी टेव,
शिवपुर धाममें फिर, तेरा तो मुकाम है, थोडी तेरी. ..... ।।5।।

कमलविकासी चहेरा, रहे हरदम तेरा,
आतम लब्धि जो लाभे, यही तेरा काम है, थोडी तेरी. ।।6।।

67. बनी मिट्टी की सबबाजी

(राग गझल ताल-धमाल)

बनी मिट्टी की सब बाजी, उसीमें होत क्यों राजी ?
मिट्टीका है शरीर तेरा, मिट्टीका कपडा पहेरा,
मिट्टीका म्हेल रहा छाजी, उसीमें होत क्यों राजी ? ...बनी ।।1।।

धरेणा मिट्टी का तेरा, है, मिट्टी का पलंग प्यारा,
तेरा मिट्टी का है वाजी, उसी में होत क्यों राजी ? .... ।।2।।

जगत में वस्तु है जो जो, मिट्टी में सब मिले वो वो,
इसी में क्यों बना पाजी, उसी में होत क्यों राजी ? ...बनी ।।3।।

दशा निज आत्म की शोधो, जगत माया से मन रोधो,
यही एक बात है ताजी, उसी में होत क्यों राजी ? बनी ।।4।।

कहे **लब्धि** सदा सेवो, जिनाधिराज शुद्ध देवो,
बनो शिवसुख के भाजी, उसी में होत क्यों राजी ? ...बनी ।।5।।

68. कुरगडु मुनि की सज्झाय

उपशम आणो उपशम आणो, उपशम तपमांही राणो रे. उ.
विण उपशम जिन धर्म न शोभे, जिम जग नरवर काणो रे. उ. ।।1।।

तुरमिणी नयरी कुंभ नरेसर, राज करे तिहां सूरो रे,
तस नंदन ललितांग महामति, गुण मणि मंडित पूरो रे, उ. ।।2।।

सुगुरुतणी वर वाणी श्रवणे, सुणी संवेग न मायो रे,
राज ऋद्धि रमणी सहु छांडी, चारित्र नीरे न्हायो रे.....उ. ।।3।।

देश विदेशे गुरु संघाते, विहार करे मुनि मोटो रे,
सहे परिषह दोष निवारे, ऋषि उपशम रस लोटो रे उ. ।।4।।

अन्य दिवस तस क्षुधा वेदनीय, करमे न सही जाय रे,
इंद्र चंद्र विद्याधर मुनिवर, कर्म करे तेम थाय रे. .....उ. ।।5।।

कूर घडो दिन प्रत्ये लावे, एषणा दोष निवारी रे,
कूरगडु ते माटे कहेवाया, संयम शोभा वधारी रे. ...उ. ।।6।।

दिवस पजुसण गुरु आदेशे, वोहरी कूर सुसाधु रे,
चार श्रमण चउमासी तपीया, देखाडे निराबाध रे. .....उ. ।।7।।

ते चारे तस पात्रमां थूंके, रोषे लवे तुं पापी रे,
आज पजुषण कां न विमासे, दुरगतिशुं मति थापी रे.उ. ।।8।।

कूरगडु समता रसमां भरीयो, हैये विमासे रुडुं रे,
लुखो आहार जाणी ते मुनिवर, घी नांख्युं नवि कूडुं रे. .उ. ।।9।।

आहार करी निज आतम निंदे, शुक्ल ध्यान लय लागी रे,
घनघाती चउ कर्म विनाशी, केवल ज्ञानी महाभागी रे. उ. ।।10।।

शासन देवी श्रमणने पूछे, कूरगडु किंहा ध्याए रे,
रोषभर्या जल्पे ते मुनिवर, ओ जा खूणे खाये रे. .....उ. ।।11।।

देवदुदुंभि गयणे वाजी, श्रमण खमावे जाणी रे,
केवल पामी मुक्ति सिधावे, वात सिद्धांते लखाणी रे. उ. ।।12।।

श्री विजयदानसूरीश्वर राज्ये, विमल हर्ष उवज्झाया रे,
आणंद विजय पंडित वर शिष्ये, **धनविजय** गुण गाया रे.उ. ।।13।।

69. श्री प्रसन्नचंद्र राजर्षि

प्रणमुं तुमारा पाय, प्रसन्नचंद्र, प्रणमुं तुमारा पाय,
राज छोडी रलीयामणुं रे, जाणी अथिर संसार,
वैरागे मन वालीयुं रे, लीधो संयम भार, ...प्रसन्न. ।।1।।

श्मशाने काउस्सग्ग रहीने, पग ऊपर पग चढाय,
बाहु बे उंचा करी रे, सूरज सामी दृष्टि लगाय, प्रसन्न. ।।2।।

दुर्मुख दूत वचन सुणीने, कोप चढ्यो तत्काल,
मनशुं संग्राम मांडीओरे, जीव पड्यो जंजाल, ...प्रसन्न. ।।3।।

श्रेणिक प्रश्न पूछे ते समे रे, स्वामी एहनी कुण गति थाय ?
भगवंत कहे हमणा मरे तो, सातमी नरके जाय, प्रसन्न. ।।4।।

क्षण एक आंतरे पूछीयुं रे, सर्वार्थसिद्ध विमान,
वागी देवनी दुंदुभि रे, ऋषि पाम्या केवलज्ञान, ...प्रसन्न. ।।5।।

प्रसन्नचंद्र ऋषि मुगते गया रे, श्री महावीरना शिष्य,
रुपविजय कहे धन्य धन्य, दीठा ए प्रत्यक्ष, ...प्रसन्न. ।।6।।

70. खंधक मुनि

(ढाळ - पहेली)

नमो नमो खंधक महामुनि, खंधक क्षमा भंडार रे,
उग्र विहारे मुनि विचरंता, चारित्र खड्गनी धार रे. ...नमो. ।।1।।

समिति गुप्तिने धारतो, जितशत्रु राजानो नंद रे,
धारणी उदरे जनमियो, दर्शन परमानंद रे. .....नमो. ।।2।।

धर्मघोष मुनि देशना, पामीयो तेणे प्रतिबोध रे,
अनुमति लेह माय तातनी, कर्म शुं युद्ध थइ योद्ध रे. .नमो. ।।3।।

छट्ठ अट्ठम आदि अति घणा, दुष्कर तप तनु शोष रे,
रात दिवस परिसह सहे, तो पण मन नहि रोष रे नमो. ।।4।।

दव दीधा खीजडा देहमां, चालता खडखडे हाड रे,
तो पण तप तपे आकरा, जाणता अथिर संसार रे. ...नमो. ।।5।।

एक समे भगिनी पुरी प्रते, आवीया साधुजी सोय रे,
गोखे बेठी चिंते बेनडी, ए मुज बांधव होय रे. ...नमो. ।।6।।

बेनने बांधव सांभर्यो, उलट्यो विरह अपार रे,
छाती लागी छे फाटवा, नयणे वहे आंसूडानी धार रे. .नमो. ।।7।।

राय चिंते मनमां इस्युं, ए कोइ नारीनो जार रे,
सेवक ने कहे साधुनी, लावोजी खाल उतार रे. ..नमो. ।।8।।

(ढाळ-दूसरी)

राय सेवक तव कहे साधुने, खालडी जीवथी हणशुं रे,
अम ठाकुरनी एह छे आणा, ए अमे आज करशुं रे,
अहो अहो साधुजी समताना दरिया, मुनि ध्यान थकी नवि चलिया रे ।।1।।

मुनिवर मनमांही आणंद्या, परिषह आव्यो जाणी रे,
कर्म खपावानो अवसर एहवो, फरी नहीं आवे प्राणी रे. अहो. ।।2।।

एतो वली सखाइ मलीयो, भाइ थकी भलेरो रे,
प्राणी तु काया परिहरजे, जिम न थाय भव फेरो रे. ...अहो. ।।3।।

राय सेवकने तव कहे मुनिवर, कठण फरस मुज काया रे,
बाधा रखे तुम हाथे थाये, कहो तिम रहीए भाया रे.अहो. ।।4।।

चारे शरणां चतुर करीने, भव चरम आवर्ते रे,
शुक्लध्यान शुं तान लगाव्युं, कायाने वोसिरावे रे. .....अहो. ।।5।।

चड् चड् चामडी तेह उतारे, मुनि समतारस झीले रे,
क्षपक श्रेणी आरोहण करीने, कठिन कर्मने पीले रे.अहो. ।।6।।

चोथुं ध्यान धरता अंते, केवल लइ मुनि सिध्यां रे,
अजर अमर पद मुनिवर पाम्या, कारज सघला सिध्यां रे. अहो. ।।7।।

एहवे ते मुहपत्ति लोहीए खरडी, पंखीडे आमिष जाणी रे,
लेइने नांखी ते राजदुवारे, सेवके लीधी ताणी रे. अहो. ।।8।।

सेवक मुखथी वात ज जाणी, बहेने मुहपत्ति दीठी रे,
निश्चय भाई हणायो जाणी, हइडे उठी अंगीठी रे. .....अहो. ।।9।।

विरह विलाप करे राय राणी, साधुनी समता वखाणी रे,
अथिर संसार संवेगे जाणी, संजम लीए राय राणी रे. अहो. ।।10।।

आलोइ पातकने सवि छंडी, कठिन कर्मने निंदी रे,
दुष्कर तप करी काया गाली, शिव सुख लहे आणंदी रे अहो. ।।11।।

भवियण एहवर मुनिवर वंदो, मानव भवफल लीजे रे,
कर जोडी मुनि **मोहन** विनवे, सेवक सुखिया कीजे रे. अहो. ।।12।।

71. रहनेमी मुनि

काउस्सग्ग ध्याने मुनि रहनेमी नामे, रह्या छे गुफामां शुभ परिणाम रे,
देवरिया मुनिवर ध्यानमां रहेजो, ध्यान थकी होय भवनो पार रे. देव.
वरसादे भीनां चीवर मोकला करवा, राजुल आव्या तेणे ठाम रे.देव. ।।1।।
रुपे रति रे वस्त्रे वर्जीत बाला, देखी खेलाणो तेणे काम रे.देव.
दिलडुं लोभाणुं जाणी राजुल भाखे, राखो स्थिर मन गुणना धाम रे. देव. ।।2।।
जादव कुलमां जिनजी नेम नगीनो, वमन करी छे मुजने तेणे रे. देव.
बंधव तेहनां तमे शिवादेवी जाया, एवडो पटंतर कारण केण रे.देव. ।।3।।
परदारा सेवी प्राणी नरकमां जाय, दुर्लभ बोधि होय प्राय रे.देव.
साध्वी साथे चूकी पाप जे बांधे, तेहनो छुटकारो कदीय न थाय रे. देव. ।।4।।
अशुचि काया रे मल मूत्रनी क्यारी, तमने केम लागी एवडी प्यारी रे. देव.
हुं तो संयमी तमे महाव्रत धारी, कामे महाव्रत जाशे हारी रे,देव. ।।5।।
भोग वम्या रे मुनि मनथी न इच्छे, नाग अगंधन कुलना जेम रे. देव.
धिक् कुल नीचा थइ नेहथी निहाले, न रहे संयम शोभा एम रे.देव. ।।6।।
एवा रसीला राजुल वयण सुणीने, बुझ्या रहनेमी प्रभुजी पास रे,देव.
पाप आलोइ फरी संयम लीधु, अनुक्रमे पाम्या शिव आवास रे.देव. ।।7।।
धन्य धन्य जे नर नारी शियलने पाले, समुद्र तर्या सम व्रत छे एह रे. देव.
रुप कहे तेहना नामथी होवे, अम मन निर्मल सुंदर देह रे.देव. ।।8।।

72. श्री भरतचक्रवर्ती

मनही में वैरागी, भरतजी मनही में बैरागी,
बत्रीस सहस मुकुटबद्ध राजा, सेवा करे वडभागी,
चोसठ सहस अंतेउरी जाके, तोइ न हुआ अनुरागी. भरतजी. ।।1।।

लाख चोराशी तुरंगम जाके, छन्नु क्रोड है पागी,
लाख चोराशी गजस्थ सोहीए, सूरता धर्म शुं लागी. भरतजी. ।।2।।

चार क्रोड अन्न नित सीझे, लूण दश लाख मण लागी,
तीन क्रोड गोकुल घर दूझे, एक क्रोड हल सागी .. भरतजी. ।।3।।

सहस बत्रीश देश वडभागी, भये सर्व के त्यागी,
छत्रु क्रोड ग्राम के अधिपति, तोही न हुवा सरागी, भरतजी. ।।4।।

नवनिधि रतन चोघडीयां बाजे, मन चिंता सब भागी,
कनक कीर्ति मुनिवर वंदत है, देजो मुक्ति में मांगी भरतजी. ।।5।।

73. श्री स्थूलभद्र और कोशा

अहो मुनिवरजी माहरी ऊपर, म्हेर करी भले आवीया,
हुं वाट तमारी जोती'थी, तुम विरहे नयणां भरती'ती,
वळी देवने ओलंभा देती'ती, ...अहो. ।।1।।

तुमे चतुर चोमासुं कही चाल्यां, ते ऊपर दिन में ए गाल्यां,
हवे भलुं थयुं नयणे भाल्यां. .....अहो. ।।2।।

हवे दुःखडा मारा गया दूरे, आनंद नहीं हरखे पूरे,
हवे चित्त चिंता सघली चूरे. .....अहो. ।।3।।

मारा ताप टल्यां सघला तनना, मारा विलय गया विकल्प मनना,
वली वूठा नीर अमृत घनना. .....अहो. ।।4।।

एक चोमासुं ने चित्रशाली, ए नाटक गीत तणी ताली,
मुज साथे रमीए मनवाली .....अहो. ।।5।।

तव बोल्या स्थूलिभद्र सुण बाला, तुम न करीश चित्त चरित्र चाला,
ए वात तणां हवे ह्यो ताला,
अहो मन हरणी ! तुमे मुज ऊपर राग सराग न राखो,
अहो सुखकरणी ! संयम रसथी, राग हैयामां राखो. अहो. ।।6।।

हवे रसभरी वात तिहां राखी, में संयम लीधुं गुरु साखी,
चित्त चोखे चारित्र रस चाखी. .....अहो. ।।7।।

हवे विषय तृष्णाथी मन वारो, हवे धर्म दयाथी दिल धारो,
ए भवोदधिथी आतम तारो. .....अहो. ।।8।।

कोश्या मुनि वचने प्रतिबोधी, आश्रव करणी ते सवि रोधी,
ते व्रत चोथुं लइ थइ शुद्धि. .....अहो. ।।9।।

जे नर प्रीत एहवी पाले, जे विषम विषयथी मनवाले
ते तो आतम परिणति अजुवाले. ..... अहो. ।।10।।

जे एहवा गुणीना गुण गावे, जे धर्मरंग अंतर ध्यावे,
ते तो **महानंद** पद निश्चल पावे, ... अहो. ।।11।।

74. श्री अनाथी मुनि

बंभसारे वनमां भमतां, ऋषि दीठो रयवाडी रमतां,
रुप देखीने मन रीझ्यो, भारे कर्मी पण भींज्यो, ...बंभसारे. ।।1।।

कर जोडीने एम पूछे, संबंध तमारे शुं छे ?
नरनाथ हुं छुं अनाथ, नथी कोई माहरे नाथ, .बंभसारे. ।।2।।

हरखे जोडी कहे हाथ, हुं थाउ तमारो नाथ,
नरनाथ तुं छे अनाथ, शुं मुजने करे छे सनाथ, ...बंभसारे. ।।3।।

मगधाधिप हुं छुं मोटो, शुं बोले छे नृप खोटो,
तुं नाथपणुं नवि जाणे, फोगट शुं आप वखाणे,बंभसारे. ।।4।।
नयरी कोशाम्बीनो वासी, राजपुत्र हुं छुं विलासी,
एकदिन महारोगे घेर्यो, केमे ते पाछो न फेर्यो, ...बंभसारे. ।।5।।
मात पिता छे मुज बहु महिला, वहेवरावे आंसुना रेला,
वडा वडा वैद्यो तेडावे, पण वेदना कोइ न हठावे, बंभसारे. ।।6।।
एहवुं जाणी तव शूल, में धार्यो ए धर्म अमूल,
रोग जाय जो आजनी राते, तो संयम लेउ प्रभाते, .बंभसारे. ।।7।।
एम चिंतवता वेदना नाठी, आखर में बांधी काठी,
बीजे दिन संयमभार, मे लीधो न लगाडी वार,बंभसारे. ।।8।।
अनाथ सनाथनो वहेरो, तुजने दाख्यो करी चहेरो,
जिनधर्म विना नरनाथ, नथी कोइ मुगतिनो साथ, .बंभसारे. ।।9।।
श्रेणिक तिहां समकित पाम्यो, मुनि अनाथीने सिर नाम्यो,
मुगते गया मुनिराय, **उदयरत्न** वंदे उवज्झाय.बंभसारे. ।।10।।

75. श्री मेतारज मुनि

शमदम गुणना आगरुंजी, पंच महाव्रत धार,
मासक्षमणने पारणेजी, राजगृही नगरी मोझार,
मेतारज मुनिवर ! धन धन तुम अवतार ..... ।।1।।
सोनीने घेर आवीयाजी, मेतारज ऋषिराय,
जवला घडतो उठियोजी, वंदे मुनिना पाय. . मेतारज. ।।2।।
आज फल्यो घर आंगणेजी, विण काले सहकार,
ल्यो भिक्षा छे सुझतीजी, मोदकतणो ए आहार.... मेतारज. ।।3।।

क्रौंच जीव जवला चण्योजी, वहोरी वल्या ऋषिराज,
सोनी मन शंका थइ जी, साधु तणा ए काज. मेतारज. ।।4।।
रीस करी ऋषिने कहेजी, द्यो जवला मुज आज,
वाघर शीषे वींटीयुजी, तडके राख्या मुनिराज. ... मेतारज. ।।5।।
फट् फट् फुटे हाडकांजी, त्रट त्रट तुटे छे चाम,
सोनीडे परिषह दीयोजी, मुनि राख्यो मन ठाम,मेतारज. ।।6।।
एवा पण मोटा यतिजी, मन नवि आणे रोष,
आतम निंदे आपणोजी, सोनीनो शो दोष..... मेतारज. ।।7।।
गजसुकुमाल संतापीयाजी, बांधी माटीनी पाल,
खेर अंगारा शिरे धर्याजी, मुगते गया तत्काल. मेतारज. ।।8।।
वाघणे शरीर वलुरीयुंजी, साधु सुकोशल सार,
केवल लही मुगते गयाजी, इम अरणिक अणगार.. मेतारज. ।।9।।
पापी पालक पीलीयाजी, खंधकसूरिना रे शिष्य,
अंबड चेला सातशेजी, नमो नमो ते निशदिन मेतारज. ।।10।।
एवा ऋषि संभारताजी, मेतारज ऋषिराय,
अंतगड हुआ केवलीजी, वंदे मुनिना पाय. ..... मेतारज. ।।11।।
भारी काष्ठनी स्त्री ए तिहांजी, लावी नाखी तेणीवार,
धबके पंखी जागीयोजी, जवला काढ्या तेणे सार. मेतारज. ।।12।।
देखी जवला विष्टामाजी, मन लाज्यो सोनार,
ओघो मुहपत्ति साधुनाजी, लेइ थयो अणगार. ... मेतारज. ।।13।।
आतम तार्यो आपणोजी, स्थिर करी मन वच काय,
राजविजय रंगे भणेजी, साधु तणी ए सज्झाय. मेतारज. ।।14।।

76. श्री शालिभद्र

बोलो बोलो रे शालिभद्र दो वरिया, दो वरीया दो चार वरिया. बोलो.।।1।।
माय तुम्हारी खडीय पुकारे, वहुअर सब आगे खडीआ. बोलो. ।।2।।
पोढ्यो पुत्र शिला पट देखी, आंखे आंसु जळहळीया. बोलो. ।।3।।
फुलनी शय्या जेहने खूंचती, तेणे संथारो शिला करीया बोलो. ।।4।।
पूरव भव माडी आहीरणी, आहार करी अणसण करीया बोलो. ।।5।।
आज पीछे डुंगर चडने की, सुंस करुं हुं इण वरीया . बोलो. ।।6।।
सनमुख खोल जोयो नहीं माकुं, ध्यान निरंजन मन धरीया बोलो. ।।7।।
काज सरे **उदयरत्न** उन्ही के, जेणे पलक में शिव वरीया बोलो. ।।8।।

77. श्री जंबूस्वामी

राजगृही नगरी वसे, ऋषभदत्त व्यवहारी रे,
तस सुत जंबूकुमार नमुं, बालपणे ब्रह्मचारी रे. .....।।1।।

जंबू कहे जननी सुणो, स्वामी सुधर्मा आया रे,
दीक्षा लेशुं तेह कने, अनुमति द्यो मोरी माया रे. ..... ।।2।।

माय कहे सुण बेटडा, वात विचारी कीजे रे,
तरुणपणे तरुणी वरी, छांडी केम छूटीजे रे ? ..... ।।3।।

आगे अरणिक मुनिवरा, फरी पाछा घेर आव्या रे,
नाटकणी नेहे करी, अषाढाभूति भोळाया रे ..... ।।4।।

वेश्या वश पडिया पछी, नंदिषेण नगीनो रे,
आर्द्रक देशनो पाटवी, आर्द्रकुमार का कीनो रे, ... ।।5।।

सहस वरस संजम लीयो, तो ही पार न पाया रे,
कंडरीकने करमे करी, पछी घणुं पस्ताया रे, ... ।।6।।

मुनिवर श्री रहनेमीजी, नेमि जिनेश्वर भाई रे,
राजीमति देखी करी, विषयतणी मति आइ रे, ... ।।7।।

दीक्षा छे वच्छ दोहिली, पाळवी खांडानी धार रे,
अरस निरस अन्न जमवुं, सुंवु डाभ संथार रे, ... ।।8।।

दीक्षा छे वच्छ ! दोहिली, कह्युं अमारुं कीजे रे,
परणो पनोता पद्मिणी, अम मनोरथ पूरीजे रे, ... ।।9।।

जंबू कहे जननी सुणो, धन्य धन्नो अणगारो रे,
मेघ मुनिसर मोटको, शालिभद्र संभारो रे, ... ।।10।।

गजसुकुमाल गुणे भर्यो, आतम साधना कीधो रे,
षट्मासी तप पारणे, ढंढणे केवल लीधो रे. ..... ।।11।।

दशार्णभद्र संयम लही, पाय लगाड्यो इंदो रे,
प्रसन्नचंद्र केवल लही, पाम्यो छे परमानंदो रे ..... ।।12।।

एम अनेक मुनिवर हुआ, कहेता पार न पाय रे,
अनुमति द्यो मोरी मावडी, क्षण लाखेणी जाय रे. ..... ।।13।।

पांचसे सत्तावीश साथे, जंबू कुमार परिवरीओ रे,
पंच महाव्रत उच्चरी, भवजल सायर तरीयो रे. ..... ।।14।।

जंबू चरम ज केवली, तास तणां गुण गाया रे,
पंडित ललित विजय तणो, **हेत विजय** सुपसायां रे. .... ।।15।।

78. श्री वज्र मुनि

सांभळजो तमे अद्भूत वातो, वयर कुंवर मुनिवरनी रे,
षट् महिनाना गुरु झोलीमां, आवे केलि करंता रे,
त्रण वरसना साधवी मुखथी, अंग अग्यार भणंता रे .... सां. ।।1।।

राज्यसभामां नहि लोभाणा, मात सुखलडी देखी रे,
गुरु दीधां ओघो मुहपत्ति, लीधां सर्व उवेखी रे. ... सां. ।।2।।

गुरु संगाथे विहार करे मुनि, पाले शुद्ध आचार रे,
बालपणाथी महा उपयोगी, संवेगी शिरदार रे ..... सां. ।।3।।

कोला पाक ने घेबर भिक्षा, दोय ठामें नवि लीधी रे,
गगन गामिनी वैक्रिय लब्धि, देवे जेहने दीधी रे.... सां. ।।4।।

दश पूरव भणिया जे मुनिवर, भद्रगुप्त गुरु पासे रे,
क्षीराश्रव प्रमुख जे लब्धि, परगट जास प्रकाशे रे. ..... सां. ।।5।।

कोटि सैकडो धनने संचे, कन्या रुक्मिणी नामे रे,
शेठ धनावह दिये पण न लीए, वधते शुभ परिणामे रे. सां. ।।6।।

देई उपदेश ने रुक्मिणी नारी, तारी दीक्षा आपी रे,
युगप्रधान जे विचरे जगमां, सूरज तेज प्रतापी रे. ..... सां. ।।7।।

समकित शियल तुंब धरी करमां, मोह सागर कर्यो छोटो रे,
ते केम बूडे नारी नदीमां, ए तो मुनिवर मोटो रे... सां. ।।8।।

जेणे दुर्भिक्षे संघ लेइने, मूक्यो नर सुकाल रे,
शासन शोभा उन्नति कारण, पुष्प पद्म विशाल रे. ..... सां. ।।9।।

बौद्धरायने पण प्रतिबोध्यो, कीधो शासन रागी रे,
शासन शोभा जय पताका, अंबर जइने लागी रे. .सां. ।।10।।

विसर्यो सुंठ गांठियो काने, आवश्यक वेला जाण्यो रे,
विसरे नहीं पण ए विसरियो, आयु अल्प पिछाण्यो रे..सां. ।।11।।

लाख सोनैय्या हांडी चडे तिणे, बीजे दिन सुकाल रे,
एम संभलावी वयरसेनने, जाणी अणसण काल रे.सां. ।।12।।

रथावर्त गिरि जइ अणसण कीधुं, सोहम हरि तिहां आवे रे,
प्रदक्षिणा पर्वतने देइने, मुनिवर वंदे भावे रे.....सा. ।।13।।

धन्य सिंहगिरि सूरि उत्तम, जेहना ए पटधारी रे,
पद्मविजय कहे गुरुपद पंकज, नित्य नमिए नरनारी रे सा. ।।14।।

79. श्री धन्नाजी

चरण कमल नमी वीरनां रे, पूछे श्रेणिकराय रे, मुनि स्युं मन मान्यो.
चउद सहस मुनि ताहरे, अधिको कोण कहेवाय रे.....मुनि. ।।1।।

जिन कहे अधिको म्हारे रे, धन धन्नो अणगार रे. मुनि.
रिद्धि छती जेणे परिहरी रे, तजी तरुणी परिवार रे. मुनि. ।।2।।

सिंह तणी पेरे निकली रे, पाले व्रत सिंह समान रे, मुनि.
क्रोध लोभ माया तजी रे, दूर कर्यो अभिमान रे. .....मुनि. ।।3।।

मुज हाथे संयम ग्रही रे, पाले निरतिचार रे, मुनि.
छट्ठ छट्ठ आंबिल पारणे रे, लीये निरस आहार रे.मुनि. ।।4।।

वंछे न कोई मानवी रे, तेवो लीये आहार रे, मुनि.
चालतां हाड खडखडे रे, जेम खाखराना पान रे. ....मुनि. ।।5।।

शकट भर्युं जेम कोचले रे, तिम धन्ना मुनिनुं वान रे, मुनि.
पंच समिति त्रण गुप्तिशुं रे, रंगे रमे निशदिन रे. मुनि. ।।6।।

सर्वार्थ सिद्ध सुख पामीयो रे, धन धन्नो अणगार रे, मुनि.
नवमें अंगे जेहनो रे, वीरे कह्यो अधिकार रे. .....मुनि. ।।7।।

पंडित **जिनविजय** तणो रे, नमे तेहने वारं वारं रे. मुनि.
प्रातः उठीने तेहनुं रे, नाम लीजे सुविचार रे. ....मुनि. ।।8।।

80. श्री नंदिषेण

(राग : मारुं मन मोह्यु रे श्री सिद्धाचले रे)

साधुजी न जइए रे परघर एकला रे, नारीनो कवण विश्वास,
नंदिषेण गणिका वचने रह्या रे, बार वरस घरवास. .... सा. ।।1।।

सुकुलीनी वर कामिनी पांचशे रे, समरथ श्रेणिक वात,
प्रतिबुझ्यो वचने जिनराजनां रे, व्रतनी काढी रे वात. सा. ।।2।।

भोग करम पोते विण भोगवे रे, न होवे छुटक बार,
वात करे छे शासन देवता रे, लीधो संजम भार. ..... सा. ।।3।।

कंचन कोमल काया शोषवी रे, विरस निरस आहार,
संवेगी मुनिवर शिर सेहरो रे, बहु बुद्धि अक्कल भंडार. सा. ।।4।।

वेश्या घर पहोंच्यो अणजाणतो रे, धर्मलाभ दीये जाम,
धर्मलाभनुं काम इहां नहि रे, अर्थलाभनुं काम..... सा. ।।5।।

बोल खमी न शक्या करवे चड्या रे, खेंच्युं तरणुं रे नेव,
दीठुं घर सारु अरथे भर्युं रे, जाणे प्रत्यक्ष देव. ... सा. ।।6।।

हाव भाव विभ्रम वसे आदरी रे, वेश्या शुं घरवास,
पण दिन प्रति दश दश बुझवी रे, मूके प्रभुजीनी पास. . सा. ।।7।।

एक दिवस नव तो आवी मल्या रे, दसमो न बुझे कोय,
आसंगायत हास्य मिचे कहे रे, पोते दशमा रे होय. सा. ।।8।।

नंदिषेण फरी संयम लीये रे, विषय थकी मन वाल,
चूकीने पण जे पाछा वले रे, ते विरला इणे काल. ..... सा. ।।9।।

व्रत अकलंक जो राखवा खप करो रे, तो इण जुठे संसार,
कहे जिन **हर्ष** कहे तुं एकलो रे, परघर गमन निवार. सा. ।।10।।

81. श्री मरुदेवी माता

मरुदेवी माता रे एम भणे, ऋषभजी आवोने घेर,
हवे मुज घडपण छे घणुं, मलवा पुत्र विशेष. .....मरुदेवी. ।।1।।

वत्स तुमे वनमां जई शुं वस्या, तमारे ओछुं शुं आज,
इंद्रादिक साथे शोभतां, साध्यां षट् खंड राज. मरुदेवी. ।।2।।

साचुं सगपण मातातणुं, बीजो कारमो लोक,
रडतां रडतां मेलो नहि, हृदय विचारी ने जोय. ...मरुदेवी. ।।3।।

ऋषभजी आवी समोसर्या, विनीता नगरी मोझार,
हरखे देउं रे वधामणां, उठी करु रे उल्लास. मरुदेवी. ।।4।।

आई बेठा गज ऊपरे, भरतजी वांदवा जाय,
दुरथी वाजां रे वागीया, हैडे हरख न माय .....मरुदेवी. ।।5।।

हरखना आंसु रे आवीया, पडल ते दूरे पलाय.
पर्षदा दीठी रे पुत्रनी, उपन्युं केवल ज्ञान .....मरुदेवी. ।।6।।

धन्य माता धन्य बेटडो, धन्य तेहनो परिवार,
विनयविजय उवज्झायनो, वर्त्यो जय जयकार. ...मरुदेवी. ।।7।।

पशुओंको उगारा किसने ? नेमीनाथ, नेमीनाथ

82. श्री चंदनबाळा

वीर प्रभुजी पधारो नाथ, वीर प्रभुजी पधारो,
विनंती मुज अवधारो नाथ, वीर प्रभुजी पधारो,
चंदन बाला सती सुकुमाला, बोले वचन रसाला,
हाथ अने पगमां जड दीया ताला, सांभळो दीन दयाला..नाथ ! वीर. ।।1।।
कठण छे मुज कर्मनी कहाणी, सुणो प्रभुजी मुज वाणी,
राजकुंवरी हुं चौटे वेचाणी, दुःख तणी नथी खामी..नाथ ! वीर. ।।2।।
तात ज मारो बंधन पडीयो, माता मरण ज पामी,
मस्तकनी वेणी कतराणी, भोगवी में दुःखनी खाणी..नाथ ! वीर. ।।3।।
मोंघी हती हुं राज कुटुंबमां, आजे हुं त्रण उपवासी,
सुपडाने खूणे अडदना बाकुला, शुं कहुं दुःखनी राशि.. नाथ ! वीर. ।।4।।
श्रावण भादरवा मासनी पेरे, वरसे आसुडांनी धारा,
गद्गद् कंठे चंदनबाला, बोले वचन करुणावाला.. नाथ ! वीर. ।।5।।
दुःख ए सघलुं भूलुं पूर्वनुं, आपना दर्शन थाता,
दुःख ए सघलुं हैये ज आवे, प्रभु तुम पाछा जाता..नाथ ! वीर. ।।6।।
चंदनबालानी अरज सुणीने, वीर नयनमां निहाले,
बाकुला लई वीर प्रभुजी पधारे, दया करी दीन दयाले..नाथ ! वीर. ।।7।।
सोवन केरी त्यां थई वृष्टी, साडी बार कोडी सारी,
पंच दिव्य तत्काले ज प्रगट्या, बंधन सर्व विदारी.. नाथ ! वीर. ।।8।।
संजम लइने काज सुधार्या, चंदन बाला कुमारी,
वीर प्रभुजी शिष्या पहेली, पंच महाव्रत धारी... नाथ ! वीर. ।।9।।
कर्म खपावी मुक्ति सिधाव्या, धन्य सती शिरदार,
विनयविजय कहे भावधरी ने, वंदुं हुं वारंवार. नाथ ! वीर. ।।10।।

83. श्री विजय शेठ-विजया शेठाणी

शुक्ल पक्ष विजयाव्रत लीनो, शेठ कृष्ण पक्षरो जानी,
धन धन श्रावक पुण्य प्रभावक, विजयसेठ ने शेठाणी .. धन. ।।1।।
सजी शणगार चढी पियु मंदिर, हैये हर्ष ओर हुलसाणी,
त्रण दिवस मुज व्रत तणा रे, शेठ बोले मधुरी वाणी .. धन. ।।2।।
वचन सुनीने नैण ढलियां, वदन कमल थई विलखाणी,
प्रेम धरी पद्मीणीने पूछे, चिंता मनमां केम आणी ..... धन. ।।3।।
शुक्लपक्षव्रत गुरुमुख लीनो, थे परणोजी दुजी नारी,
दुजी नारी मारे बेन बराबर, धन धीरज तारी जाणी .. धन. ।।4।।
हैये हार शणगार सजी सब, श्याम घटा हिये हुलसानी,
वर्षाकाल अति घणो गरजे, चिंहुधारा हो वरसे पाणी .. धन. ।।5।।
एक शय्याए दोनुं प्रबल, बेइए मन राख्युं ताणी,
षटरस भोजन द्वादश संवत्सर, बीजी नारीओ भरशे पाणी धन. ।।6।।
मन वचन काया अखंडित निर्मल, शील पाल्युं उत्तम प्राणी,
विमल केवली करी प्रशंसा, ए दोनु उत्तम जाणी ..... धन. ।।7।।
प्रगट हुवा संयम व्रत लीनो, मोह कर्म कीयो धुलधाणी,
रतनचंद कर जोडीने विनवे, केवल लही गया निर्वाणी धन. ।।8।।

84. श्री बाहुबलिजी

राज तणा रे अति लोभिया, भरत बाहुबलि झूझे रे,
मूठी उपाडी रे मारवा, बाहुबलि प्रतिबुझे रे,
वीरा मोरा गज थकी उतरो, गज चडे केवल न होय रे . वी. ।।1।।

ऋषभदेव तिहां मोकले, बाहुबलिजीनी पासे रे,
बंधव गज थकी उतरो, ब्राह्मी सुंदरी एम भाखे रे. वी. ।।2।।
लोच करीने चारित्र लीयो, वली आव्यो अभिमान रे,
लघु बांधव वांदुं नहीं, काउस्सग्ग रह्या शुभ ध्यान रे. .. वी. ।।3।।
वरस दिवस काउस्सग्ग रह्या, शीत तापथी सूकाणा रे,
पंखीडे माला घालीया, वेलडीये वींटाणा रे. ..... वी. ।।4।।
साधवीना वचन सुणी करी, चमक्यो चित्त मोझार रे,
हय गय रथ सहु परिहर्या, वली आव्यो अहंकार रे. .... वी. ।।5।।
वैरागे मन वालीयुं, मूक्यो निज अभिमान रे,
पग उपाड्यो रे वांदवा, उपन्युं केवलज्ञान रे. ..... वी. ।।6।।
पहोत्या ते केवली परषदा, बाहुबली मुनिराय रे,
अजरामर पदवी लही, **समयसुंदर** वंदे पाय रे. ..... वी. ।।7।।

85. श्री अरणिकमुनि

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी, तडके दाझे शीशोजी,
पाय अडवाणे रे वेलु परजले, तन सुकुमाल मुनीशोजी.अर. ।।1।।
मुख करमाणुं रे मालती फूल ज्युं, ऊभो गोखनी हेठोजी,
खरे बपोरे दीठो एकलो, मोही मानिनी दीठोजी. ..... अर. ।।2।।
वयण रंगीली रे नयणे वींधियो, ऋषि थंभ्या तेणे ठाणोजी,
दासीने कहे जा रे उतावली, ऋषि तेडी घर आणोजी. अर. ।।3।।
पावन कीजे ऋषि घर आंगणुं, वोहरो मोदक सारोजी,
नवजोबन रस काया का दहो, सफल करो अवतारोजी. अर. ।।4।।

चंद्रवदनीये चारित्रथी चूकव्यो, सुख विलसे दिन रातोजी,
बेठो गोखे रे रमतो सोगठे, तव दीठी निज मातोजी ... अर. ।।5।।
अरणिक अरणिक करती मा फरे, गलिये गलिये बजारोजी,
कहो केणे दीठो रे म्हारो अरणिको, पुंठे लोक हजारोजी अर. ।।6।।
हुं कायर छुं रे म्हारी मावडी, चारित्र खांडानी धारोजी,
धिग्-धिग् विषया रे माहरा जीवने, में कीधो अविचारोजी. अर. ।।7।।
गोखथी उतरी रे जननीने पाय पड्यो, मनशुं लाज्यो अपारोजी,
वत्स तुज न घटे रे चारित्रथी चूकवुं, जेहथी शिवसुख सारोजी .अर. ।।8।।
एम समजावी रे पाछो वालीयो, आव्यो गुरुनी पासोजी,
सद्गुरु दीये रे सीख भली परे, वैरागे मन वासोजी. ... अर. ।।9।।
अग्नि धखंती रे शीला ऊपरे, अरणिके अणसण कीधुजी,
समयसुंदर कहे धन्य ते मुनिवर, जेने मनवांछित लीधुजी .अर. ।।10।।

86. अइमुत्तामुनि की सज्झाय

संयम रंगे रंग्युं जीवन नाना राजकुमार, वंदो अइमुत्ता अणगार...1
गौतमस्वामी गोचरी आवे, नाना बालकने मन भावे,
प्रेम थकी निज घर बोलावे, भावधरी मोदक वहोरावे,
मारे पण गौतम सम थावुं, एम करे विचार... ..... वंदो. 2
मननी इच्छा पूरण कीधी, मातपितानी आज्ञा लीधी
राज्यतणी छोडीने ऋद्धि, गौतम पासे दीक्षा लीधी
रहे उमंगे गुरुने संगे, वहेता संयम भार..... वंदो. 3
तलावडी एक जलनी आवी, बाल मुनिने मन बहु भावी
पात्रतणी नौका खेलावी, गुरुने देखी लज्जा आवी
अणघटतुं में कारज कीधुं, पाम्या क्षोभ अपार... ..... वंदो. 4

समवसरणमां प्रभुजी सामे, इरियावही पडिक्कमी प्रमाणे
चार कर्मनी गति विरामे, केवलज्ञान तिहां मुनि पामे
देव देवी सहु उत्सव करता, वर्त्यो जय जयकार... . वंदो. 5

क्षणमां सघला कर्मो खपाव्या, एवा अइमुत्ता मुनिराया
भव्य जीवोने बोध पमाडी, अंते मुक्तिपुरी सिधाव्या
'ज्ञानविमल' ए मुनिने वंदे, थाये बेडो पार... ..... वंदो. 6

87. इलाचीकुमार की सज्झाय

नामे इलाची पुत्र जाणीए, धनदत्त शेठनो पुत्र,
नटवी देखीने मोहीयो, नवि राख्युं घर सूत्र;
कर्म न छूटे रे प्राणीया, पूरव स्नेह विकार,
निज कुल छंडी रे नट थयो, नाणी शरम लगार..... कर्म. 1

मातापिता कहे पुत्रने, नट नवि थइए रे जात;
पुत्र परणावुं रे पद्मिणी, सुख विलसो ते संघात. .... कर्म. 2

कहेण न मान्युं रे तातनुं, पूरव कर्म विशेष;
नट थइ शीख्यो रे नाचवा, न मटे लख्या रे लेख..... कर्म. 3

एक पूर आव्यो नाचवा रे, ऊंचो वांस विशेष;
तिहां राय जोवाने आवीयो, मलीया लोक अनेक. .... कर्म. 4

ढोल बजावे रे नटडी, गावे किन्नर साद;
पाय कल घुघरा रे घमघमे, गाजे अंबर नाद, ... कर्म. 5

दोय पाव पहेरी रे पावडी, वंश चढ्यो गज गेल;
नोंधारो थइ नाचतो, खेले नवा नवा खेल. ..... कर्म. 6

नटडी रंभा रे सारखी, नयणे देखे रे जाम;
जो अंतेउरमां अे रहे, जन्म सफल मुज ताम. ..... कर्म.7

तव तिहां चिंते रे भूपति, लुब्धो नटडीनी साथ;
जो नट पडे रे नाचतो, तो नटडी करुं मुज हाथ.... कर्म. 8

कर्म वसे रे हुं नट थयो, नाचुं छुं निराधार;
मन नवि माने रे रायनुं, तो शुं करवो विचार..... कर्म. 9

दान न आपे रे भूपति, नटे जाणी ते वात;
हुं धन वंछु रे रायनुं, राय वंछे मुज घात. ..... कर्म. 10

दान लहुं जो हुं रायनुं, तो मुज जीवित सार;
एम मनमांहे रे चिंतवी, चढीओ चोथी रे वार. ..... कर्म. 11

थाल भरी शुद्ध मोदके, पद्मिणी उभेली बार;
ल्यो ल्यो कहे छे लेता नथी, धन धन मुनि अवतार. कर्म. 12

एम तिहां मुनिवर वहोरता, नटे पेख्या महाभाग्य;
धिक् धिक् विषया रे जीवने, एम नट पाम्यो वैराग्य. ..... कर्म. 13

संवर भावे रे केवली, थया ते कर्म खपाय;
केवल महिमा रे सुर करे, **लब्धिविजय** गुण गाय. .. कर्म. 14

88. कृष्णमहाराजा की सज्झाय

नगरी द्वारिकामां नेमि जिनेसर, विचरंता प्रभु आवे;
कृष्ण नरेसर वधाई सुणीने, जित निशान बजावे,
हो प्रभुजी ! नहि जाउं नरकनी गेहे.
नहि जाऊं, नहि जाऊं हो प्रभुजी, नहि जाऊं नरकनी गेहे.1

अढार सहस साधुजीने विधिशुं, वांद्या अधिके हरखे;
पछी नेमि जिणेसर केरां, उभा मुखडां निरखे. .. हो प्रभुजी. 2
नेमि कहे तुमे चार निवारी, त्रण तणां दुःख रहीया;
कृष्ण कहे हुं फरी फरी वांदु, हर्ष धरी मन हइयां. ... हो प्रभुजी. 3
नेमि कहे अेह टाल्यां न टले, सो वाते अेक वात;
कृष्ण कहे मारा बाल ब्रह्मचारी, नेमि जिणेसर भ्रात.हो प्रभुजी. 4
मोटा राजानी चाकरी करतां, रांक सेवक बहु रलसे;
सुरतरु सरीखा अफल जशे त्यारे, विष वेलडी केम फलशे ?हो प्रभुजी. 5
पेटे आव्यो तेह भोरींग वेठे, पुत्र कपुत्र ज थाय;
भलो भूंडो पण जादवकुलनो, तुम बांधव कहेवाय.हो प्रभुजी. 6
छप्पन क्रोड जादवनो रे साहिबो, कृष्ण जो नरके जाशे;
नेमि जिनेसर केरो रे बांधव, जगमां अपयश थाशे. . हो प्रभुजी. 7
शुद्ध समकितनी परीक्षा करीने, बोल्या केवलज्ञानी;
नेमि जिनेसर दियो रे दिलासो, खरो रुपैयो जाणी.हो प्रभुजी. 8
नेमि कहे तुमे चिंता न करशो, तुम पदवी अम सरखी;
आवती चोवीशीमां होशो तीर्थंकर, हरि पोते मन हरखी.हो प्रभुजी. 9
जादवकुल अजवाल्युं रे नेमिजी, समुद्रविजय कुल दीवो;
इंद्र कहे रे शिवादेवीना नंदन, क्रोड दीवाली जीवो. हो प्रभुजी. 10

89. गजसुकुमाल की सज्झाय

गजसुकुमाल महामुनिजी स्मशाने काउस्सग्ग;
सोमील ससरो देखीनेजी, कीधो महाउपसर्ग रे,
प्राणी धन धन अेह अणगार, वंदो वारंवार रे. ..... प्राणी. 1

पाल बांधी शिर ऊपरेजी, भर्या अंगारा रे त्यांय;
भडभड ज्वाला सलगतीजी, ऋषि चडिया उत्साह रे. प्राणी. 2
अे ससरो साचो सगोजी, आपे मुक्तिनी पाघ;
इण अवसर चुकुं नहिजी, टालुं कर्मविपाक रे. ..... प्राणी. 3
मारुं कांई बलतुं नथीजी, बले बीजानुं रे अेह;
पाडोशीनी आगमांजी, आपणो अलगो गेह रे. ..... प्राणी. 4
जन्मान्तरमां जे कर्याजी, आ जीवे अपराध,
भोगवतां भली भातशुंजी, शुक्लध्यान आस्वाद रे. ..... प्राणी. 5
द्रव्यानल भावानलेजी, काया कर्म दहंत;
अंतगड हुवा केवलीजी, **धर्मरत्न** प्रणमंत रे..... प्राणी. 6

90. श्री ढंढणऋषि की सज्झाय

ढंढण ऋषिने करुं वंदना हुं वारी लाल, उत्कृष्टो अणगार रे हुं.
अभिग्रह लीधो आकरो हुं. लब्धे लेशुं आहार रे हुं. 1
दिन प्रत्ये जावे गोचरी हुं. न मले शुद्ध आहार रे हुं.
न लीअे मूल असुझतो हुं. पिंजर हुवो गात्र रे हुं.....2
हरि पूछे श्री नेमने हुं. मुनिवर सहस अढार रे हुं.
उत्कृष्टो कुण अेहमा, हुं. मुज ने कहो कृपाल रे हुं. 3
ढंढण अधिको दाखीयो हुं. श्री मुख नेमि जिणंद रे हुं.
कृष्ण उमायो वांदवा हुं. धन्य जादव कुलचंद रे हुं. 4
मारगमांहे मुनिवर मल्यां हुं. वांदे कृष्ण नरेश रे हुं.
किणही मिथ्यात्वीने देखीने, हुं. आव्यो भाव विशेष हुं. 5

आवो अम घर साधुजी हुं. त्यो मोदक छे शुद्ध रे हुं.
ऋषिजी लेई आवीया हुं. प्रभुजी पास विशुद्ध रे हुं. 6

मुज लब्धे मोदक मल्या हुं. मुजने कहो कृपाल रे हुं.
लब्धि नही वत्स ताहरी हुं. श्रीपति लब्धि निहाल रे हुं. 7

तो मुजने लेवो नहि हुं. चाल्यो परठण काज रे हुं.
इंट निभाडे जईने हुं. चूर्या कर्म समाज रे हुं. 8

आवी शुद्ध भावना हुं. पाम्या केवल नाण रे हुं.
ढंढणऋषि मुगते गया हुं. कहे **जिनहर्ष** सुजाण हुं. 9

91. देवानंदा माता की सज्झाय

जिनवर रुप देखी मन हरखी स्तनसें दुध झराया
तब गौतमकुं भया अचंबा प्रश्न करणकुं आया, गौतम ! अे तो मेरी अम्मा.1

तस कुखे तुमे काहु न वसिया, कवण किया इण कम्मा, गौतम.
मोहवशे जीव समझे नहि, मरम कम्मा ने धम्मा... ..गौतम. 2

त्रिशलादे देराणी हुंती, देवानंदा जेठाणी, ...गौतम.
विषय लोभ वश कांइ न जाण्युं, कपट वात मन आणी... गौतम. 3

एसा शाप दिया देराणी, तुम संतान मुज होज्यो, ...गौतम.
कर्म आगळ कोईनुं नव चाले, इन्द्र चक्रवर्ति जोज्यो... गौतम. 4

देराणीकी रत्न दाबडी, बहुलां रत्न चोराया, ...गौतम.
झगडो करतां न्याय हुओ जब, तब कुछ नाणा पाया... गौतम. 5

भरतराय जब ऋषभने पूछे, अेहमें कोइ जिणंदा, ...गौतम.
मरिची पुत्र त्रिदंडी तेरो, होशे चोवीसमा जिणंदा... .गौतम. 6

कुलनो गर्व कीयो में गौतम, भरत राय जब वांघा, ...गौतम.
मन वचन कायाअे करीने, हरख्यो अति आणंदा... .....गौतम. 7

कर्म संयोगे भिक्षुक कुल पाया, जनम न होवे कबही, ...गौतम.
इंद्र अवधिए जोतां अपहर्यो, देव भुजंगम तबही.....गौतम. 8

त्यासी दिन तिहांकणे वसियो, हरिणगमेषी जब आया, ...गौतम
सिद्धारथ राय त्रिशलादे राणी, तस कुखे छटकाया... ..गौतम. 9

ऋषभत्तने देवानंदा, लेशे संयम भार, ...गौतम.
तव गौतम अे मुगते जाशे, कह्यो भगवती सूत्र मोझार... गौतम.10

सिद्धारथ राय त्रिशलादे राणी, अच्चुत देवलोके जासे, ...गौतम.
बीजे खंडे आचारांगे, ते सूत्रे कहेवाशे..... गौतम. 11

तपगच्छपति श्री हीर विजय सूरी, दियो मनोरथ वाणी, गौतम.
सकलचंद प्रभु गौतम पूछे, उलट मनमां आणी..... गौतम. 12

92. द्रौपदीसती की सज्झाय

लज्जा मोरी राखो रे देव खरी,
द्रौपदी राणी युं कर विनवे; कर दोय शीश धरी,
द्यूत रसे प्रीतम मुज हार्यो, वात करी न खरी. .....लज्जा. 1

देवर दुर्योधन दुःशासन, एहनी बुद्धि फरी;
चीवर खेंचे मोटी सभामें, मनमें द्वेष धरी रे. .....लज्जा. 2

भीष्म द्रौण कर्णादिक सर्वे, कौरव भीक भरी;
पांडव प्रेम तजी मुज बेठा, जे हता जीव जूरी रे.....लज्जा. 3

अरिहंत अेक आधार अमारे, शीयल शुं संग धरी;
पत राखो प्रभुजी इण वेळा, समकितवंत सूरि. ....लज्जा. 4

ततखिण अष्टोत्तर शत चीवर, पूर्वा प्रेम धरी;
शासनदेवी जयजय रव बोले, कुसुमनी वृष्टि करी.....लज्जा. 5

शीयल प्रभावे द्रौपदी राणी, लज्जा लील वरी;
पांडव कुंतादिक सहुं हरख्या, कहे धन्य धीर धरी. लज्जा. 6

सत्य शील प्रभावे कृष्णा, भवजल पार तरी;
जिन कहे शीयल धरे तस जनने, नमीये पाय पडी रे. लज्जा. 7

93. धर्मरुचि अणगार की सज्झाय

साधुजीने तुंबडुं वहोरावीयुंजी, करमे हलाहल थाय रे;
विपरीत आहार वहोरावीयोजी, वधार्यो अनंत संसार रे. 1

आहार लेई मुनि पाछा वल्यांजी, आव्या आव्या गुरुजीनी पास रे;
भात पाणी आलोवीयाजी, अे आहार नहि तुज योग रे. 2

निरवद्य ठाणे जइने परठवोजी, तुमे छो दयाना जाण रे;
बीजो आहार आणी करीजी, तुमे करो निरधार रे. 3

गुरुवचन श्रवण सुणीजी, पहोंच्या पहोंच्या वन मोझार रे;
अेक ज बिंदु तिहां परठव्योजी, दीठा दीठा जीवना संहार रे. 4

जीवदया मनमां वसीजी, आवी आवी करुणा सार रे;
मासक्षमणने पारणेजी, पडिवज्यां शरणां चार रे. 5

संथारे बेसी मुनि आहार कर्योजी, उपजी उपजी दाहज्वाळ रे;
काल करी सर्वार्थ सिद्धेजी, पहोंच्या पहोंच्या स्वर्ग मोझार रे. 6

दु:खिणी दुर्भागिणी बाह्मणीजी, तुंबडा तणे अनुसार रे,
काल अनंतो तो भमीजी, रुली रुली तिर्यंच मोझार रे. 7

साते नरके ते भमीजी, पामी पामी मनुष्यनी देह रे;
चारित्र लइ तपस्या करीजी, बांध्युं बांध्युं नियाणुं तेह रे. 8
द्रुपद राजा घेर उपनीजी, पामी पामी यौवन वेष रे;
पांच पांडवने ते वरीजी, हुई हुई द्रौपती अेह रे. 9
ते मनुष्य जन्म पामी करीजी, लेशे लेशे चारित्र निरधार रे;
केवलज्ञान पामी करीजी, **जस** कहे जाशे जाशे मुक्ति मझार रे. 10

94. मेघकुमार की सज्झाय

धारणी मनावे रे मेघकुमारने रे, तुं मुज एकज पुत्र;
तुज विण जाया रे सूनां मंदिर मालीयां रे, राखो राखो घर तणां सूत्र. 1
तुजने परणावुं रे आठ कुमारिकारे, सुंदर अति सुकुमाल;
मलपती चाले रे जेम वन हाथणी रे, नयण वयण सुविशाल.धारणी. 2
मुज मन आशा रे पुत्र हती घणी रे, रमाडीश वहुना रे बाल;
दैव अटारो रे देखी नवि शक्यो रे, उपायो अेह जंजाल.धारणी. 3
धन कण कंचन रे ऋद्धि घणीअ छे रे, भोगवो भोग संसार;
छती ऋद्धि विलसो रे जाया घर आपणे रे, पछी लेजो संयम भार. धारणी.4
मेघकुमारे रे माता प्रत्ये बूझवीरे, दीक्षा लीधी वीरजीनी पास;
प्रीतिविमल रे इणि परे उच्चरे रे, पहोती म्हारा मनडानी आश.धारणी. 5

95. सुदर्शन शेठ की सज्झाय

शीलरतन जतने धरो रे लोल, जेहथी सहु सुख थाय रे. सलुणा,
शेठ सुदर्शननी परे रे लो, संकट सहु मीट जाय रे..... स. 1

अंगदेश चंपापुरी रे लो, दधिवाहन भूपाल रे; ..... स.
अभया प्रमुख अंतेउरी रे लो, सुंदर लहे सुकुमार रे. ..स. 2

शेठ सुदर्शन तिहां वसे रे लो, नारी मनोरमा कंत रे; ..... स.
काम समो रुपे करी रे लो, व्रतधारी गुणवंत रे. .....स. 3

अभयाराणी अेकदा रे लोल, केलवी कूड मंडाण रे; ..... स.
काउस्सग्ग करता शेठजी रे लो, अणाव्या निज ठाण रे. स. 4

उपसर्ग किधा आकरां रे लोल, पण नवि चूक्या तेह रे; ..... स.
आल अलीक दीयो तीणे रे लोल, नृप नवि सद्दहे अेह रे. ..स. 5

शेठ भणी पूछे इशो रे लो, कहो अे कवण वृत्तांत रे; ..... स.
शेठ मुखे बोले नहीं रे लो, रुठ्यो भूप अत्यंत रे. .....स. 6

मारण हुकम कीयो सदा रे लो, कीधी विटंबना भूर रे; ..... स.
तस धरणी काउस्सग्ग रही रे लो, कष्टने करवा दूर रे. ... स. 7

शासन सुरी सानिध्य करी रे लो, प्रगट्यो पुण्य पंडुर रे; . स.
शूली सिंहासन थयुं रे लो, शील प्रभाव सनूर रे. .....स. 8

राजा बहु आदर करी रे लो, पहुंचाव्यो निज गेह रे; ..... स.
सब अपराध खमावीआ रे लो, व्याप्यो सुजस अछेह रे. ....स. 9

अनुक्रमे संयम आदर्यो रे लो, सार्या आतम काम रे; ..... स.
केवल लही मुगते गया रे लो, शेठ सुदर्शन स्वाम रे. .स. 10

मगध देश पाटलीपुरी रे लो, वांदे श्री मुनि भाण रे; ..... स.
अमृत धर्म संयोगथी रे लो, शिष्य **क्षमा** कल्याण रे. .....स. 11

---

96. सुबाहुकुमार की सज्झाय

हवे सुबाहुकुमार अेम विनवे, अमे लईशुं संजमभार, माडी मोरी रे;
मा में वीर प्रभुनी वाणी सांभली, तेणे में जाण्यो अथिर संसार माडी मोरी रे.
हवे हुं नहि रहुं आ संसारमां. 1

हांरे जाया तुज विना सूना मंदिर मालिया, जाया तुज विना सूनो संसार रे;
जाया मोरा रे, माणेक मोती ने मुद्रिका, कांई ऋद्धि तणो नहि पार जाया मोरा रे.
तुज विना घडीय न निसरे. 2

हांरे माजी तनधन जोबन कारमुं, कारमो कुटुंब परिवार माडी मोरी रे;
कारमा सगपणमां कुण रहे, तेथी में जाण्यो अथिर संसार माडी मोरी रे हवे हुं.3

हांरे जाया संयम पंथ घणो आकरो, जाया व्रत छे खांडानी धार, जाया मोरा रे;
बावीश परिसह जीतवा, जाया रहेवुं छे वनवास जाया मोरा रे. तुज. 4

हांरे माजी वनमां ते रहे छे मृगलां, तेनी कोण करे छे संभाल, माडी मोरी रे रे;
वन मृगनी परे चालशुं, अमे अेकलडा निरधार माडी मोरी रे,. हवे हुं. 5

हांरे जाया शियाले शीत बहु पडे, जाया उनाले लू वाय, जाया मोरा रे;
जाया वरसालो अति आकरो, कांइ घडीअे वरस सो जाय जाया मोरा रे तुज. 6

हांरे माजी नरक निगोदमां हुं भम्यो भम्यो अनंत अनंती वार माडी मोरी रे;
छेदन भेदन में सह्यां, ते कहेतां आवे न पार, माडी मोरी रे. हवे हुं. 7

हांरे जाया पांचशे पांचशे नारीओ, रुपे अप्सरा समान, जाया मोरा रे;
ऊंचा ते कुलमां उपनी, रहेवा पांचसे पांचसे महेल जाया मोरा रे. तुज. 8

हांरे माजी घरमां जो नीकले अेक नागणी, सुखे निद्रा न आवे लगार
तो पांचशे नागणीयोमां केम रहुं, मारुं मनडुं आकुळ व्याकुळ थाय माडी. हवे हुं. 9

हारें जाया आटला दिवस हुं तो जाणती, रमाडीश वहुरोना बाल जाया मोरा रे;
दिवस अटारो रे आवीयो, तुं तो ले छे संजमभार, जाया मोरा रे. तुज. 10

हांरे माजी मुसाफर आव्यो कोई परुणलो, फरी भेगो थाय न थाय, माडी मोरी रे;
अेम मानव भव पामवो दोहिलो, धर्म विना दुर्गतिमां जाय, माडी मोरी रे. हवे हुं. 11

हवे पांचशे वहुरो अेम विनवे, तेमां वडेरी करे रे जवाब, वालम मोरा रे;
स्वामी तमे तो संजम लेवा संचर्या, स्वामी अमने कवण आधार, वालम मोरा रे.
वालम विना केम रही शकुं. 12

हांरे माजी मात-पिता ने भाई बेनडी, नारी कुटुंबने परिवार, माडी मोरी रे;
अंत समय अलगा रहे, एक जिन धर्म तारणहार. माडी .हवे हुं. 13

हांरे माजी काची ते काया कारमी, सडी पडी विणसी जाय, माडी मोरी रे;
जीवडो जाय ने काया पडी रहे. मूआ पछी बाली करे राख, माडी. हवे हुं. 14

हवे धारणी माता अेम विनवे, आ पुत्र नहीं रहे आ संसार, भविकजनो रे;
अेक दिवसनुं राज भोगवी, संजम लीधुं महावीर स्वामि पास.
भविकजनो रे, सौभागी कुंवरे संजम आदर्यो. 15

तप-जप करी काया शोषवी, आराधी गया देवलोक, भविकजनो रे;
पन्नर भव पूरा करी, महाविदेह क्षेत्रमां जाशे मोक्ष. भविकजनो रे.
सौभागी कुंवरे संजम आदर्यो. 16

हांरे माजी विपाकसूत्रमां भाखीयुं, बीजा सूत्र अखंड मोझार भविकजनो रे;
प्रथम अध्ययने प्ररुपीओ, सूत्रविपाकमां अधिकार, भविकजनो रे.
सौभाग्यविजय गुरु अेम कहे. 17

गुरुजी हमारे आए है, नई रोशनी लाए है ।

97. साचा जैनत्त्व की सज्झाय

जुओ रे जुओ जैनो, केवा व्रतधारी,
केवा व्रतधारी आगे, थया नरनारी रे;
थया नरनारी तेने वंदना हमारी..... जुओ. 1

जुओ जुओ जंबुस्वामी, बाल वये बोध पामी;
तजी भोग रिद्धि जेणे, तजी आठ नारी..... जुओ. 2

गजसुकुमाल मुनि, धखे शिर पर धूणी;
अडग रह्या ते ध्याने, डग्या ना लगारी..... जुओ. 3

कोश्याना मंदिर मध्ये, रह्या मुनि स्थुलिभद्र;
वेश्या संग वासो तोये, थया ना विकारी..... जुओ. 4

सती ते राजुल नारी, जगमां न जोडी अेनी;
पतिव्रता काजे कन्या, रही ते कुंवारी. ..... जुओ. 5

जनक सुता ते सीता, बार वर्ष वनमां वीत्या;
घणुं कष्ट वेठ्युं तोये, डग्या ना लगारी ..... जुओ. 6

विजयशेठ ने विजयानारी, कच्छदेशे ब्रह्मचारी;
केवलीअे शील वखाण्युं, संयमे चित्त आण्युं..... जुओ. 7

सुदर्शनने अभयाराणीअे, उपसर्ग कीधो भारी;
शूलीनुं सिंहासन थयुं, संयमे मनडुं वाली. ..... जुओ. 8

धन्य धन्य नरनारी, अेवी दृढ टेक धारी;
जीवन सुधार्युं जेणे, पाम्या भव पारी..... जुओ. 9

अेवुं जाणी सुज्ञजनो, अेवा उत्तम आप बनो;
वीरविजय धर्म प्रेमे, दीअे गति सारी. .....जुओ. 10

98. श्री झांझरिया मुनि

झांझरीया मुनिवर जग जयो, ब्रह्मचारी भगवान, मेरे लाल
गौचरी वहोरण निकल्या, पहोंच्या शेठ मकान, मेरे लाल ....।।1।।

शेठाणी सत्कारथी लावे, मोदकना थाल, मेरे लाल
रुप पुरंदर देखीने, उपनी मोह झंझाल, मेरे लाल .... ।।2।।

लघुवयमां आ कष्टथी, केम दहो छो देह, मेरे लाल
प्रेमे पधारो साहिबा, शोभावो अम गेह, मेरे लाल ..... ।।3।।

अमभाग्ये तमे सापड्या, निर्भय विलसो भोग, मेरे लाल
मधुकर मालती ज्युं, सदा सकल संजोग, मेरे लाल ... ।।4।।

साधु सन्मुख जुवे नहीं, नारी करे मनोहार, मेरे लाल
शाम-दाम उपचारथी, न चल्यो महाव्रत धार, मेरे लाल .... ।।5।।

प्रेम विलुद्धि पद्मणी, रुठी महा विकराल, मेरे लाल
मुनि पगमां धर्यु झींझरु, जूठी दीधी छे आल, मेरे लाल।।6।।

राजा निरखे गोखमां, जाणे मुनि निर्दोष, मेरे लाल
आवी प्रणमे भूपति, मुनिवर पहोच्यां मोक्ष, मेरे लाल ..... ।।7।।

अेहवा मुनिवर वंदता, जीव पामे विश्राम, मेरे लाल
मुजने होजो भवोभवे, **'धर्मरत्न'** परिणाम, मेरे लाल .. ।।8।।

99. मेघकुमार

धारीणी मनावे रे मेघ कुमारनेरे तूं मुज एकज पुत्र,
तुज विण जायारे सुना मंदिर मालीयारे,
राखो राखो घरतणा सूत्र, धारीणी मनावे रे ..... ।।धृ।।

तूजने परणावुं रे आठ कुमारीका रे, सुंदर अति सुकुमाल, मलपती चाले रे जेम वन हाथीणीरे, नयण वयण सुविशाल, धारीणी.।।1।।

मुज मन आशारे पुत्र हती घणीरे, रमाडीश वहुना रे बाल,
दैव अटारो देखी नवी शक्यो रे, उपायो अेहजंजाल धारीणी..।।2।।

धन कन कंचन रे ऋद्धि घणीय छे रे, भोगवो भोगसंसार,
छती ऋद्धि विलासोरे जाया घर आपणेरे, पछी लेजो संयमभार धारीणी....।।3।।

मेघकुमारे माता प्रत्ये बुझवीरे, दीक्षा लीधी वीरजीनी पास,
प्रीतीविमल ऐणी पेरे, उच्चरेरे, पोहोत्या मारा मनडानी आस, धारीणी.।।4।।

100. प्रतिक्रमण की सज्झाय

कर पडिक्कमणुं भावशुंजी, समभावे चित्त लाय;
अविधि दोष जो सेवशोजी, तो नहि पातक जाय.
चेतनजी ! अेम केम तरशोजी. 1

सामायिकमां सामटीजी, निद्रा नयणे भराय;
विकथा करतां पारकीजी, अति उल्लसित मन थाय. चेतनजी. 2

काउस्सगमां उभा थका, करतां दुखे रे पाय;
नाटक प्रेक्षण जोवतांजी, उभा रयणी जाय. ..... चेतनजी. 3

संवरमां मन नवि रुचेजी, आश्रवमां हुंशियार;
सूत्र सुणे नहि शुभ मनेजी, वात सुणे धरी प्यार. चेतनजी. 4

साधुजनथी वेगलोजी, नीचशुं धारे नेह;
कपट करे क्रोडो गमेजी, धर्ममां धुजे देह. ..... चेतनजी. 5

धर्मनी वेला नवि दीअेजी, फूटी कोडी रे अेक;
राजाअे रुंध्यो थकोजी, खूणे गणी दीअे छेक.... चेतनजी. 6

जिनपूजा गुरु वंदनाजी, सामायिक पच्चक्खाण;
नवकारवाली नवि रुचेजी, करे मन आर्तध्यान. ..... चेतनजी. 7

क्षमा दया मन आणीयेजी, करीये व्रत पच्चक्खाण;
धरीये मनमांहि सदाजी, धर्म-शुक्ल दोय ध्यान.. चेतनजी. 8

शुद्ध मने आराधशोजी, जो गुरुना पदपद्म;
रुपविजय कहे पामशोजी, तो सुर शिवसुख सद्म. ... चेतनजी. 9

101. मन की सज्झाय

भूल्यो मन भमरा तुं क्यां भम्यो, भमीयो दिवस ने रात
मायानो बांध्यो प्राणीओ, भमे परिमल जात.....भूल्यो. 1

कुंभ काचो रे काया कारमी, तेहनो करो रे जतन
विणसतां वार लागे नही, निर्मल राखो रे मन... ...भूल्यो. 2

केना छोरु ने केना वाछरुं, केना मायने बाप
अंत काले जावुं छे अेकलुं, साथे पुण्यने पाप... .....भूल्यो. 3

जीवने आशा डुंगर जेवडी, मरवुं पगलां रे हेठ
धन संची संची रे कांइ, करो करो दैवनी वेठ... ...भूल्यो. 4

धंधो करी धन मेलव्युं, लाख उपर क्रोड
मरणनी वेला रे मानवी, लीधो कंदोरो छोड... .....भूल्यो. 5

मूरख कहे धन माहरुं, धोखे धान न खाय
वस्त्र विना जई पोढवुं, लखपति लाकडा माय... ...भूल्यो. 6

भवसागर दुःख जले भर्यो, तरवो छे रे तेह
वधमां भय सबलो थयो, कर्म वायरो ने मेह.....भूल्यो. 7

लखपति छत्रपति सवि गया, गया लाख बे लाख
गर्व करी गोखे बेसता, सर्व बली थया राख... .....भूल्यो. 8

धमण धखंती रे रही गई, बुझ गई लाल अंगार
एरणको ठबको मीट्यो, उठ चाल्यो रे लुहार... .....भूल्यो. 9

उलट मारग चालता, जावु पेले रे पार
आगल हाट न वाणीयो, शंबल लेजो रे साथ... . भूल्यो. 10

परदेश परदेशमां, कुणशुं करो रे सनेह
आया कागल उठ चल्या, न गणे आंधीने मेह... .....भूल्यो. 11

केई चाल्या रे केई चालशे, केई चालणहार
केई बेठा रे बूढा बापडा, जाये नरक मोझार... .. भूल्यो. 12

जे घर नोबत वागती, थाता छत्रीसें राग
खंडेर थई खाली पड्या, बेसण लाग्या छे काग... ... भूल्यो. 13

भमरो आव्यो कमलमां, लेवा परिमल पूर
कमल मींचाये मांहे रह्यो, जब आथमते सूर..... भूल्यो. 14

रातनो भूल्यो रे मानवी, दिवसे मारग आय
दिवसनो भूल्यो रे मानवी, फिर फिर गोथा खाय... ... भूल्यो. 15

सद्गुरु कहे वस्तु वोरीये, जे कांई आवे रे साथ
आपणो लाभ उगारीये, लेखुं साहिब हाथ..... भूल्यो. 16

102. मुरख की सज्झाय

ज्ञान कदि नवि थाय, मूरखने ज्ञान कदि नवि थाय;
कहेतां पोतानुं पण जाय. मूरखने. 1

श्वान होय ते गंगाजलमां, सो वेला जो न्हाय;
अडसठ तीरथ करी आवे पण, श्वानपणुं नवि जाय.मूरखने. 2
क्रूरसर्प पयपान करंता, संतपणुं नवि थाय;
कस्तूरीनुं खातर जो कीजे, वास लसण नवि जाय. ... मूरखने. 3
वर्षासमे सुग्री ते पक्षी, कपि उपदेश कराय;
ते कपिने उपदेश न लाग्यो, सुग्री गृह विखराय .. मूरखने. 4
नदीमांहे निशदिन रहे पण, पाषाणपणुं नवि जाय;
लोहधातुं टंकण जो लागे, अग्नि तुरंत झराय..... मुरखने. 5
कागकंठमां मुक्ताफलनी, माला ते न धराय;
चंदनचर्चित अंग करीजे, गर्दभ गाय न थाय. .... मूरखने. 6
सिंहचर्म कोइ शियाल सुतने, धारे वेश बनाय;
शियालसुत पण सिंह न होवे, शियालपणुं नवि जाय. मूरखने. 7
ते माटे मूरखथी अलगा, रहे ते सुखीया थाय;
उखरभूमिमां बीज न उगे, उलटुं बीज ते जाय... मूरखने. 8
समकितधारी संग करीजे, भवभय भीति मीटाय;
मयाविजय सद्गुरु सेवाथी, बोधिबीज सुख पाय..... मूरखने. 9

103. सर्वार्थि सिद्धविमान की सज्झाय

सांभलजो मुनि संयमरागे, उपशम श्रेणीये चडिया रे
शातावेदनी बंध करीने, श्रेणीथकी ते पडिया रे..... सांभलजो. 1
भाखे भगवई छट्ठ तप बाकी, सात लव आयु ओछे रे
सर्वारथ सिद्धे पहोंता मुनिवर, पूर्णायु नवि छोछे रे... सांभलजो. 2

शय्यामां पोढ्या नित्य रहेवे, शिवमारग विसामो रे
निर्मल अवधि नाणे जाणे, केवली मन परिणामो रे... सांभलजो. 3

ते शय्या उपर चंदरवो, झुमखडे छे मोती रे
वचलुं मोती चोसठ मणनुं, झगमग जालिम ज्योति रे. सांभलजो. 4

बत्रीस मणना चउपांखडीये, सोलमणां अड सुणीया रे
आठ मणा सोलस मुक्ताफल, तिम बत्रीस चउ मणीया रे... सांभलजो. 5

दो मण केरा चोसठ मोती, अेकसो अडवीस भणीया रे
दोसय ने वली त्रेपन मोती, सर्व थईने गणिया रे... सांभलजो. 6

ए सघला विचला मोतीसुं, आफले वायु प्रयोगे रे
राग-रागिणी नाटक प्रगटे, लवसत्तम सुर भोगे रे.... सांभलजो. 7

भूख-तरस छीपे रस लीने, सुरसागर तेत्रीस रे
शाता लहेरमां क्षण-क्षण समरे, **वीरविजय** जगदीश रे. सांभलजो. 8

104. चौथे पापस्थानक की सज्झाय

पापस्थानक चोथुं वर्जीए, दुर्गति मूल अबंभ,
जग सवि मुंझ्यो छे एहमां, छांडे तेह अचंभ. 1

रुडुं लागे रे ए धुरे, परिणामे अति अति क्रूर;
फल किंपाकनी सारिखुं, वरजे सज्जन दूर. 2

अधर विद्रुम स्मित फूलडां, कुच फल कठिन विशाल,
रामा देखी न राचीअे, ए विषवेली रसाल. 3

प्रबल ज्वलित अयपूतली, आलिंगन भलु तंत,
नरक दूवार नितंबिनी, जघन सेवन ते दुरंत. 4

दावानल गुणवन तणो, कुल मशीकूर्चक अेह,
राजधानी मोहरायनी, पातक-कानन मेह. 5

प्रभुताए हरि सारीखो, रुपे मयण अवतार,
सीताए रे रावण यथा, छांडो पर नर नार. 6

दश शिर रणमांहे रोलिया, रावण विवश अबंभ,
रामे न्याये आपणो, रोप्यो जगि जय थंभ. 7

पाप बंधाए रे अतिघणां, सकृत सकल क्षय जाय,
अब्रह्मचारीनुं चिंतव्युं, कदिय सफल नवि थाय. 8

मंत्र फले जगि जस वधे, देव करे रे सानिध,
ब्रह्मचर्य धरे जे नरा, ते पामे नवनिध. 9

शेठ सुदर्शनने टली, शूलि सिंहासन होय,
गुण गाये गगने देवता, महिमा शीलनो जोय. 10

मूल चारित्रनुं ए भलुं, समकित वृद्धि निदान,
शील सलिल धरे जिके, तस हुए **सुजश** वखाण.....11

105. कर्म की सज्झाय

केई केई नाच नचावे करमचंद, केई केई नाच नचावे;
ए अचरिज मन पावे करमचंद, केई केई नाच नचावे. 1

आदि जिनेश्वर अंतरयामी, हुआ आदिना कर्ता;
तुम पसाये आहारने काजे, रह्या वरस लगे फिरता. 2

सगरचक्री साठहजार, सुत पुत्र महापराक्रमी;
तुम पसाये एकी साथे, हुवा पलकमां भस्मी. 3

अतुलबली महावीर सरिखा, अंगुठे मेरु कंपाव्यो;
तुम पसाये अनार्यदेशे, संगम चालीने आव्यो. 4
दधिवाहन राजानी बेटी, चंदनबाला कहीये;
तुम पसाये राजग्रहीके, चौटे ये मोल वेचाई. 5
हरिश्चंद्र राजा तारा राणी, पुत्र लईने निसर्या;
सुभंगी कुलकी करी चाकरी, पाणी वहीने रह्या 6
इत्यादिक मोटा पुरुषोत्तम, करणी करी ठाम पाया;
आनंदघन इम बोले कर्मथी, मेरा पार न आया. 7

106. नरकदु:ख की सज्झाय

सुण गोयमजी, वीर पयंपे नरक तणी दु:ख वारता;
परनारी संगत जे करता, वली पाप थकी पण नही डरतां,
जमरायनी शंका नवि धरतां. सुण. 1
हे श्रोताजनो, नरकनां दु:ख सुणता हैया थरथरे;
हे गुणवंता, वीरवाणी सांभली धरम खजानो भरो,
लोहनी पूतलीने तपावे छे, अति अग्निमय बनावे छे;
तस आलिंगन देवरावे छे, सुण. 2
पांचसो जोजन उछाले छे, पछी पटकी भोंय पछाडे छे;
पछी तेहना देहने बाले छे. सुण. 3
श्वान थईने तेहने करडे छे. झाली परमाधामी मरडे छे;
वली तेहनी पाछल दोडे छे. सुण. 4
मृगनी जेम पासमां पकडे छे, करवतथी तेहने फाडे छे;
वली पकडी पकडी भमावे छे. सुण. 5

वली तेहने शूलीए चडावे छे, कान नाक पण तेहना कापे छे;
वली भरसाडमां तेहने भारे छे. सुण. 6

वली खाल उतारी जलावे छे, ताता तेलमां पण घाले छे;
विरुआ विपाकोने देखाडे छे. सुण. 7

मांस कापीने खवडावे छे, एम जीव घणा दुःख पावे छे;
अति त्रासमां समय वितावे छे. सुण. 8

वली शरीरमां खाल मिलावे छे, एम परमाधामी दुःख देखाडे छे;
शुभवीरनी वाणीथी शीतळ थावे छे. सुण. 9

107. अनित्य भावना

(राग गझल)

विनाशी आ जगत जाणो, नथी स्थिरवास वसवानुं,
नहीं कंइ साथमां आवे, सुंदर ए भावना भावो ..... ।।1।।

जनमियां जे ते मरनारां, उग्यां जे छे ते खरनारा,
सवारे जे न ते सांजे, सुंदर ए भावना भावो ..... ।।2।।

मकानो महेल जे दीसे, बधां दिन एक पडी जाशे,
जले स्थल स्थल त्यां जल होशे, सुंदर ए भावना भावो .... ।।3।।

सायंकाले जे तरुवर पर, बेठेलो पक्षीगण जोयो,
सवारे ते न त्यां दिसे, सुंदर ए भावना भावो ..... ।।4।।

पवन जेम वादला वेरे, शरीर तेम कालथी नासे,
धन सुत धान्य दारा पण, सुंदर ए भावना भावो ..... ।।5।।

रह्या नहीं राव ने राणा, मूरख शाणा अने काणा,
वली बे आंख धरनारा, सुंदर ए भावना भावो ..... ।।6।।

रह्या छे क्यां श्रीतीर्थंकर, वली षट्खंडना धर्त्ता,
त्रिखंडे राज्य करनारा, सुंदर ए भावना भावो ..... ।।7।।

पथ्थर जेवां शरीर जेनां, पलकमां फाटी ते पडियां,
अमारुं शुं गजुं त्यां छे ? सुंदर ए भावना भावो ..... ।।8।।

अनित्य जे भावना भावे, मुसीबतमां न मुंझावे,
कमलवत् चित्त विकसावे, सुंदर ए भावना भावो ..... ।।9।।

जेणे ए न भावना परखी, दशा तेनी पशु सरखी,
नहीं त्यां आत्म **लब्धि** छे, सुंदर ए भावना भावो ..... ।।10।।

108. अशरण भावना

(राग गझल)

शरण नहीं कोइ सृष्टिमां, शरण विन भाई ? मरवुं छे,
शरण श्रीजिननुं साचुं, सुंदर ए भावना भावो ..... ।।1।।

नहीं माता अने भ्राता, नहीं सुत तातनुं शरणुं,
नहीं तिरिया तरावे छे, सुंदर ए भावना भावो ..... ।।2।।

हिरणना झुंडमां कोइ, वरु आवीने जो पकडे,
नथी त्यां कोई बचवानुं, सुंदर ए भावना भावो ..... ।।3।।

झुंड जोतुं रहे भाई ! तेने ते जेने लइ जाइ,
तमोने काल तिम हरशे, सुंदर ए भावना भावो ..... ।।4।।

चकलीओ चें चें करती रही, बच्युं एक भट्ठीमां पडियुं,
न कोइ सहायता आपे, सुंदर ए भावना भावो ..... ।।5।।

काल अग्निमां तिम पडतां, सज्जन टोलुं मले छे त्यां,
सगुं कोइ ना बजा शकतुं, सुंदर ए भावना भावो ..... ।।6।।
अनाथी रोगथी घेर्या, नहीं कोइए शरण आप्युं,
शरण श्रीधर्मनुं वरिया, सुंदर ए भावना भावो ..... ।।7।।
शरण त्यो श्री अरिहंतनुं, वली सिद्ध साधुनुं शरणुं,
जिनेश्वर धर्मने धारो, सुंदर ए भावना भावो ..... ।।8।।
अशरण भावना गातां, धरमनी वासना जागे,
कमल सुगंधवत् व्यापे, सुंदर ए भावना भावो ..... ।।9।।
नमुं छुं हुं श्रीजिनवरने, जेणे मुजने शरण आप्युं,
प्रकाशी **आत्म** लब्धि छे, सुंदर ए भावना भावो ..... ।।10।।

109. ज्ञान

धन धन श्री अरिहंतनेरे, जेणे ओलखाव्यो धर्म सलुणा
ते प्रभुनी पूजा विना रे, जनम गुमाव्यो फोक सलुणा ..... ।।धृ।।
जेम जेम अरिहा सेवीयेरे, तेम तेमप्रगटे ज्ञान सलूणा,
ज्ञानीना बहुमानथी रे, ज्ञानतणो बहुमान सलुणा ..... ।।1।।
ज्ञान विना आडंबरीरे, पामे जगअपमान सलुणा,
कपट क्रिया जनरंजनीरे, मौन वृत्ति बगध्यान सलुणा ..... ।।2।।
मत्सरी खरमुख उज्ज्वलेरे, करता उग्रविहार सलुणा
पाप श्रमण करी दाखीयारे, उत्तराध्ययन मोझार सलुणा ।।3।।
ज्ञान विना मुक्ति नहीं रे, किरीया ज्ञानीनी पास सलुणा,
श्री **शुभवीरनी** वाणीये रे, शिवकमला घर वास सलुणा ..... ।।4।।

110. श्री ज्ञानपंचमी

श्री गुरु चरण पसाउले रे लोल, पंचमीनो महिमांय आतमा,
विवरीने कहेशुं अमे रे लोल, पातक मल धोवाय आतमा
पंचमी तप प्रेमे करो रे लोल...।।1।।

मन शुद्दे आराधीए रें लोल, तूटे कर्म निदान, आतमा
ईह भव सुख पामे घणो रे लोल, परभव देव विमान आतमा
पंचमी तप...।।2।।

सकल शास्त्र रच्यां थकी रे लोल, गणधर थया विख्यात आतमा
ज्ञान गुणे करी जाणता रे लोल, स्वर्ग नरकनी वात आतमा
पंचमी तप...।।3।।

जे गुरु ज्ञाने दीपता रे लोल, तरीया ते संसार, आतमा
ज्ञानवंतने सहु नमे रे लोल, उतारे भवपार आतमा
पंचमी तप...।।4।।

अजवाली पक्ष पंचमी रे लोल, करो उपवास जगदीश आतमा
ॐ ह्रीँ नमो नाणस्स गणणुं गणो रे लोल, नवकारवाली वीश आतमा
पंचमी तप...।।5।।

पांच वरस अेम कीजीए रे लोल, उपर वली पांच मास आतमा
यथाशक्ति उजवो रे लोल, जिम थाय मनने उल्लास आतमा
पंचमी तप...।।6।।

वरदत्त गुणमंजरी रे लोल, तप करी निर्मल थाय आतमा
श्री कीर्तिविजय उवज्झायनो रे लोल, `कान्तिविजय' गुम गाय आतमा
पंचमी तप...।।7।।

111. त्रिशलानंदन की दुकान

तुमे माल खरीदोरे त्रिशला नंदन की है खुली दुकान ..... ।।धृ।।
सुत्र रुपसे भरी पेटीया मुनिवर बन्या वेपारी,
तरहतरहका माल बतावे, अपना मन है राजी,
तुम माल ... ।।1।।

जिनवाणीको गज है भारी, जरा फरक नही जाण,
नाप नापकर देवे सदगुरु, करे मन अपना राजी
तुमे माल ... ।।2।।

जीव दयाकी मलमल भारी, शुद्ध मन मिसरु लिजे,
डबल झीण समता लद्धे, थारे आवेसो माल लीजे
तुमे माल ... ।।3।।

तपस्या का बंदा गल भारी, साडी ले संतोष,
एसो वेपार करेसो जिनवरसे, चेतन पायो मोक्ष
तुमे ... ।।4।।

खुशी होय तो सौदा करना, नही जबरीका काम,
जो चाहे सो माल ले जावे, मै मांगू नही दाम
तुमे ... ।।5।।

माल बिके है थोडो जिनशु, खरंच पूरे नही चाले,
भर्या खजाना कबहुं न खूटे, सदगुरु दियो हाथजी
तुमे ... ।।6।।

संवत उन्नीसो साल सात, चालीस मुंबई चोमासु,
मुनिमोहन उपदेश सुणावे, सदगुरु दियो हाथजी,
तुमे ... ।।7।।

112. अमृतवेलि की छोटी सज्झाय

चेतन ! ज्ञान अजुआलजे, टालजे मोह संताप रे,
दुरित निज संचित गालजे, पालजे आदर्युं आप रे,
चेतन ! ज्ञान आजुआलजे.....।।1।।

खल तणी संगति परिहरे, मत करे कोइस्यूं क्रोध रे,
शुद्ध सिद्धांत संभारजे, धारजे मति प्रतिबोध रे. चेतन ! ...।।2।।

हरख मत आणजे तूसव्यो, दूहव्यो मत धरे खेद रे,
राग द्वेषादि सधि (संधे) रहे, मनि वहे चारु निर्वेद रे. चेतन ! ...।।3।।

प्रथम उपकार मत अवगणे, तूं गणे गुरु गुण शुंद्ध रे,
जिहां तिहां मत फरे फूलतो, झूलतो मम रहे मुद्ध रे. चेतन ! ।।4।।

समकित-राग चित्त रंजजे, अंजजे नेत्र विवेक रे,
चित्त ममकार मत लावजे, भावजे आतम एक रे..चेतन ! ...।।5।।

गारव-पंकमां मम लुले, मत भले मच्छर भाव रे,
प्रीति म त्यजे गुणवंतनी, संतनी पंतिमां आदि रे. चेतन ! ..।।6।।

बाह्य क्रिया कपट तुं मत करे, परिहरे आर्त्तध्यान रे,
मीठडो वदने मने मेलडो, इम किम तुं शुभज्ञान रे ? चेतन ! ...।।7।।

चालतो आपछंदे रखे, मत भळे पुंठनो मंस रे,
कथन गुरुनुं सदा भावजे, आप शोभावजे वंश रे. चेतन ! ..।।8।।

हठ पड्यो बोल मत ताणजे, आपजे चित्तमां सान रे,
विनयथी दु:ख नवि बांधस्ये, वाधस्ये जगतमां मान रे. चेतन ! .।।9।।

कोकवारे तुझ भोलव्यें, ओलवे धर्मनो पंथ रे,
गुरु-वचन-दीप तो करि धरे, अनुसरे प्रथम निर्ग्रंथ रे. चेतन !।।10।।

धारजे ध्याननी धारणा, अमृतरस पारणा प्राय रे,
आलस अंगनुं परिहरे, तप करी भूषजे काय रे. चेतन ! ....।।11।।

कलि-चरित देखि मत भडकजे, अडकजे मत शुभ योग रे,
सुखडी नवम रस पावना, भावना आणजे भोग रे. चेतन !।।12।।

लोकभयथी मन गोपवे, रोपवें तूं महादोष रे,
अवर सुकृत कीधा विना, तुझ दिन जंति शुभ शोषरे रे. चेतन !.।।13।।

लोक सन्नावमां चतुर तुं, कांइ अछतुं नवि बोल रे,
इम तुझ मुगतिस्युं बाझस्ये, वासस्यें जिम ग्रही.
(गृही) मोल रे. चेतन !।।14।।

ज्ञान-दर्शन-चरण गुण तणा, अति घणो धरे प्रतिबंध रे,
तन मन वचन साचो रहे, तूं वहे साचली संध रे. चेतन ! ...।।15।।

पोपट जिम पड्यो पांजरे, मनि धरे सबल संताप रे,
तिम पडे मत प्रतिबंध तूं, संधि संभालजे आप रे. चेतन !।।16।।

मन रमाडे शुभ ग्रंथमां, मत भमाडे भ्रम-पाश रे,
अनुभव रसवती चाखजे, राखजे सुगुरुनी आश रे. चेतन ! ...।।17।।

आप सम सकल जग लेखवे, शीखवे लोकने तत्त्व रे,
मार्ग कहेतो मत हारजे, धारजे तूं दृढ सत्त्व रे. चेतन !।।18।।

श्री नयविजय गुरु सीसनी, सीखडी अमृतवेल रे,
सांभली जेह अे अनुसरे, ते लहे जस रंगरेल रे. चेतन ! ...।।19।।

113. मन की सज्झाय

क्या करुं मन स्थिर नहि रहेता,
अधर फिरे मन मेरा रे... .....मै...
इस मनकुं मैने बेर बेर समजाया,
समज समज मन मेरा, ... मै... ।।1।।
बैठ कहु तो उठ चलता है, मन दोरे मन धीरा,
पाउ पलक मन स्थिर नही रहेता, कुणपति आरामन तेरा.मै... ।।2।।
कुड कपट महा विष भरीयो अे, परनारी संग हेरा,
भवनो भव जीव हाल भटकतो, फोगट फेरा फरीयो.मै... ।।3।।
कुटुंब कबीला माल खजाना, उसमे कुछ नहि तेरा,
सांज भइ जब उठ चलेंगे, तब जंगल होयगा डेरा ... .मै... ।।4।।
कहत आनंदधन मन समजाया, मन कायर मन शूरा,
मन का खेल अजर का प्याला, पीवे सो पीवणहार.मै... ।।5।।

114. श्री पंचम काल की सज्झाय

पंचम काले प्राणीया करे केवुं तोफान हो हो लाल,
उच्च कुलने पामीने तने धर्मनुं नहि भान हो,
जुओ जुओ कर्म विटबंनारे... ..... ।।1।।
मोजशोखना काममां मने फरवानी घणी टेव हो,
देवगुरु रुचे नहिं न करे प्रभुनी सेव रे हो... ..... जुओ... ।।2।।
घरमां चीज लावे नहि बहार उडावे माल हो,
ठाठ ठठारो वधी गयो पछे थाय केवा हाल हो...जुओ... ।।3।।
चाय विना नथी चालतुं भले थाय खुवार हो,
उंधे मारगे चालता, ना आवे शरम लगार हो... ... जुओ... ।।4।।

लाडी वाडीने गाडीमां, पैसा खरचे लाख लाख हो,
धर्म उदय आवे नहि भले काया थाय राख... . जुओ... ।।5।।

देव दर्शन नथी सूजता लेवुं नहि गुरुनुं नाम हो,
विषय तृष्णानी लहेरमां मारे नथी बीजानुं काम हो...जुओ... ।।6।।

धर्मनी मर्यादा लोपीने करे आघा पाछा काम हो,
शास्त्रनुं नाम उत्थापीने राखे पोतानुं नाम हो...जुओ... ।।7।।

एवा पण भवि जीवने, अंते धर्म आधार थाय हो,
ज्ञान विमलसूरि अेम विनवे भवजल पार उतार हो...जुओ... ।।8।।

115. शाश्वत भाव की सज्झाय

विचारी कहा विचारे रे, तेरा आगम आगम अथाह,
बिन आधेय आधा नहि रे, बिन आधेय आधार
मुरगी बिना इंडा नहि रे, बिन मुरग की नार. विचारी... ।।1।।

भुरटा बीज बिना नहि रे, बीज न भुरटा टार,
निशी बिन दिन उगे नहि प्यारे, दिन बिन निशी निरधार.विचारी.।।2।।

सिद्ध संसारी बिनु नहि रे, सिद्ध बिना संसार,
करता बिन करणी नहि प्यारे, बिन करणी करतार.विचारी..।।3।।

जन्म मरण विना नहि रे, मरण न जन्म विचार,
दिपक बिनु परकाशता नहि त्यारे, बिन दीपक परकाश.विचारी..।।4।।

आनंदघन प्रभु वचन की रे, परिणती धरी रुचिवंत,
शाश्वत भाव विचारो प्यारे, खेलो अनादि अनंत. विचारी.।।5।।

116. बुढापे की सज्झाय

जोइतुं नथी जोइतुं नथी जोइतुं नथी रे, अल्या जीवडा,
घडपण मारे जोइतुं नथी...
हाथमां छे लाकडी, पगमां छे चाखडी, दांत विना मोढुं साव बोखुं,
..... अल्या ।।1।।

सुवा तुटेल छे खाटली, थुकवा टूटेल छे माटली,
खांसी आवे तो थाय थुं थुं... ..... अल्या ।।2।।
कर रह्या छे केटे, पग रह्या छे बापजी,
शरीर कंपेने पग धुजे ..... अल्या ।।3।।

चोराशी लाखना चौटा फरीने, मनुष्य भवनो देह धारीने,
हारीना जइश तुं आज ..... अल्या ।।4।।

वहुओ कहे छे फूटो मरतो नथी डोकरो,
वहुओ कहे छे फूटी मरती नथी डोकरी,
मरे तो घर थाय चोकखुं ..... अल्या ।।5।।

वीर विजयजी अेणी परे बोले, नहि कोइ घडपण सरीखो तोले,
रत्न चिंतामणी आव्यो हाथ ..... अल्या ।।6।।

117. पैसा की सज्झाय

पैसा पैसा पैसा तारी वात लागे प्यारी रे,
रात दिवस तो पैसाने माटे भटके नरने नारी रे. पैसा... ।।1।।

भणवुं गणवुं पैसा माटे पैसो घेबर धारी रे,
पैसानी पुजारी दुनिया पैसो नाच नाचरे रे. .....पैसा... ।।2।।

पैसाथी परमेश्वर नाना पैसा देव वेचावे रे,
पैसाथी बालुडा छाना पैसे मोटी यारी रे. .....पैसा... ।।3।।
हिंसा चोरी पैसा माटे पैसो सर्वे व्हालु रे,
आजीजी पैसाने माटे वेण बोलावे कालु रे. .....पैसा... ।।4।।
पैसा माटे नोकर रहेवुं पैसा माटे शेठो रे,
पैसा माटे राजा रैयत, पैसा माटे वेठो रे.....पैसा... ।।5।।
पैसा आगळ गुरु नकामा, पैसा माटे दोहे रे,
पैसा माटे गांडो घेलो, पैसा माथुं फोडे रे. .....पैसा... ।।6।।
पैसाथी व्हाला छे बापा, पैसा माटे छापा रे,
पैसाना लोभे छे टंटा, युद्धे कापं कापा रे.....पैसा... ।।7।।
पैसाथी जे नर अलगा रहेशे, ते नर साचा त्यागी रे,
श्री शुभवीर निरलोभीजन मुनिवर छे वैरागी रे. .....पैसा... ।।8।।

118. निंदक की सज्झाय

निंदक तुं मत मरजे रे, मेरी निंदा करेगा कौन,
निंदक नेडो राखजो रे, आंगण कोट चणाय।
विणसाबु पाणी विण मेरो, कर्म मैल कट जाय.. निंदक ।।1।।
भरी सभामे निंदक बेठो, चित्त निंदा मे जाय,
ज्ञान ध्यान तो कछु नहि जाने, कुबद हिया के मांय.. निंदक ।।2।।
मस्तक मैल उतारता है, दे दे हाथे जोर,
निंदक उतारे जीभसु कांइ, जयुं रळियारो ढोर.. निंदक ।।3।।
धोबी धोवे लुगडा रे, निंदक धोवे मैल,
भार हमारा ले लीयाजी कांइ, ज्युं वणझारा बैल.. ... निंदक ।।4।।
निंदक तुं मर जावसी रे, ज्युं पाणी मे लुण,
आनंदघनकी के शीखडी रे, दुजो निंदा करेगा कौन..निंदक ।।5।।

119. वैराग्य की सज्झाय

मान सरोवर सूनां छोडया, छोडया दाणा पाणी,
जिसको अपनां मान रह्या था, वो सब हो गये विगानी
अरे ओ... ।।1।।

राज पाट सब छोड गये राजा, कुछ न ले गइ राणी,
वैरी था वो भी गया एकला, रह गयी लीखी कहाणी...अरे ओ... ।।2।।

मां और बाप सुता सुत रोवे, रोवे नारीनी वाणी,
सवेरे पक्षी हुअे उडनकुं, दे गये आनाकानी...अरे ओ... ।।3।।

पत्ते जड हुअे फुल कलमाअे, फल की नांही नीशानी,
जग के नाते रह गये जगमे, काल ने अेक न मानी...अरे ओ... ।।4।।

पांच इन्द्रि गिन सेना मारी, जोबन का सेनानी,
काल लुटेरेने सब लुंटली, ये काया की राजधानी...अरे ओ...।।5।।

जिसने रोप्या उसने काटया, सोया नित्य की हानी,
चिडीया चुग गइ खेत पीया के, क्युं पस्तावे प्राणी..अरे ओ... ।।6।।

आनंदघन कहे सुणो भाइ साधु, सोता चादर ताणी,
अब सुन ले फिर कौन सुणावे, दुर्लभ है जिनवाणीअरे ओ...।।7।।

120. इरियावही की सज्झाय

नारी दीठी मैं अेक आवती रे, जाती न दीठी कोय रे,
जे नर तेहने आदरे, तेहने सद्गति होय रे,
चतुर नर, अे कोण नारी कहेवाय रे... ..... ।।1।।

अेकसो नवाणुं रुडा बेटडा, मोटो ते चोवीश इश रे,
नानडीया तुमे सांभलो, शत पंचोतेर इश रे ...चतुर नर०...।।2।।

जैन तणे मुखे रहे रे, पग बत्रीश कहेवाय रे,
धर्मी नर पासे वसे रे, पापी संगे कदी न जाय रे...चतुर नर०...।।3।।

आठ हाथे परिवरी रे, नारी छे देव स्वरुप रे,
मुगति रमणी घणा मेळव्या, वडा वडेरा भूप रे,चतुर नर०...।।4।।

तिहां गौतम स्वामीअे पूछीयुं, उपदेश्यु श्री वर्धमान रे,
अेक महा ऋषि पामीया, क्षणमां केवलज्ञान रे, चतुर नर०...।।5।।

अढार लाख बेटडा, उपर चोवीश हजार रे,
वळी एकसो ने वीस मूकीये, पामी जे मोक्षनुं द्वार रे,चतुर नर०...।।6।।

छ अक्षर सुंदर छे अेहना, शोधी लेजो नाम रे,
मनमां धारीने आदरो रे, आतमने हितकार रे, चतुर नर०...।।7।।

साधु श्रावक सहु आजरे, आदरे श्री अरिहंत देव रे,
मेघविजयगणि शिष्य अेम कहे, अेहनी करो घणी सेव रे,
चतुर नर०...।।8।।

121. श्री वंकचुल की सज्झाय

(कोई लो पर्वत धंधलो रे लोल-अे देशी)

जंबुद्वीपमां दीपतुं रे लाल, क्षेत्र भरत सुविशाल रे. विवेकी०
श्रीपुर नगरनो राजीओ रे लाल, विमलशा भूपाल रे, वि०
आदरजो कांई आखडी रे लाल.-अे आंकणी०....।।1।।

सुमंगला पटराणी अे रे लाल, जन्म्या युगल अमुल रे, वि०
नाम ठराव्युं दोय बालनुं रे लाल, पुष्पचूल वंकचूल रे, वि०....।।2।।

अनुक्रमे उद्धत थयो रे लाल, लोक कहे वंकचूल रे, वि०
लोक वचनथी भूपति रे लाल, काढ्यो सुत वंकचूल रे, वि०....।।3।।

पुष्पचूला धन बेनडी रे लाल, पल्लीमां गयो वंकचूल रे, वि०
पल्लीपति कियो भीलडो रे लाल, धर्म थकी प्रतिकूल रे, वि०....।।4।।

सात व्यसन सरसो रमे रे लाल, न गमे धर्मनी वात रे, वि०
वाट पाडे ने चोरी करे रे लाल, पांचसो तेणी संगात रे, वि०....।।5।।

गजपुरपति दीअे दीकरी रे लाल, राखवा नगरनुं राज रे, वि०
सिंह गुफा तीणे पालमां रे लाल, निर्भय रे भिल्ल राज रे, वि०....।।6।।

सुस्थित सद्गुरुथी तीणे रे लाल, पाम्या नियम ते चार रे, वि०
फल अजाण्युं मांस कागनुं रे लाल, पटराणी परिहार रे, वि०....।।7।।

सात चरण ओसर्या विना रे लाल, न देवो रीपु शिर धाय रे, वि०
अनुक्रमे चार नियमना रे लाल, पारखा लहे भिल्लराय रे, वि०..।।8।।

वंकचूले चारे नियमना रे लाल, फल भोगव्या प्रत्यक्ष रे, वि०
परभवे शिवसुख पामीयो रे लाल, आगळ लेशे मोक्ष रे, वि०....।।9।।

कष्ट पडे जे साहसी रे लाल, न लोपे निज सीम रे, वि०
ज्ञानविमल कहे तेहनी रे लाल, जेह करे धर्म नीम रे, वि०....।।10।।

122. श्री मृगापुत्र की सज्झाय

भवि तुमे वंदो रे मृगापुत्र साधुने रे, बलभद्र रायनो नंद,
तरुणवये विलसे निजनारीशुं रे, जिम ते सुर दोगुंद. भ० ...।।1।।

अेक दिन बेठा मंदिर माळीये रे, दीठा श्री अणगार,
पाय अडवाणे रे जयणा पालता रे, षट्काय राखणहार. भ० ।।2।।

ते देखी पूरव भव सांभर्यो रे, नारी मुकी निरास,
निरमोही थई हेठो उतर्यो रे, आव्यो मायनी पास. भ० .....।।3।।

माताजी आपो रे अनुमति मुजने रे, लेशुं संजम भार,
तन धन जोबन अे सवि कारमुं रे, कारमो अे संसार. भ० ।।4।।

वच्छ वचन सांभळी धरणी ढळी रे, शीतळ करी उपचार,
चित्त वळ्युं तव अेणीपरे रे, नयणे वहे जलधार. भ० .....।।5।।

सुण मुज जाया रे अे सवि वातडी रे, तुज विण घडीय छ मास,
खिण न खमाय रे विरहो ताहरो रे, तुं मुज श्वासोश्वास. भ० ।।6।।

तुजने परणावी रे उत्तम कुळ तणी रे, सुंदर वहु सुकुमाळ,
वांक विहुणी रे किम उवेखीने रे, नाखे विरहनी जाळ. भ० ..।।7।।

सुण मुज माडी रे, में सुख भोगव्या रे, अनंत अनंतीवार,
जिमजिम सेवे रे तिम वाधे घणुं रे, अे बहुं विषय विकार. भ० ।।8।।

सुण वच्छ मारा रे संजम दोहीलुं रे, तुं सुकुमाळ शरीर,
परिषह सहेवा रे भूमि संथारवुं रे, पीवुं उनुं रे नीर. भ० .....।।9।।

माताजी सह्या रे दुःख नरके घणा रे, मुखे कह्या नवि जाय,
तोअे संजम दुःख हुं नवी गणुं रे, जेहथी शिव सुख थाय. भ०।।10।।

वच्छ तुं रोगांतके पीडीयो रे, तव कुण करशे रे सार,
सुण तुं माडी रे मृगलानी कोण लीये रे, खबर ते वन्न मोजार.भ०।।11।।

वनमृग जीम माताजी विचरशुं रे, द्यो अनुमति अेणीवार,
इम बहुवचने मनावी मातने रे, लीधो संजम भार. भ० . ।।12।।
समिति गुप्ति रूडीपरे जालवे रे, पाले शुद्धाचार,
कर्म खपावीने मुक्ते गया रे, श्री मृगापुत्र अणगार. भ० .... ।।13।।
वाचक राम कहे अे मुनि तणा रे, गुण समरो दिनरात,
धनधन जे अेहवी करणी करे रे, धन तस मात ने तात. भ० ।।14।।

123. लोभ की सज्झाय

लोभ न करीअे प्राणीया रे, लोभ बुरो संसार,
लोभ समो जगमां नहीं रे, दुर्गतिनो दातार.
भविकजन लोभ बुरो रे संसार .....।।1।।
करजो तुमे निरधार, भविकजन जीम पामो भवपार भविकजन,
अति लोभी लक्ष्मीपति रे, सागर नामे शेठ,
पुरे पयोनिधिमां पड्यो रे, जइ बेठो तस हेठ. भविक लोभ० ।।2।।
सोवन मृगना लोभथी रे, दशरथ सुत श्री राम,
सीता नारी गुमावीने रे, भमिओ ठामो ठाम. भविक लोभ० ..।।3।।
दशमा गुणठाणा लगे रे, लोभ तणुं छे जोर,
शिवपुर जातां जीवने रे, अेहिज मोटो चोर. भविक लोभ० ।।4।।
क्रोध मान माया लोभथी रे, दुर्गति पामे जीव,
परवश पडीयो बापडो रे, अहोनिश पाडे रीव. भविक लोभ० ।।5।।
परिग्रहना परिहारथी रे, लहिये शिव सुख सार,
देवदानव नरपति थइ रे, जाशो मुक्ति मोझार. भविक लोभ० ।।6।।
भाव सागर पंडित भणे रे, वीरसागर बुध शिष्य,
लोभ तणे त्यारे करी रे, पहोंचे सयळ जगीश,
भविकजन लोभ बुरो रे संसार. .....।।7।।

124. सिद्ध पद की सज्झाय

अष्ट कर्म चूरण करी रे लाल, आठ गुणे प्रसिद्ध मेरे प्यारे रे,
क्षायिक समकितना धणी रे लाल, वंदुं वंदुं अेवा सिद्ध मेरे
प्यारे रे. अष्ट० ....।।1।।
अनंतज्ञान दर्शन धरा रे लाल, चोथुं वीर्य अनंत मेरे,
अगुरु लघु सूक्ष्म कह्या रे लाल, अव्याबाध महंत मेरे. अष्ट० ....।।2।।
जेहनी काया जेहवी रे लाल, उणी त्रीजे भाग मेरे,
सिद्धशिलाथी जोयणे रे लाल, अवगाहन वीतराग मेरे. अष्ट० ....।।3।।
सादि अनंता तिहां घणां रे लाल, समय समय तेह जाय मेरे,
मंदिर मांही दीपालिका रे लाल, सघळा तेज समाय मेरे. अष्ट० ....।।4।।
मानव भवथी पामीये रे लाल, सिद्ध तणा सुख संग मेरे,
अेहनुं ध्यान सदा धरो रे लाल, अेम बोले भगवती अंग मेरे. अष्ट० ...।।5।।
श्री विजयदेव पट्टधरु रे लाल, श्री विजयसेनसूरीश मेरे,
सिद्ध तणा गुण अे कह्या रे लाल, देव दीये आशिष मेरे. अष्ट० ....।।6।।

125. मनक मुनि की सज्झाय

नमो नमो मनक महामुनि, बाळपणे व्रत लीधो रे,
प्रेमे पिताशुं रे परठीयो, मायशुं मोह न कीधो रे,
नमो नमो मनक महामुनि. (आंकणी)....।।1।।
पूरव चौद पूरव घणा, सिज्जंभव जस तातो रे,
चोथो पटधर वीरनो, महियल मांही विख्यातो रे, नमो नमो० ....।।2।।
श्री सिज्जंभव गणधरे, उदेशी निज पुत्रो रे,
सयळ सिद्धांतथी उद्धरी, दशवैकालिक सूत्रो रे, नमो नमो० ....।।3।।
मास छ अे पूरव भण्यो, दश अध्ययन रसाळो रे,
आळस अंगथी परहरी, धन धन अे मुनि बाळो रे, नमो नमो० ....।।4।।
चारित्र षट मासवाडलो, पाळी पुण्य पवित्रो रे,
स्वर्गे समाधे सधावीओ, करी जग जनने मित्रो रे, नमो नमो० ....।।5।।

जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर मरुधररत्न पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय
रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.
द्वारा मुख्यतया हिन्दी भाषा में आलेखित **230 पुस्तकों** में से
उपलब्ध एवं अवश्य पठनीय साहित्य-सूची

Sr. No.	पुस्तक का नाम	मूल्य	Sr. No.	पुस्तक का नाम	मूल्य
1.	चिंतन का अमृत-कुंभ	80/-	36.	ध्यान साधना	40/-
2.	पंच-प्रतिक्रमण (भाग-1)	100/-	37.	आग और पानी-भाग-1-2	115/-
3.	पंच-प्रतिक्रमण (भाग-2)	100/-	38.	शांत सुधारस-हिन्दी -भाग-1-2	140/-
4.	पंच-प्रतिक्रमण (भाग-3)	125/-	39.	शत्रुंजय यात्रा (तृतीय आवृत्ति)	40/-
5.	पंच-प्रतिक्रमण (भाग-4)	135/-	40.	आओ संस्कृत सीखें भाग-1	150/-
6.	आओ ! प्राकृत सीखें भाग-1	125/-	41.	आओ संस्कृत सीखें भाग-2	220/-
7.	आओ ! प्राकृत सीखें भाग-2	85/-	42.	प्रेरक-प्रवचन	80/-
8.	विविध-तपमाला	100/-	43.	दंडक सूत्र	50/-
9.	विवेकी बनो	90/-	44.	जीव विचार विवेचन	60/-
10.	बीसवी सदी के महान योगी	300/-	45.	नव तत्त्व-विवेचन	60/-
11.	परम-तत्व की साधना भाग-3	160/-	46.	कल्पसूत्र के हिन्दी प्रवचन	240/-
12.	श्रमण-क्रिया के मुख्य सूत्र	200/-	47.	पर्युषण अष्टाह्निका प्रवचन	120/-
13.	प्रवचन-वर्षा	60/-	48.	गणधर-संवाद	80/-
14.	मोक्ष-मार्ग के कदम	120/-	49.	आओ ! उपधान पौषध करें !	55/-
15.	आओ श्रावक बनें !	25/-	50.	नवपद आराधना	80/-
16.	व्यसन-मुक्ति	100/-	51.	पहला कर्मग्रंथ	100/-
17.	श्रावक जीवन दर्शन	250/-	52.	दूसरा-तीसरा कर्मग्रंथ	55/-
18.	शंका-समाधान (भाग-4)	60/-	53.	पाँचवाँ कर्मग्रंथ	100/-
19.	जैन-महाभारत	130/-	54.	संस्मरण	50/-
20.	महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा (1 से 9)	300/-	55.	भव आलोचना	10/-
21.	महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा (10 से 40)	275/-	56.	आध्यात्मिक पत्र	60/-
22.	महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा (41 से 57)	275/-	57.	आत्म-उत्थान का मार्ग-भाग-1	125/-
23.	महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा (58 से 80)	280/-	58.	आत्म-उत्थान का मार्ग-भाग-2	175/-
24.	सात वासुदेव-प्रतिवासुदेव बलदेव	50/-	59.	आत्म-उत्थान का मार्ग-भाग-3	150/-
25.	प्रतिक्रमण उपयोगी संग्रह	80/-	60.	इन्द्रिय पराजय शतक	50/-
26.	सुखी जीवन के Mile-Stone	100/-	61.	अर्हद् दिव्य-संदेश (दीक्षा-विशेषांक)	60/-
27.	समाधि मृत्यु	80/-	62.	'बेंगलोर' प्रवचन-मोती	140/-
28.	The Way of Metaphysical Life	60/-	63.	तीन भाष्य (हिन्दी विवेचन)	150/-
29.	Pearls of Preaching	60/-	64.	जीव-विचार-विवेचन	100/-
30.	New Message for a New Day	600/-	65.	श्री नमस्कार महामंत्र	180/-
31.	Celibacy	70/-	66.	महामंत्र की अनुप्रेक्षाएँ	150/-
32.	Panch Pratikraman Sootra	100/-	67.	तत्त्वार्थ-सूत्र-भाग-1	200/-
33.	श्रीपाल-रास और जीवन-चरित्र	160/-	68.	तत्त्वार्थ-सूत्र-भाग-2	200/-
34.	अमृत रस का प्याला	300/-	69.	आओ ! पर्युषण प्रतिक्रमण करें !	150/-
35.	श्रावक का गुण सौंदर्य	125/-	70.	सज्झायों का स्वाध्याय	100/-

Kamal PRINTER'S
M. 9820530299